आध्यात्मिक विकास
और
शिष्यत्व

आध्यात्मिक रूप से कैसे बढ़ें और दूसरों को बढ़ने में कैसे मदद करें

"हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ" (2 पतरस 3:18)।

"इसलिये जाकर सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

(मत्ती 28:19)

रेव. डॉ. जेरी श्मोयेर

© 2018

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मोयर डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उन्होंने 1975 में मास्टर डिग्री और 2006 में डॉक्टर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1981 से डोयलेस्टाउन, पीए में मेन स्ट्रीट बैपटिस्ट चर्च में पादरी के रूप में काम किया है। वह 6 बच्चों के पिता और 12 पोते-पोतियों के दादा/नाना है । उनकी शादी नैन्सी से हुई है, जो 34 साल से एक नर्स हैं। एक चर्च की पासबानी करने के अलावा वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, परामर्श में बहुत सक्रिय है और युवा पादरियों के लिए परामर्शदाता है। वे 2006 से भारत में पादरियों की सेवकाई में शामिल हैं। उसके साथ jerry@schmoyer.net पर संपर्क किया जा सकता है।

आध्यात्मिक विकास और शिष्यता

1. आध्यात्मिक विकास और शिष्यत्व क्या है?

क- आध्यात्मिक विकास क्या है?

ख- शिष्यत्व क्या है?

2. आध्यात्मिक विकास कैसे करें और दूसरों की मदद कैसे करें

क- आध्यात्मिक रूप से कैसे विकास करें

ख- दूसरों को कैसे चेला बनाऐ

ग- कैसे जाने कि हम या अन्य लोग आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं?

घ- आध्यात्मिक विकास की मूल बातें

3. नया जीवन शुरू हो गया है।

मैं एक मसीही कैसे बनता हूँ ? उद्धार

4. जीवन के लक्षण

मैं कैसे सुनिश्चित कर सकता हूँ कि मैं एक मसीही हूँ? उद्धार का आश्वासन

5. खाना सीखना 1

मुझे आध्यात्मिक पोषण कहाँ से मिल सकता है? बाइबल संक्षिप्त विवरण , अनुवाद, आदि।

मैं खुद को खिलाना कैसे सीख सकता हूँ? बाइबल अध्ययन कौशल

6. बात करना सीखना

मैं कैसे संवाद कर सकता हूं? प्रार्थना

7. चलना सीखना

मैं एक मसीही विश्वासी के रूप में जीवन में आगे बढ़ना कैसे सीख सकता हूँ? पवित्र आत्मा और विशवासी

8. बिना ठोकर खाए चलना

मैं हमेशा नीचे गिरे बिना जीवन में कैसे आगे बढ़ सकता हूं? प्रलोभन, पीड़ा, विश्वदृष्टि

9. धुलाई और पिटाई

क्या होता है जब मैं पाप करता हूँ? पाप क्या है? क्षमा क्या है?

10. चोट से सुरक्षा

मैं शैतान के *हमलों से कैसे सुरक्षित रह सकता हूँ? आध्यात्मिक युद्ध

11. पिता के साथ समय बिताना

मैं परमेश्वर को बेहतर तरीके से कैसे जान सकता हूँ? प्रार्थना /भक्ति , व्यक्तिगत और पारिवारिक

12. दिशा-निर्देशों का पालना करना

मैं कैसे जान सकता हूँ कि परमेश्वर मुझसे क्या चाहता है? ईश्वर की इच्छा को जानना, ईश्वर की सुनना

13. परिवार में अपनी भूमिका निभाना

मैं परिवार में दूसरों के लिए कैसे योगदान कर सकता हूं? आध्यात्मिक उपहार

14. अपने विस्तारित परिवार को जानना

मेरा चर्च क्या विश्वास करता है और क्या अभ्यास करता है?

15. दूसरों के लिए नया जीवन लाना

मैं दूसरों को उद्धार के बारे में समझने में कैसे मदद कर सकता हूँ? साक्षी देना

16. बच्चों की आध्यात्मिक देखभाल

मैं दूसरों को उद्धार के बाद बढ़ने में कैसे मदद कर सकता हूँ? शिष्तव

आध्यात्मिक विकास और शिष्यतव

जब से मैं 60 साल पहले एक मसीही बना था, तब से मेरी इच्छा आध्यात्मिक रूप से बढ़ने की रही है। मैंने अपने स्वयं के अध्ययन के साथ-साथ बाइबल कॉलेज और सेमिनरी में बाइबल के बारे में बहुत कुछ सीखा। हालाँकि, मैं केवल अपने दिमाग में ही केवल उत्तर जानना नहीं चाहता था, मैं उन्हें अपने जीवन में लागू करना चाहता था। मैं यीशु की तरह और अधिक बनना चाहता था। पौलुस की तरह, मैं यीशु को जानना चाहता था, ना कि केवल उसके बारे में जानना चाहता था (फिलिप्पियों 3:10-11)। यह मेरी इच्छा है कि मैं यीशु को अधिक व्यक्तिगत, गहरे तरीके से जानूं। यही अभी भी मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य है। मैं दूसरों की भी बढ़ने में मदद करना चाहता हूं।

एक पति, पिता और पादरी के रूप में मुझे दूसरों को भी बढ़ने में मदद करने का सौभाग्य मिला है। कभी-कभी यह एक समूह को सिखाने में किया जाता है, तो कभी आमने-सामने परामर्श और उदाहरण छोड़ने द्वारा।

आध्यात्मिक रूप से कैसे विकास करें और दूसरों को आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में कैसे मदद करें, इस बारे में इस पुस्तक को लिखना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मुझे आशा है कि यह आपके विकास में आपकी मदद कर सकती है और आपको अपने आस-पास के अन्य लोगों को प्रशिक्षित करने में भी मदद कर सकती है ताकि वे भी आपने जीवन में प्रभु के साथ चलते हुए बढ़ें।

परिचय

कुछ समय पहले मैंने एक युवक के बारे में पढ़ा था जो एक्वेरियम के लिए विदेशी मछली पकड़ने के लिए समुद्र में गोता लगाता है। उसने कहा कि सबसे लोकप्रिय एक्वेरियम मछलीयों में से एक शार्क है। उसने समझाया कि यदि आप एक बेबी शार्क को पकड़ते हैं और उसे सीमित रखते हैं, तो यह आपके द्वारा रखे गए एक्वेरियम के चारों ओर तैरने के लिए काफी छोटी ही रहेगी । शार्क छह इंच लंबी हो सकती है, फिर भी पूरी तरह से परिपक्व हो सकती है। लेकिन अगर आप उन्हें समुद्र में खुला छोड़ देते हैं, तो वे अपनी सामान्य लंबाई आठ फीट तक बढ़ जाती हैं।

कुछ मसीहीयों के साथ भी ऐसा ही होता है। वे कभी भी पूर्ण रूप से परिपक्व मसीही बनने के लिए विकसित नहीं होते हैं। बच्चे प्यारे लगते हैं लेकिन अगर वे नहीं बड़ते हैं तो इसका मतलब कुछ तो गड़बड़ है। मसीहीयों को भी अपने विश्वास में आध्यात्मिक रूप से विकसित होना है। दुर्भाग्य से, कई ऐसे हैं जो उद्धार के लिए मसीह के पास आते हैं और अनंत काल तक स्वर्ग में बिताएंगे, लेकिन इस जीवन में आध्यात्मिक रूप से विकसित नहीं होते हैं। यह पौलुस के समय में भी सच था (1 कुरिन्थियों 3:1; इब्रानियों 5:12)।

यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम और अधिक यीशु के समान बनें (इब्रानियों 5:11; 6:1; 2 पतरस 3:18)। वास्तव में, वह इसकी आज्ञा देता है (1 पतरस 2:2; 2 पतरस 3:18)। हमें यह भी चेतावनी दी गई है कि हम, विभिन्न प्रकार के पापों में गिरने के खतरे के कारण, आत्मिक शिशु नहीं बने रहना है (इफिसियों 4:14)।

हमें ना केवल आध्यात्मिक रूप से विकसित होना है, बल्कि हमें दूसरों को भी बढ़ने में मदद करने का आदेश भी दिया गया है। पादरी, अगुवा , बल्कि सभी मसीही युवा मसीहीयों को शिष्य बनाना हैं ताकि वे अपने विश्वास में परिपक्व हों। यीशु हमें ऐसा करने की आज्ञा देता है (मत्ती 28:19-20)। आरंभिक कलीसिया ने इसे किया था (2 तीमुथियुस 2:2) और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

इस पुस्तक का उद्देश्य दुगना है। पहला, यह उन लोगों की आध्यात्मिक रूप से बढ़ने के लिए मदद करना है जो इसे पढ़ते हैं । इसके अलावा, यह उन लोगों की मदद करना है जो इसे पढ़ते हैं ताकि यह जान सकें कि दूसरों को भी बढ़ने में मदद कैसे करें। मेरी इच्छा है कि यह आपकी दोनों तरह से मदद करे।

1. आध्यात्मिक विकास और शिष्यत्व क्या है?

क- आध्यात्मिक विकास क्या है?

आध्यात्मिक विकास यीशु मसीह के साथ अपने रिश्ते में अधिक परिपक्व होने की प्रक्रिया है। यह ना केवल आपने दिमाग में इसका अधिक ज्ञानी होना है बल्कि इसे आपने दैनिक जीवन में लागू करने में सक्षम होना है। यह परमेश्वर के वचन को जानने/समझने के साथ शुरू होता है: कैसे प्रार्थना करें और परमेश्वर की आज्ञाकारिता का जीवन कैसे जिएं, और दूसरों के साथ अपने विश्वास को साझा करने का क्या महत्व है । लेकिन यह सिर्फ इन चीजों के बारे में जानने से ही खत्म नहीं हो जाता। इसका मतलब है आपने रोजाना जीवन में इनका अभ्यास करना सीखना।

शायद आध्यात्मिक विकास का सबसे अच्छा सारांश है, यीशु मसीह की तरह बनना। कोई व्यक्ति जो आत्मिक रूप से बढ़ रहा है, वह मसीह के समान अधिक से अधिक सोचेगा और कार्य करेगा (1 कुरिन्थियों 11:1)।

यह आजीवन काल चलने वाली प्रक्रिया है। यह उस क्षण से शुरू होता है जब कोई व्यक्ति मसीह विश्वास में आता है और तब तक जारी रहना चाहिए जब तक कोई व्यक्ति इस जीवन के बाद मसीह की उपस्थिति में प्रवेश नहीं करता।

ख- शिष्यत्व क्या है?

एक दिन यीशु गलील की झील के किनारे किनारे जा रहा था । उसने मछुआरे पतरस और अन्द्रियास को देखा और उन्हें आने और उसके पीछे चलने के लिए आमंत्रित किया। उसने प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे ऐसा करते हैं तो वह उन्हें मनुष्यों के मछुए बना देगा (मरकुस 1:16-18)। उन्होंने अपना जीवन जीवित मशलीयों को पकड़ने और उने (मछली) मारने में व्यतीत किया था। फिर उसने उन्हें चुनौती दी कि वे उस जीवन को छोड़ दें ताकि वे उसे ले सकें जो पाप में मरा हुआ है और उसे (लोगों) को जीवित कर सकता है। बाद में उसने मत्ती को देखा और उसे भी जीवन में परिवर्तन करने और उसका अनुसरण करने के लिए बुलाया (मरकुस 2:13-14)। उनका जीवन पूरी तरह से बदल गया, वे शिष्य, यीशु के अनुयायीयों के रूप में जाने जाते हैं।

यीशु हमें भी अपने आत्म-केंद्रित जीवन को त्यागने और हम जो कुछ कहते और करते हैं उसमें उसका अनुसरण करने के लिए बुलाता हैं। उसे अभी भी उन लोगों की आवश्यकता है जो उद्धार से आगे जाकर उसके लिए प्रतिदिन अपना जीवन व्यतीत करेंगे। वह हमें शिष्य होने के लिए बुलाता है। शिष्य वह होता है जो दूसरे से सीखता है। वे अपने कार्यों और विचारों को यीशु के अनुरूप ढालते हैं। लक्ष्य यह है कि व्यक्ति जो सोचता है, कहता है और करता है उसमें उसके जैसा बनना है। आध्यात्मिक विकास, या शिष्यत्व, एक आजीवन प्रक्रिया है। हमें "अनुग्रह में बढ़ने" की आज्ञा दी गई है (2 पतरस 3:18)। हम इस जीवन में कभी भी पूर्णता प्राप्त नहीं करेंगे, लेकिन जब तक हम जीवित हैं तब तक बढ़ते और परिपक्व होते रहना हमारा लक्ष्य है।

2. खुद कैसे बढ़ें और दूसरों को बढ़ने में मदद करें

क- आध्यात्मिक रूप से कैसे बढ़ें

केवल वहीं जो आत्मिक रूप से जीवित हैं वे आत्मिक विकास का अनुभव कर सकते हैं (1 यूहन्ना 5:11-12; रोमियों 6:7)। नए जीवन में नया जन्म लिए बिना कोई भी विश्वास में नहीं बढ़ सकता। जब हम उद्धार के लिए यीशु की ओर मुड़ते हैं, तो उसका पवित्र आत्मा हमारे भीतर रहता है (2 कुरिन्थियों 5:17) और हमारे अन्दर विकास उत्पन करता है। जैसे-जैसे हम उसके मार्गदर्शन (इफिसियों 5:18) के सामने झुकते हैं और उसकी आज्ञाकारिता में जीवन व्यतीत करते हैं, हम यीशु के समान और अधिक बन जाते हैं (गलातियों 5:16-18, 24-26)। हमें पवित्र आत्मा को विचार, वचन और कार्य में मार्गदर्शन करने के लिए विश्वास के द्वारा सूज भूज से पवित्पर आत्रमा पर निर्भर होने का चयन करना चाहिए (रोमियों 6:11-14)। यह हमारे अन्दर पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह की सामर्थ है जो हमें आत्मिक रूप से बढ़ने की क्षमता देती है (2 पतरस 1:3; इफिसियों 3:20)। जब हम उसकी शक्ति पर भरोसा करते हैं और उसकी शिक्षाओं का पालन करते हैं, तो हम अधिक परिपक्वता विकसित कर सकते हैं।

आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए हामे आत्म-केन्द्रितता और पाप को कम करते हुए आपने ज्ञान और परमेश्वर के वचन की समझ को बढ़ाने की आवश्यकता है (2 पतरस 1:5-8)। इसका अर्थ है परमेश्वर में विश्वास और भरोसे में मजबूत होना। सभी के लिए आध्यात्मिक रूप से विकसित होने का कोई एक विशेष तरीका नहीं है। हर कोई अलग है और अलग-अलग तरीकों से और अलग-अलग गति से बढ़ता है। कुछ तेजी से बढ़ते हैं, अन्य धीरे-धीरे।

आपका मार्गदर्शन करने और सलाह देने में मदद करने के लिए किसी एक बजुर्ग , अधिक परिपक्व मसीही को ढूँढना आत्मिक विकास में बहुत सहायक होता है (1 कुरिन्थियों 11:1)। एक स्थानीय कलीसिया में शामिल होना (अध्याय 14) और अपने आत्मिक वरदानों का प्रयोग करना (अध्याय 13) भी महत्वपूर्ण है (इफिसियों 4:11-16)।

आध्यात्मिक रूप से बढ़ना शारीरिक रूप से बढ़ने के समान है। दोनों बच्चों के रूप में शुरू करते हैं और बढ़ने के लिए बहुत स्वस्थ भोजन की आवश्यकता रखते है। एक मसीही के लिए परमेश्वर का वचन स्वास्थ्य और विकास के लिए आवश्यक पोषण होता है। बच्चे संवाद करना और बात करना सीखना चाहते हैं। हम विश्वास में बढ़ते हैं जैसे हम प्रार्थना में परमेश्वर से जुड़ना सीखते हैं। बिना ठोकर खाए चलने में समय लगता है और मसीही जीवन जीने का अभ्यास करने में समय लगता है जबकि पाप पर विजय प्राप्त करने में भी समय और समर्पण लगता है। समानांतरों की सूची आगे और आगे बढ़ती है और इस पूरी पुस्तक में विकसित की जाएगी।

एक मसीही के रूप में विकसित होना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह आसान नहीं है। अक्सर बड़ा विकास बड़ी दर्द के द्वारा से ही होता है। जिस प्रकार शारीरिक शक्ति का निर्माण प्रतिरोध के विरुद्ध परिश्रम और द्रड़ता के द्वारा होता है, उसी प्रकार जीवन के कठिन समय में आत्मिक शक्ति का विकास होता है (याकूब 1:2-4)। इसलिए, परमेश्वर हमें उसके साथ चलने में लगे रहने के लिए प्रोत्साहित करता है (2 थिस्सलुनीकियों 3:13; गलातियों 6:9)। फिर भी, हमारे पास उसका वायदा है कि जब हम सोचने, करने और कहने में यीशु के समान बनने का प्रयास करते हैं तो वह धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से परिपक्वता तक बढ़ने में मदद करके हमारी उस इच्छा का सम्मान करेगा (फिलिप्पियों 1:6)।

ख. दूसरों को कैसे चेले बनाए

ना केवल प्रत्येक मसीही को बढ़ने के लिए है, बल्कि दूसरों को भी बढ़ने में मदद करने का आदेश दिया गया है। यह सभी विश्वासियों के लिए है, परन्तु विशेष रूप से पादरियों और अगुवों के लिए (1 कुरिन्थियों 11:1)। यीशु हमारा उदाहरण है।

यीशु ने लोगों को उद्धार के लिए , उनके पापों का पश्चाताप करने के लिए, और उद्धार के आपने मुफत उपहार को स्वीकार करने के लिए बुलाया। जिन्होंने उत्तर दिया और उसका अनुसरण किया, उन्होंने फिर शिष्यत्व के लिए चुनौती दी (मरकुस 1:17; 2:14)। उसने उनसे उसे पहले पर रखने, उसके लिए जीने, उसकी सेवा करने और उसके लिए अपनी सभी योजनाओं को त्यागने के लिए कहा। कुछ ने अभी भी अपने पेशे में काम किया है, दूसरों ने सेवा करने के लिए पेशा छोड़ दिया और समय बचा लिया । उन लोगों के इस समूह में से जो अधिक सीखना और आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहते थे, उन्होंने बाद में कुछ को अपने बारह के आंतरिक जथे का हिस्सा बनने के लिए चुना। परन्तु पहले उसने उन्हें चुनौती दी कि वे उद्धार पर ना रुकें, परन्तु आपने विश्वास में बढ़ें और यीशु के लिए जीवित रहें (2 पतरस 3:18)।

यीशु ने उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया और उसके साथ कि यह कैसे उनके जीवन पर लागू होता है। उसने उन्हें अपनी इच्छा के बजाय परमेश्वर की इच्छा को जानने और करने का महत्व दिखाया। उसने उन्हें वचन और उदाहरण के द्वारा सिखाया, और फिर उन्हें अभ्यास करने और अनुभव से सीखने के लिए भेजा (मरकुस 6:7)। सुसमाचार का प्रचार महत्वपूर्ण है, लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण है उन्हें प्रशिक्षित करना जो विश्वास करते हैं ताकि वे आध्यात्मिक रूप से विकसित हों और यीशु के लिए जीएं। इस तरह वे और भी अधिक लोगों को प्रचार करने के लिए बाहर पहुँच सकते हैं। उसने उन्हें प्रशिक्षित किया, ताकि वे बदले में दूसरों को प्रशिक्षित कर सकें (2 तीमुथियुस 2:2)। फिर यीशु के पुनरुत्थान के बाद, वे उसके द्वारा शुरू किए गए कार्य को जारी रखने के लिए तैयार थे।

किसी को अपने विश्वास में बढ़ने में मदद करने के लिए कोई तरीका सही या गलत नहीं होता है, कोई एक तरीका जो दूसरे तरीके से बेहतर होता है, । उपयोग करने के लिए कोई विशेष कार्यक्रम या योजना नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति अलग है, और परमेश्वर हर किसी के जीवन में अलग तरह से कार्य करता है। यीशु ने अपने शिष्यों के साथ समय बिताया। वह उनसे प्यार करता था, उन्हें सिखाता था, उन्हें प्रोत्साहित करता था और जो कुछ वे सीख रहे थे उसे लागू करने के लिए उन्हें कई अवसर देता था । यीशु की तरह, हम कक्षा में एक साथ कई लोगों को सिखा कर या उन्हें एक-एक करके प्रशिक्षण देकर दूसरों को शिष्य बना सकते हैं। वे हमारे जीवन को यह देखने के लिए देख सकते हैं कि हम कैसे जीते हैं और उसकी नकल करते हैं (1 कुरिन्थियों 11:1)। दूसरों को शिष्य बनाने का तरीका सीखने का सबसे अच्छा तरीका है कि यीशु के जीवन का अध्ययन करें और जो उसने किया उसे अपने जीवन में लागू करें।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप मसीही जीवन जीने के इन सभी पहलुओं को समझते हैं, इस पुस्तक को पढ़ें। इनका अभ्यास अवश्य करें और स्वयं को विकसित करते रहें। प्रत्येक अध्याय के अंत में, आपको सुझाव मिलेंगे कि कैसे उस अध्याय का उपयोग दूसरों को शिष्य बनाने के लिए किया जाए। उनका उपयोग उन लोगों के साथ करें जो आपकी तुलना में आध्यात्मिक रूप में कम परिपक्व हैं।

पतियों को इस पुस्तक को अपनी पत्नियों के साथ-साथ स्वयं के लिए भी पढ़ना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे उन्हें पढ़े और विचार किए गए क्षेत्रों में शिष्य बनाते हैं। उसे ये बातें सिखाएं और उसमें भी उसे प्रोत्साहित करें।

माता-पिता को अपने बच्चों को शिष्य बनाना चाहिए। ऐसा करने के लिए उनके पास कई वर्ष हैं, लेकिन उन्हें तब शुरू करना चाहिए जब वे बहुत कम उम्र में हों और इन चीजों को दैनिक जीवन में स्वाभाविक रूप से शामिल करना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 6:7; 11:19)। जब वे छोटे होते हैं तो आप जो कहते और करते हैं, वह एक मिसाल कायम करता है। जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं, उन्हें इस पुस्तक में बताए गए सिद्धांतों को सिखाकर आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में मदद करना शुरू करें। विशेष रूप से उद्धार पर ध्यान केंद्रित करें ताकि वे यीशु के लिए अपनी आवश्यकता को समझें और जब वह उनके दिल को छूए तो प्रतिक्रिया दे सकें। उन्हें सिखाएं कि वह कैसे प्रार्थना करें, एक धर्मी जीवन जिएं, अन्य सभी आवश्यक विषयों के बारे में और यह भी कि प्रलोभन और पर विजय प्राप्त कैसे करें,। जब वे बड़े हो जाएँ, तो उनके साथ इस पुस्तक को अध्याय दर अध्याय पढ़ें। उनके पैदा होने से पहले ही, उनके और उनके जीवन के हर पहलू के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें। उनके साथ उन बातों को साझा करें जो परमेश्वर आपको सिखा रहा है। उन्हें यह देखना चाहिए कि यीशु आप में रहता है और आपके जीवन में अंतर लाता है नहीं तो वे उसकी ओर आकर्षित नहीं होंगे और उसका अनुसरण करना चाहते हैं।

ग- कैसे जाने कि हम या अन्य लोग विकास कर रहें हैं

आध्यात्मिक विकास का मूल्यांकन करने के लिए, हम "आत्मा के फल" में अपने विकास को माप सकते हैं। आत्मा हम में इन गुणों को उत्पन्न करना चाहता है: "प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, सच्चाई, नम्रता, संयम" (गलातियों 5:22-23)। जब हम, या जिनके साथ हम काम कर रहे हैं वह , इन लक्षणों में विकसित होते हैं तो हम जान लेते हैं कि यीशु काअच्छा वर्णन करने के लिए आध्यात्मिक विकास हो रहा है।

जब मेरे बच्चे छोटे थे तो हम हर 6 महीने में उनकी वृद्धि को मापते थे। हमारे पास एक चार्ट था जिसे हम दीवार के साथ लगाते थे और उनकी ऊंचाई मापते हुए एक रेखा खींचते थे। हम देख सकते थे कि पिछली बार से वे कितने बढ़े थे। हमारे पास यह बताने के लिए कि हम या हमारे लोग आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं, मापने की कोई छड़ी नहीं है लेकिन हमारे पास परमेश्वर के वचन में कुछ मानक हैं जो विकास को मापने में हमारी मदद कर सकते हैं। मैं आपको उनमें से 10 देना चाहता हूं। देखें कि आप उनकी तुलना में कैसा कर रहे हैं और देखें कि आपका चर्च भी कैसा कर रहा है। (जेरी श्मॉयर द्वारा लिखी किताब "परमेश्व्हावर पासबानो से क्टया उम्मीद करता है " से लिया गया)

1. क्या आप पहले से कहीं ज्यादा स्वर्ग के बारे में सोचते हैं और जाना चाहते हैं? (फिलिप्पियों 1:21-24; तीतुस 2:11-13)

2. क्या आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इससे आप अधिक प्रेमभावी हो रहे हैं? (मत्ती 22:36-40; 1 यूहन्ना 4:20-21)

3. क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य के बारे में अधिक जागरूक हैं? (फिलिप्पियों 3:10; गलतियों 2:20)

4. क्या परमेश्वर के वचन का आपके जीवन में पहले से कहीं अधिक स्थान है? (1 पतरस 2:2-3; भजन संहिता 119:9-11; इब्रानियों 4:12)

5. क्या आपकी आराधना पहले की तुलना में अधिक ईश्वर-केंद्रित और बार-बार होती है? (अय्यूब 1:20-21; भजन 100)

6. क्या आप पहले की तुलना में पाप के प्रति अधिक संवेदनशील हैं? (रोमियों 12:1-2; 7:14-19)

7. क्या आप दूसरों को जल्दी माफ कर देते हैं जिन्होंने आपको चोट पहुंचाई है? (मत्ती 6:14-15; मरकुस 11:25; कुलुस्सियों 3:13)

8. क्या आप और अधिक जागरूक हो रहे हैं कि परमेश्वर कितना महान और शक्तिशाली है? (भजन 19:1; यशायाह 64:8; 2 कुरिन्थियों 12:10; फिलिप्पियों 4:13)

9. क्या आपका प्रार्थना जीवन मजबूत और अधिक व्यक्तिगत होता जा रहा है? (याकूब 5:16; यिर्मयाह 29:12-13; मत्ती 7:7-8)

10. क्या आप आपने आप को, जब वह आपसे बात करता है तो आप उसकी आवाज को बेहतर ढंग से पहचानने में सक्षम महसूस करते हैं? (यूहन्ना 14:26; 10:4, 16, 27; प्रेरितों के काम 9:11-15)

याद रखें, जब हम उसकी आत्मा को कार्य करने देते हैं (यूहन्ना 15:1-8) और हमारे जीवनों में उसका फल उत्पन्न करते हैं, तो यह परमेश्वर ही है जो हम में वृद्धि लाता है (गलातियों 5:22-26)। जैसे माता-पिता अपने बच्चे के परिपक्व होने की देखरेख करते हैं, वैसे ही हमारा स्वर्गीय पिता हमारे विकास की देखरेख करता है। उसकी प्रतिज्ञा यह है कि जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं, तब तक वह हम में कार्य करेगा ताकि हम यीशु की तरह अधिकाधिक बढ़ते रहें (फिलिप्पियों 1:6)। क्या ही बरकत है और क्या ही सौभाग्य है। परमेश्वर हमसे बढ़ने की उम्मीद करता है, लेकिन वह हमसे यह उम्मीद नहीं करता कि हम इसे स्वयं करें। जब हम उसका अनुसरण करेंगे तो वह उसे होने देगा।

घ- आध्यात्मिक विकास की मूल बातें

बाइबल शारीरिक वृद्धि और आत्मिक विकास की एकसार करती है (इब्रानियों 5:12; 1 पतरस 2:2)। हम इस पुस्तक में उसी सादृश्य का अनुसरण करेंगे। पहले हम इस बारे में बात करेंगे कि नया जीवन कैसे शुरू होता है, फिर कि, यह कैसे बढ़ता है। हम जीवन के चिन्हों को देखेंगे ताकि हमारे पास उद्धार का आश्वासन हो।

3. नया जीवन शुरू हो गया है

मैं एक मसीही कैसे बनता हूँ ?

हमारे लिए भौतिक जीवन जन्म के अनुभव से शुरू होता है। बीज बोए जाते हैं और परिणाम के रूप में फसल का बढ़ना, नया जीवन होता है। आध्यात्मिक रूप में भी यही सच है। आध्यात्मिक जीवन भी जन्म के अनुभव से शुरू होता है - एक नया जन्म। जब एक यहूदी धार्मिक शासक, नीकुदेमुस ने यीशु से पूछा कि इस जीवन में परमेश्वर के साथ संबंध बनाने और अगले जीवन में हमेशा के लिए जीने के लिए उसे क्या करने की आवश्यकता है, तो यीशु ने उससे कहा कि उसे 'दुसरा जन्म लेने' की आवश्यकता है (यूहन्ना 3)। क्योंकि वह केवल भौतिक दृष्टि से सोच रहा था, नीकुदेमुस उसके महत्व से चूक गया जो यीशु कह रहा था ।

बाइबल हमें बताती है कि हम सभी आत्मिक रूप से मर चुके हैं जब तक कि हमारी आत्मा मसीह में एक नए जन्म के अनुभव के द्वारा जीवित नही हो जाती (रोमियों 3:23; 6:23)। उद्धार केवल परमेश्वर के द्वारा है। हम इसे अर्जित करने या इसके लायक होने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते (इफिसियों 2:8-9)। हम बस इसे प्राप्त करते हैं। यह एक उपहार है - जो हमारे लिए मुफ्त है। यीशु ने इसकी कीमत चुकाई है।

जब यीशु क्रूस पर गया तो वे हमारा प्रतिनिधि, हमारा विकल्प बन गया। उसने अपने आप को हमारे पापों के साथ पहचाना और, चूंकि पाप न्याय लाता है, परमेश्वर ने अपना न्याय यीशु पर उंडेला। यीशु ने हर उस पाप के लिए दुख उठाया जो हमने कभी किया है या कभी भी करेंगे। उसने वह भोगा जो हम अनंत काल तक नरक में भुगतते । क्योंकि वह एक आदमी था, वह हमारा विकल्प हो सकता था। क्योंकि वह परमेश्वर था, उसने कष्टों को और अधिक तीव्रता से महसूस किया, इस प्रकार क्रूस पर उन घंटों के दौरान हमारे सभी पापों को सहने में सक्षम हुआ। उसकी पीड़ा कहीं अधिक गहरी और अधिक तीव्र थी जो हमारी होती ।

हालांकि, हमारे लिए ऐसा करने के द्वारा, उसने इसे प्राप्त करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए मुफ्त मुक्ति प्रदान की। उसने परमेश्वर और मनुष्य के बीच की खाई को पाट/भर दिया। उसने परमेश्वर और हमारे

बीच की दुश्मनी को दूर किया। अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, परमेश्वर के परिवार में जन्मे हैं (यूहन्ना 3; 1 यूहन्ना 2:23; यूहन्ना 1:12)। परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। यीशु परमेश्वर का पुत्र है और परमेश्वर भी। यीशु हमारा भाई है। परिवार में आपका स्वागत है!

उद्धार की आवश्यकता "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)। क्योंकि परमेश्वर पवित्र और सिद्ध है, वह अपनी उपस्थिति में पाप की अनुमति नहीं दे सकता। फिर भी, वह चाहता है कि मनुष्य उसके साथ सहभागिता करे - इसलिए उसने मनुष्य को बनाया। इसलिए, उसने स्वयं पृथ्वी पर आने और मनुष्य के विकल्प के रूप में क्रूस पर जाने की योजना बनाई। संसार के सभी पापों का दोष अपने ऊपर ले कर, उसने उसका अनुभव किया जो हम अनंत काल नरक में अनुभव करते , संघनित और उस पर उंडेला। क्योंकि वह मनुष्य था, वह हमारा प्रतिस्थापन हो सकता था । क्योंकि वह पापरहित था, उसके पास स्वयं का पाप नहीं था कि वह हमारे लिए भुगतान कर सकता था । क्योंकि वह परमेश्वर था, वह हम सभी के लिए एक ही बार में नरक का अनुभव कर सकता था, उसके पास पीड़ित होने की अधिक क्षमता थी। उद्धार में जोड़ने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते, यह सब परमेश्वर के अनुग्रह से है (इफिसियों 2:8-9)।

उद्धार का प्रावधान परमेश्वर ने यह सब प्रदान किया है, हम केवल उसके प्रावधान को स्वतन्त्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं (इफिसियों 2:8-9)। यीशु ने कहा, "पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30)। ग्रीक में "यह समाप्त हो गया" शब्द का अर्थ है, "पूरा भुगतान किया गया।" यह भुगतान किए जाने पर रसीद के बिलों पर लिखा गया था। यीशु को हमारे पापों के लिए नहीं मारा गया था, उसने पीड़ित किया और उसके लिए भुगतान किया, फिर, जब यह सब समाप्त हो गया, और उसके जीवन का कार्य पूरा हो गया, तो वह स्वेच्छा से मर गया क्योंकि अब पीड़ित होने का कोई कारण नहीं था। उसने यह सब भुगतान किया!

उद्धार का प्राप्ति उद्धार विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है (रोमियों 3:27-28; यूहन्ना 3:16)। कहा जाता है कि "दरवाजे पे यीशु" को चित्रित करने वाले कलाकार ने जानबूझकर दरवाजे के कुंडी को छोड़ दिया, क्योंकि दरवाजा मानव हृदय का प्रतिनिधित्व करता है, और उस दरवाजे पर बोल्ट अंदर की तरफ होता है। यीशु खड़ा है और दस्तक देता है। लेकिन जब तक हम दरवाजा नहीं खोलेंगे वह अंदर नहीं आएगा। यदि उद्धार को अस्वीकार कर दिया जाता है तो व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध और न्याय के अधीन रहता है (यूहन्ना 3:16-26, 36; यूहन्ना 14:6)।

उद्धार की अस्वीकृति परमेश्वर के पास जाने के लिए यीशु ही एकमात्र मार्ग है, उद्धार का कोई अन्य मार्ग नहीं है (यूहन्ना 14:6)। उसके उद्धार के उपहार को अस्वीकार करने का अर्थ है नरक में अनन्त दण्ड की आज्ञा (यूहन्ना 3:36)।

उद्धार के काल उद्धार के क्षण सभी पिछले पाप और उनका दंड को हटा दिया जाता है (2 तीमुथियुस 1:9; प्रेरितों के काम 16:31)। चाहे कुछ भी हो, वह हमारे विरुद्ध कभी नहीं ठहराया जाएगा, क्योंकि उसका जुर्माना चुका दिया गया है (रोमियों 8:1)। उद्धार के बाद किए गए पाप का भुगतान भी क्रूस पर किया गया है, लेकिन उसका स्वीकार किया जाना (में स्वीकार किया गया - 1 यूहन्ना 1:9) और पश्चाताप किया जाना आवश्यक है, तो उसे हटा दिया जाता है। वो पाप जिसका हम ने अंगीकार नहीं किया और ना पश्चताप किया है वो हमारे उद्धार को खतरे में नहीं डालता बल्कि परमेश्वर के साथ हमारी निकटता और संगति में बाधा डालता है। पति और पत्नी के बीच पाप विवाह को समाप्त नहीं करता है, लेकिन को एक-दूसरे को करीब रहने और इसका आनंद लेने से रोकता है।

जबकि उद्धार सभी पापों के दण्ड को हटा देता है, यह इसकी शक्ति को नहीं हटाता है (फिलिप्पियों 2:12-13; रोमियों 8:13)। एक मसीही विश्वासी में अभी भी पापी स्वभाव और पाप करने की क्षमता उतनी ही है जितनी उद्धार से पहले थी। लूत इसका एक अच्छा उदाहरण है (उत्पत्ति 13:12, 19:29-38; 2 पतरस 2:7-8)। जबकि हम पाप कर सकते हैं, हमें पाप नहीं करना है! पाप की शक्ति उतनी ही मजबूत है, लेकिन अब प्रतिरोध करने के लिए शक्तिहीन होने के बजाय, हमारे पास एक बड़ी शक्ति, पवित्र आत्मा है, और अब और पाप नहीं करना है। हम पाप की शक्ति से मुक्त हैं, लेकिन अभी तक पाप की उपस्थिति से नहीं।

भविष्य में, जब हम स्वर्ग में होंगे, तो हम पाप की उपस्थिति से ही मुक्त हो जाएंगे और हमारा पाप स्वभाव समाप्त हो जाएगा (रोमियों 13:11; तीतुस 2:12-13)। यह उन सभी के लिए गारंटी है जो परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करते हैं।

उद्धार की आशीशें जब एक बच्चे का जन्म एक परिवार में होता है तो वह तुरंत उस परिवार से मिलने वाली कई आशीषों और विशेषाधिकारों का हकदार होता है। वह परिवार की सभी संपत्ति में हिस्सदार बनता है और परिवार का नाम उसके लिए दरवाजे खोलता है और उसे विशेषाधिकार देता है। वह एक अनूठी विरासत भी प्राप्त करता है। परमेश्वर के परिवार में जन्म लेने वालों के बारे में भी यही सच है (2 कुरिन्थियों 5:17)। इनमें से कुछ आशिशें यह हैं:

1. प्रत्येक आत्मिक आशीष हमारी है (इफिसियों 1:3)।

2. संसार की सृष्टि से पहले हम व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के द्वारा चुने गए थे (इफिसियों 1:4)

3. अतीत की हमारी सारी लज्जा और पाप मिट गए हैं (कुलुस्सियों 1:14)

4. वर्तमान और भविष्य के पाप भी हमेशा के लिए दूर हो गए हैं (इफिसियों 1:4, 7-10; रोमियों 8:1-2)

5. परमेश्वर हमारे साथ अनुग्रह से व्यवहार करता है, व्यवस्था से नहीं (रोमियों 8:31-34; इफिसियों 2:8-9; 2 कुरिन्थियों 12:9;

इब्रानियों 4:16)

6. हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गए हैं (यूहन्ना 1:12; इफिसियों 1:5)

7. परमेश्वर हमें अपना मित्र कहता है (यूहन्ना 15:15)

8. हमें परमेश्वर के साथ अनन्तकाल तक मेल मिलाप/सुलह सलामती में है (रोमियों 5:1)

9. हमें आपने दैनिक जीवन में भी परमेश्वर की ओर से शांति मिलती है (फिलिप्पियों 4:7; कुलुस्सियों 3:15)

10. परमेश्वर हमें बिना शर्त सदा के लिए प्रेम करता है (रोमियों 8:35-39)

11. हम परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकते हैं और किसी भी समय उससे बात कर सकते हैं (इफिसियों 2:18; 3:12)

12. परमेश्वर हमें अपनी सामर्थ देता है, ताकि हम उसके लिए जी सकें (प्रेरितों के काम 1:8; फिलिप्पियों 4:13)

13. परमेश्वर की ओर से मार्गदर्शन और ज्ञान हमारे लिए उपलब्ध है (1 कुरिन्थियों 2:16)

14. हमारी सभी ज़रूरतें पूरी की जाती हैं (फिलिप्पियों 4:19)

15. हम सभी मसीहीओं के परिवार में हैं (1 कुरिन्थियों 12:27)

16. परमेश्वर ने हमारे लिए पाप के नियंत्रण पर विजय का मार्ग प्रदान किया है (2 कुरिन्थियों 5:17; रोमियों 6:2; गलातियों 2:20)।

17. शैतान और दुष्टात्माओं पर यीशु में हमारी विजय है (कुलुस्सियों 1:13; लूका 10:18-20)

18. परमेश्वर हमारे भीतर रहता है (1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19-20)

19. परमेश्वर हमारे जीवन में हर चीज का उपयोग कुछ भलाई के लिए ही करता है (रोमियों 8:28)

20. हमारे पास हमेशा के लिए उद्धार का आश्वासन है (2 कुरिन्थियों 1:21-22)

21. हमें स्वर्ग में हमेशा के लिए रहने की गारंटी है (इफिसियों 2:6; फिलिप्पियों 3:20)

और कई एक और।

शिष्यत्व: मैं किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता कैसे कर सकता हूँ जो अभी-अभी एक मसीही बना है?

उन्हें सिखाने में सबसे पहला काम जो आप को करना चाहिए वो है कि उद्धार क्या है, ताकि वे इसे यथासंभव अच्छी तरह समझ सकें। उनके साथ इस अध्याय की सामग्री को देखें। उनके किसी भी प्रशन का उत्तर दें। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उपलब्ध रहें, प्रशनो के उत्तर दें और जब भी उन्हें आवश्यकता हो, बुनियादी मार्गदर्शन प्रादान करें। उनके साथ घनिष्ठ मित्रता विकसित करें ताकि वे आप पर भरोसा करें। याद से, हमेशा उनके लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करें । वे आपके जीवन को देखते हुए उसे अधिक सीखेंगे, जितना कि आप जो कहते हैं उससे , इसलिए घर से शुरू करके हमेशा एक अच्छा मसीही उदाहरण स्थापित करें।

4. जीवन के लक्षण

मैं कैसे सुनिश्चित कर सकता हूँ कि मैं एक मसीही हूँ?

जब एक बच्चा पैदा होता है तो हर कोई तुरंत यह सुनिश्चित करने के लिए जाँच करता है कि वह जीवित और स्वस्थ है। कुछ संकेत हैं जो जीवन को दर्शाते हैं: हिलजुल , रोना, नबज आदि। आध्यात्मिक रूप से भी यही सच है। कुछ आध्यात्मिक 'संकेत' हैं जो हमें दिखाते हैं कि हम परमेश्वर के परिवार में पैदा हुए हैं। यहुन्ना 1 इनमें से 5 को सूचीबद्ध करता हूं:

1. उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में यीशु पर विश्वास (1 यूहन्ना 5:1) आध्यात्मिक जीवन का एक संकेत एक गहरी जागरूकता है कि यीशु ही परमेश्वर और उद्धारकर्ता है, कि वह वही है जो उद्धार प्रदान करता है और ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे हम अर्जित कर सकते हैं या इसके लायक बन सकते है।

2. जीवन में पाप पर जय पाने की प्रबल इच्छा (1 यूहन्ना 5:18) नए जन्म के साथ पाप के प्रति एक अलग दृष्टिकोण आता है। हम जानते हैं कि यह गलत है और हमें रुकने की तीव्र/मज़बूत इच्छा है।

हालांकि हम कुछ पापों के साथ संघर्ष कर सकते हैं, फिर तो भी भक्ति में धीमी ही सही लेकिन स्थिर प्रगति होनी चाहिए। हम जो सोचते और करते हैं, उसमें धीरे-धीरे हम और अधिक बढ़ते और यीशु के समान बनते है, (1 कुरिन्थियों 3:1-3)।

3. वह करना जो परमेश्वर को सही लगता है (1 यूहन्ना 2:29) जीना सीखना एक प्रक्रिया है, इसमें वृद्धि होती है। विकास जीवन का संकेत है। परमेश्वर कहता है कि जो आध्यात्मिक रूप से जीवित हैं वे आध्यात्मिक रूप से विकसित होंगे। हमें आध्यात्मिक रूप से बढ़ने की आज्ञा दी गई है (2 पतरस 3:18)। इस लिए पौलूस दुखी था, कि कुरिन्थ के विश्वासी नहीं थे (1 कुरिन्थियों 3:1-3)।

4. दूसरे विश्वासियों के लिए प्यार (1 यूहन्ना 3:14) जो कोई प्यार नहीं करता वह मौत में रहता है। जो लोग परमेश्वर के परिवार में रहते हैं उनके बीच एक स्वाभाविक बंधन होगा। हमारे पास जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीजें समान हैं। आमतौर पर तत्काल संबंध होते हैं। हम अन्य मसीहिओं के साथ समय बिताने और उन्हें जानने की इच्छा रखते हैं। यह एक खुशी और प्रोत्साहन है, क्योंकि हम समान विचारधारा वाले हैं।

5. दुनिआवी राहों पर विजय (1 यूहन्ना 5:4) जबकि पाप पर विजय अक्सर धीरे-धीरे आती है, मसीहिओं के रूप में हम जानते हैं कि हमारे भीतर एक शक्ति है जो दुनिया में है और हम अनुभव कर सकते हैं कि परमेश्वर हमें जीत दे रहा है जो एक समय हमें हराती थीं।

मैं कैसे सुनिश्चित कर सकता हूँ कि मैं अभी भी एक मसीही हूँ? जब पहला जन्म होता है, तो बच्चे बीमारी के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं, इसलिए उन्हें इनसे बचाना चाहिए। वे बहुत असुरक्षित हैं। जब तक वे बड़े नहीं हो जाते और मजबूत नहीं हो जाते, तब तक उन्हें उन चीजों का खतरा होता है, जिनसे बाद में लड़ना उतना मुश्किल नहीं होगा। जब कोई नया विश्वासी होता है तो खतरा होता है कि वे अपने उद्धार पर संदेह करना शुरू कर दें या डरे कि वह इसे खो ना दे। इस प्रकार, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि युवा मसीही संदेह और भय की बीमारियों से सुरक्षित हैं। शैतान हमारा उद्धार नहीं छीन सकता, इसलिए वह हमारे उद्धार के आनंद को इन तरीकों से छीनने का प्रयास करता है।

संदेह की बीमारी किसी व्यक्ति के मसीही बनने के तुरंत बाद उसके मन में संदेह कराना शैतान के लिए असामान्य नहीं है। क्काया यह सही है ? क्या उन्होंने यह 'सही' किया? तुलना करने की कोई आवश्यकता नहीं है इसलिए कुछ भी गलत नहीं है किया जा सकता है। उद्धार केवल हृदय की मनोवृत्ति है यह विश्वास करना कि यीशु ही परमेश्वर है जिसने क्रूस पर आपके सभी पापों के लिए भुगतान किया। यदि आप उस पर विश्वास करते हैं, तो आपके पास अनन्त जीवन है और आप इसे कभी नहीं खो सकते (रोमियों 3:28; यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8-9)

यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि आपने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में कब स्वीकार किया है, या ऐसा किया भी है के नहीं, और इस कारण संदेह में है, तो अभी प्रार्थना करने के लिए कुछ समय निकालें और उसको आपके पापों को क्षमा करने और आप के मन में रहने के लिए प्रार्थना करें । आप निश्चित रूप से जानेंगे कि यदि उसने पहले ऐसा नहीं किया है, पर अब कर दिया है, आपको कभी आश्चर्य या चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी। आज की तारीख लिख लें ताकि आप हमेशा इस समय को याद कर सकें और याद रखें कि आपने वास्तव में उस पर अपना विश्वास रखा था। _____

भय का रोग- यदि आपको अपने उद्धार पर संदेह करने से शैतान का काम नहीं चलता है, तो शैतान आपको यह विश्वास दिलाने की कोशिश करेगा कि आपने किसी ना किसी तरह से अपना उद्धार खो दिया है। यह आपकी शांति और आनंद को छीन लेगा और इसे भय से बदल देगा। यह विश्वास करने से कि

आप अपना उद्धार खो सकते हैं, आपको इसे ना खोने के लिए हर संभव प्रयास करने का कारण बनेगा। इस प्रकार, मसीह ने जो किया है उसमें मसीही जीवन सुरक्षित और आश्वासत मानने के बजाय, ध्यान स बात पर केंद्रित हो जायेगा कि आप क्या करते हैं या क्या नहीं करते हैं। कुछ ऐसा करने का डर जिससे आप अपना उद्धार खो देंगे, आपके मसीही जीवन में प्राथमिक प्रेरक बल बन जाता है। एक परिवार कैसे चल सकता है अगर हर किसी को परिवार से बाहर निकाल दिए जाने के डर से दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना पड़ता है ?

परमेश्वर चाहता है कि हम निश्चित रूप से यह जान लें कि हमारे उद्धार को खोने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते। वह चाहता है कि हम हमेशा के लिए उसके प्रेम के प्रति आश्वस्त रहें। वह चाहता है कि हम उसके लिए प्रेम से भर कर उसकी सेवा करें, नाकि इस डर से कि वह हमें नरक में भेज देगा! हम अनुग्रह के अधीन हैं, व्यवस्था के अधीन नहीं, इसलिए उद्धार को खोने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते (रोमियों 6:14)। यदि हम विश्वास करते हैं तो परमेश्वर हमें बचाने के अपने वायदे के प्रति वफादार है। यदि हम विश्वासघाती भी हो जाते हैं तब भी वह हमसे अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करता है (2 तीमुथियुस 2:11-13)। जब हम कमजोर और लड़खड़ाते हैं तो वह हमारी रक्षा करता है। जब हम पाप करते हैं और बह जाते हैं तो वह हमें अलग नहीं फेंक देता (मत्ती 12:20; भजन संहिता 37:24)। वह हमारे पापों को हमारे विरुद्ध कभी नहीं रखेगा क्योंकि उन सभी के लिए क्रूस पर भुगतान किया गया था। इस प्रकार, ऐसा कोई पाप नहीं है जो हम पर कभी भी लगाया जाएगा (रोमियों 4:6-8)। उद्धार को ना तो खोया जा सकता है और ना ही वापस दिया जा सकता है, और शैतान इसे हमसे नहीं ले सकता (रोमियों 8:37-39)। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमारे और परमेश्वर के बीच आ सकता है, यहाँ तक कि हम भी नहीं (यूहन्ना 10:28-29; रोमियों 8:37-39)।

इसलिए, जब भी आपको लगता है कि इनमें से कोई एक बीमारी आपको मारने की कोशिश कर रही है और आपका आनंद और शक्ति ले रही है, तो याद रखें कि आपके पास अपने उद्धार पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है और आपके पास अपने उद्धार खोये जाने से डरने का कोई कारण नहीं है।

शिष्यत्व: किसी को यह सुनिश्चित करने में कैसे मदद करें कि वे एक मसीही हैं? क्या नए विश्वासी को अपने उद्धार के बारे में कोई संदेह या प्रशन हैं? उनके लिए इनका उत्तर दें। उन्हें सिखाएं कि वे अपना उद्धार नहीं खो सकते, चाहे कुछ भी हो, लेकिन यह पाप करने का बहाना भी नहीं है। उन्हें बाइबल की ऐसी आयतें दिखाएँ जो उन्हें उद्धार का आश्वासन देती हैं। उन्हें उन आयातों को याद करने के लिए प्रोत्साहित करें।

5. खाना सीखना

मुझे आध्यात्मिक पोषण कहाँ से मिल सकता है?

जब कोई बच्चा पैदा होता है तो हवा के बाद सबसे पहले उसकी मांग पोषण की होती है। बच्चों को बढ़ने के लिए अक्सर खाने की जरूरत होती है। उन्हें तीव्र भूख लगती है। आध्यात्मिक विकास में भी यही सच है। जो लोग परमेश्वर से पैदा हुए हैं, वे महसूस करते हैं कि उनमें परमेश्वर के वचन को सीखने की भूख है। बाइबल के लिए एक नई सराहना और प्रेम प्रकट होता है। बाइबल पढ़ने की इच्छा केवल बौद्धिक जिज्ञासा को भरने के लिए नहीं है, बल्कि हमारी आत्मा और आत्मा को पोषित करने की होती है। हम शुरू से ही महसूस करते हैं कि इसमें अति आवश्यक पोषण मिलता है। पौलुस कुरिन्थियों को लिखे अपने पत्र में इस समानता के बारे में बात करता है (1 कुरिन्थियों 3:1-3)।

जब किसी व्यक्ति की भूख कम हो जाती है तो यह बीमारी का संकेत है और व्यक्ति कमजोर हो जाता है। आध्यात्मिक रूप से भी ऐसा ही होता है। परमेश्वर के वचन की इच्छा पूरी होनी चाहिए (1 पतरस 2:2-3)। हमें लगातार परमेश्वर के वचन पर भोजन करना चाहिए।

मैं आपने आप को खिलाना कैसे सीख सकता हूँ?

कुछ समय पहले मैंने एक ऐसे व्यक्ति की कहानी पढ़ी, जो बहुत गरीबी में मर गया। दरअसल, उनकी मौत उचित भोजन और आवास के अभाव में हुई थी। उसकी संपत्ति में से एक बाइबल मिली और बाइबल में हज़ारों डॉलर भरे हुए थे। उसके माता-पिता ने उसके लिए यह बाइबल रख दी थी - लेकिन उसने इसे कभी नहीं खोला! हम कितनी बार उस आदमी की तरह होते हैं - हमारी आत्मा भूख से मर रही होती है और हम आध्यात्मिक गरीबी में जी रहे होते हैं, जबकि हमारी जरूरतों का प्रावधान हमारी बाइबिल के कवर के बीचो बीच होता है। हमें इसे प्राप्त करना चाहिए और इसका उपयोग करना चाहिए।

बाइबल अध्ययन को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया जा सकता है: अवलोकन ("मैं क्या देख सकता हूँ?"), व्याख्या ("इसका क्या अर्थ है?") और अनुप्रयोग ("मुझे कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए?")। बाइबल हमारी आत्माओं के लिए आध्यात्मिक पोषण प्रदान करती है क्योंकि भोजन हमारे शरीरों के लिए शारीरिक पोषण प्रदान करता है (1 पतरस 2:2; भजन संहिता 119:103; इब्रानियों 5:13-14)। शरीरक और आध्यात्मिक भोजन में भाग लेने के बीच भी एक करीबी समानता है। (अधिक विस्तृत जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा लिखी पुस्तक बाइबल का अध्ययन करना देखें)।

I. अवलोकन जब आप बीमार होते हैं और डॉक्टर के पास जाते हैं तो वह आपकी बारीकी से जांच करेगा, तथ्यों को इकट्ठा करेगा, और उनकी व्याख्या करने और कार्य योजना के साथ शूरू करने से पहले प्रशन पूछेगा। इसी तरह, एक जासूस को उन चीजों की तलाश करनी चाहिए जो पहली बार में स्पष्ट नहीं हैं। एक वैज्ञानिक का भी यही हाल है। इन सभी के लिए, अंतिम अनुप्रयोग केवल प्रारंभिक अवलोकन जितना ही अच्छा होगा । खोज की अवधि जितनी बेहतर होगी, निष्कर्ष उतना ही सटीक और मददगार होगा। यह बाइबल अध्ययन में भी यही सच है।

जब आप किसी हिस्से का अध्ययन करते हैं, तो पहले उसे कई बार पढ़ें। आप हिस्से को जितना बेहतर जानते हैं, उन चीज़ों को नोटिस करना उतना ही आसान हो जाता है जिन्हें आप पहली बार पढ़ते समय अनदेखी करते हैं। पढ़ते समय एक कागज और पेंसिल को संभाल कर रखें। पहले कुछ समय के बाद आपके मन में सवाल आने लगेंगे, ऐसी बातें जो आपको समझ में नहीं आतीं और जिनका जवाब आप पाना चाहेंगे। उन्हें लिख लीजिये! वास्तव में, जितना हो सके उतने प्रशनो को लिखने का प्रयास करें। अब उन्हें उत्तर देने की चिंता ना करें, जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, अधिकांश स्वयं ही उत्तर देंगे। हालाँकि, यदि आप प्रशन नहीं पूछते हैं, आप उस उत्तर पर कभी ध्यान नहीं देंगे और चूक जाएंगे जो आपके दिल दिमाग में घूमता घुमाता आ रहा होगा ! आप उन प्रशनो का उत्तर नहीं देंगे जो आपने नहीं पूछे हैं, इसलिए सुनिश्चित करें कि आप प्रशनो को लिखने में संपूर्ण, रचनात्मक और धैर्यवान हैं। अपने आप से पूछें, "यदि पौलुस यहाँ होता, तो मैं उससे इस शब्द/वचन के बारे में क्या पूछता?" मैं सही प्रशन पूछने के कौशल को अच्छी तरह विकसित करने के महत्व पर अधिक जोर नहीं दे सकता।

II. व्याख्या अवलोकन विवरण एकत्र करता है: तथ्य, प्रशन, अंतर्दृष्टि। व्याख्या इन अवलोकनों का संगठन करती है और इनका अर्थ बनाती है और आपके सवालों के जवाब देती है। आपको इस चरण के दौरान प्रशन पूछना और लिखना जारी रखना चाहिए, लेकिन अब आप अपने प्रशनो का उत्तर देना शुरू करते हैं। आप अपनी प्रशनो की सूची को एक-एक करके देखकर शुरू नहीं करते हैं, लेकिन जैसा कि आप

व्याख्या करते हैं, आप पाएंगे कि कई उत्तर स्पष्ट हो गए हैं। यदि आपने प्रशन नहीं पूछे होते तो आप उत्तरों को नहीं पहचान पाते, वे बिना आप के ध्यान में आए ही चले जाते। अपने मन में आए प्रशनो के साथ आप उनके उत्तर प्राप्त करेंगे जैसे वे आपकी व्याख्या में आते हैं। एक डॉक्टर के लिए यह रोग पहचान चरण है जब निष्कर्ष निकाला जाता है। जासूस और वैज्ञानिक के बारे में भी यही सच है, जिन्हें अपने द्वारा एकत्रित की गई जानकारी से समझ में आना चाहिए।

हम इसे बाइबल अध्ययन में कैसे करते हैं? बाइबल की समझ को सही करने की कुँजी है स्वयं को लेखक के स्थान पर रखना और उसके मन को पढ़ना - वह क्या सोच रहा था? उसने यह क्यों लिखा? वह क्या कहता होगा कि इसका क्या मतलब था ? बाइबल हमारे लिए लिखी गई थी लेकिन हमको नहीं। यह उन लोगों को संबोधित थी जो लेखक के समय में रहते थे। यह जानने के लिए कि किसी हिस्से का क्या अर्थ है, हमें इसे उसकी आँखों से देखना चाहिए। वे कैसे समझते कि क्या लिखा है? उनकी संस्कृति और पृष्ठभूमि से इस बात पर बहुत फर्क पड़ता है कि जो लिखा गया है आज हम उसकी व्याख्या कैसे करते हैं। एक हिस्से का केवल एक ही अर्थ होता है, जो लेखक लोगों से कह रहा था। इसलिए उसके नजरिए से इसकी व्याख्या करना बहुत जरूरी है।

हम यह सुनिश्चित करने के लिए बाइबल की व्याख्या करते हैं कि हम समझ रहे हैं कि हिस्से से पहले और बाद में क्या लिखा गया था। हम उन हिस्सों को देखते हैं जो समान चीजों के बारे में बात करते हैं। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हम समझ गए हैं कि इसे किसने लिखा, कब लिखा गया, किसके लिए लिखा गया और हिस्से में क्या हो रहा है। हम अन्य पुस्तकों की तरह बाइबल की शाब्दिक व्याख्या करते हैं। हम इतिहास की व्याख्या कविता से अलग करते हैं और सिद्धांत की दृष्टान्तों से अलग। (इस बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर की पुस्तक " बाइबल का अध्ययन " देखें)।

III. अनुप्रयोग इसका अध्ययन और सीखने का उद्देश्य यह है कि आप जो खोजते हैं उसे अपने जीवन के उन क्षेत्रों में लागू करें जहाँ आवश्यकता हो। जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं तो प्रार्थना और परमेश्वर की पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील होना महत्वपूर्ण है जैसे वह आपसे बातचीत करता है। वह आपको दिखाएगा कि हिस्से में जो सच्चाई है आप पर कैसे लागू होती है। परमेश्वर से आपको यह दिखाने के लिए प्रार्थना करें कि आप ने हिस्से के बारे में जो सीखा है वह आप पर कैसे लागू होता है। इसमें एक आदेश हो सकता है जिसे परमेश्वर चाहता है कि आप पालन करें या एक उदाहरण हो सकती है जिसका आप का पालन करें। ध्यान देने के लिए एक चुनौती हो सकती है, एक ऐसा पाप हो सकता है जिस से आप को आपने आप को बचाना होगा, सीखने के लिए एक नई शिक्षा, याद रखने के लिए कोई वायदा या करने के लिए कोई कार्रवाई हो सकती है। शायद कुछ ऐसा है जिसके बारे में परमेश्वर चाहता है कि आप प्रार्थना करें या उसे याद रखें। आप इन सभी को हर हिस्से में नहीं पाएंगे, लेकिन परमेश्वर से पूछें कि वह आपको बताए कि हिस्से में आपके लिए उसके पास क्या है।

पवित्रशास्त्र के हिस्से याद रखना आध्यात्मिक विकास के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है (भजन संहिता 119:11)। वे इस बात का हिस्सा बन जाते हैं कि आप कौन हैं और आप की सोच एक हिस्सा बन जाते हैं जो और जैसे आप सोचते है । जब आपको उनकी आवश्यकता होगी, परमेश्वर यह सब आप के मन में लायेगा । जब यीशु की परीक्षा हुई तो उसने शैतान के प्रलोभनों पर विजय पाने के लिए पवित्रशास्त्र का हवाला दिया (मत्ती 4:1-11)। पौलूस कहता है कि हमारा एकमात्र आक्रामक हथियार आत्मा की तलवार, परमेश्वर का वचन है (इफिसियों 6:17)।

मैं इस बात पर बहुत अधिक जोर नहीं दे सकता कि पवित्रशास्त्र को ज़ुबानी याद रखना कितना महत्वपूर्ण है। प्रत्येक विश्वासी को आयतें ज़ुबानी याद रखनी चाहिए। जब आप दूसरों को बढ़ने में मदद करते हैं,

तो सुनिश्चित करें कि आप उन्हें उनको हिस्से याद करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जो परमेश्वर उन्हें दिखाता है कि वे महत्वपूर्ण हैं। जैसे ही वे उन्हें सीखते हैं, उनको कहो कि वह आपको सीखे गए हिस्से बताएं। यदि आप नहीं जानते है तो शुरू करने के लिए कहाँ पर कुछ उपयुक्त हिस्से हैं: भजन संहिता 119:11; फिलिप्पियों 4:6; 2 तीमुथियुस 3:16-17; 1 यूहन्ना 5:11-12; यूहन्ना 16:24; 1 कुरिन्थियों 10:13; 1 यूहन्ना 1:9; नीतिवचन 3:5-6; 2 कुरिन्थियों 5:17; रोमियों 12:1; यूहन्ना 15:7 और इफिसियों 2:8-9।

शिष्यत्व: मैं किसी और को बाइबल का अध्ययन करना सीखने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

सबसे पहले, सुनिश्चित करें कि आप स्वयं बाइबल का अध्ययन कर रहे हैं और इसे याद कर रहे हैं। एक नए विश्वासी की मदद करने के लिए, उनके साथ मिलें, अपनी बाइबल खोलें, और जैसा कि मैंने ऊपर वर्णित किया है, उन्हें चरण दर चरण बाइबल अध्ययन के माध्यम से ले जाएं। पर्याप्त समय लो। उन्हें अपकी देखरेख में आपने आप करने दें। बस इतना ध्यान रखे कि उनका काम वह खुद करें । उनके साथ नियमित रूप से मिलें। उन्हें स्वयं अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करें, फिर जब आप मिलें तो उन्हें परिणाम लाने के लिए कहें ताकि आप देख सकें कि वे क्या कर रहे हैं और उनको सुझाव दे सकते हैं। धैर्य रखें और बहुत उत्साहजनक बनें। इस प्रक्रिया को पूरा करने के बाद भी उनके साथ समय-समय पर उनसे पूछते रहें कि वे अपने बाइबल अध्ययन में कैसा कर रहे हैं।

6. बात करना सीखना

मैं परमेश्वर के साथ कैसे संवाद कर सकता हूं?

एक सामान्य, स्वस्थ बच्चे के लिए यह स्वाभाविक है कि वह उसकी देखभाल करने वालों के साथ संवाद करने की कोशिश करे। इससे पहले कि वे बात कर सकें, वे रोते हैं और दूसरों को यह बताने के लिए इशारों का उपयोग करते हैं कि वे कैसा महसूस करते हैं। जैसे ही वे सक्षम होते हैं वे शब्दों का प्रयोग शुरू कर देते हैं। बहुत पहले से ही वे बात करने द्वारा संवाद करने में सक्षम हो जाते हैं।

आध्यात्मिक रूप से जन्म लेने वालों को भी परमेश्वर के साथ संवाद करना सीखना चाहिए। प्रार्थना करना सीखना आध्यात्मिक विकास का एक अनिवार्य हिस्सा है। प्रार्थना शक्तिशाली है (यूहन्ना 14:13-14; 15:7,16; मरकुस 11:24; 11:22-24; लूका 11:9-10; 1 यूहन्ना 5:14; यिर्मयाह 33:3)। परमेश्वर से प्रार्थना करना एक अच्छे दोस्त से बात करने के समान है। यह इतना आसान है। आप किसी को जितना बेहतर जानते हैं, उससे बात करना उतना ही आसान होता है। परमेश्वर के साथ भी यही सचाई है। ऐसे कई विषय हैं जिन्हें हमारी प्रार्थनाओं में शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि उनका सम्लित होना आवश्यक है।

1. अंगीकार (1 यूहन्ना 1:9; भजन संहिता 66:18; 51:1)। अंगीकार करने का अर्थ है परमेश्वर के साथ सहमत होना कि गर्म मुद्दा मेरा पाप है (गलती नहीं, किसी और की गलती, आदि)। अपने पाप को स्वीकार करने के बाद सुनिश्चित करें कि आप परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करते हैं (दानिय्येल 9:9,19; भजन 130:4; 86:5; 99:8; 103:3; आमोस 7:2)। केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकता है (मरकुस 2:7; 11:25; लूका 5:24; मत्ती 6:14; कुलुस्सियों 3:13)। परमेश्वर पाप को नहीं देखता, वह क्षमा करता है क्योंकि इसका दाम क्रूस पर यीशु के लहू से चुकाया गया था (इब्रानियों 9:22; इफिसियों 4:32; 1:7; 1 पतरस 2:24; 3:18; लूका 24 :46-47; कुलुस्सियों 1:14; यूहन्ना 19:30)। यह क्षमा सभी के लिए उपलब्ध है (यशायाह 53:6; कुलुस्सियों 2:13; रोमियों 8:1)। जब आप अपने पाप को स्वीकार/स्वीकार करते हैं तो

परमेश्वर उसे क्षमा कर देता है। इसका अर्थ है कि वह इसे मिटा देता है (यशायाह 43:25; 1:18; 44:22; प्रेरितों के काम 3:19; कुलुस्सियों 2:14; भजन संहिता 32), इसे अपनी नजरों के पीछे फेंक देता है (एक ऐसी जगह जिसे वह नहीं देख सकता - यशायाह 38 :17; यिर्मयाह 31:34), इसे भूल जाता है (इब्रानियों 8:12; 10:17; यशायाह 43:25; यिर्मयाह 31:34), इसे वहाँ गायब कर देता है जहाँ यह कभी नहीं मिलेगा (यिर्मयाह 50:20), जैसे दोपहर के समय भोर की धुंध की गायब हो जाती है (यशायाह 44:22; यूहन्ना 20:31) और इसे समुद्र के सबसे गहरे हिस्से में डाल देता है (मीका 7:19) जो जल्द ही हमेशा के लिए चले जाते है (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

2. स्तुति करना (भजन 34:1-3; 48:1; इब्रानियों 13:15)। स्तुति करने का मतलब है परमेश्वर की महिमा करना उसके लिए कि वह कौन है और क्या है। यह उसके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उसे धन्यवाद देने से अलग है। हम अनंत काल तक परमेश्वर की स्तुति करते रहेंगे, इसलिए हमें अभी से शुरू करना चाहिए! परमेश्वर हमारी स्तुति से प्रसन्न होता है (भजन संहिता 22:3; इब्रानियों 13:15)। बाइबल कहती है कि स्तुति में सामर्थ्य है (भजन संहिता 22:3)। स्तुति शब्द या गीत से की जा सकती है। सुनिश्चित करें कि आप एक मजबूत स्तुति जीवन विकसित करते हैं (फिलिप्पियों 4:4; इब्रानियों 13:15)। निम्नलिखित हिस्सों को पढ़ें और उन्हें स्तुति प्रार्थनाओं में बदल दें: निर्गमन 15:1-2; व्यवस्थाविवरण 10:21; 32:3-4,43; 1 शमूएल 2:1-2; 2 शमूएल 22:4, 50; 1 इतिहास 16:9,25,31; 29:10-12; 2 इतिहास 5:12-14; 20:21-22,27; भजन संहिता 8:1-2; 9:1-3; 31:21; 44:8; 40:16; 47:1-3; 68:3-4; 72:18-19; 86:12-13; 104:33; 108:3; 117:1-2; 119:108,175; 138:1-4; 142:7; 149:1,3,6-9; 150:1-6; यशायाह 25:1,9; 38:18-19; 60:18; दानिय्येल 2:20-23; यिर्मयाह 20:13; हबक्कूक 3:17-19; जकर्याह 9:9; लूका 1:46-47; लूका 10:21; यूहन्ना 4:23024; इफिसियों 1:3; यहूदा 1: 25; प्रकाशितवाक्य 4:10-11; 5:5,12-13; 15:3-4.

3. धन्यवाद देना (भजन संहिता 116:12; फिलिप्पियों 4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:18)। धन्यवाद देने का मतलब है परमेश्वर को धन्यवाद देना है उसके लिए जो जो भी उसने आपके जीवन में किया है, कर रहा है और (साथ ही दूसरों के जीवन में) करने जा रहा है। हम सभी अपने कामों के लिए धन्यवाद दिए जाने की सराहना करते हैं, और ऐसा ही परमेश्वर भी करता है। अपने धन्यवाद में विशिष्ट रहें। याद रखें, सब कुछ उसी की ओर से आता है और हमारे भले के लिए है (रोमियों 8:28) इसलिए हमें हर चीज के लिए उसका धन्यवाद करना चाहिए!

4. मध्यस्थता (भजन 28:9; याकूब 5:14-20; 1 तीमुथियुस 2:1-4; 1 शमूएल 12:23)। मध्यस्थता का मतलब है दूसरों के लिए प्रार्थना करना है। अक्सर प्रार्थना अनुरोधों की एक सूची रखना अच्छा होता है ताकि आप उनके लिए प्रार्थना करना याद रखें और इसलिए आप उत्तर को भी चिह्नित कर सकते हैं। फिर उतर मिलने पर परमेश्वर का शुक्र अदा करें । याद रखें परमेश्वर हर प्रार्थना का उतर देता है। उत्तर या तो हां (अभी), रुको (बाद में) या नहीं (कभी नहीं) है। प्रत्येक प्रार्थना में इनमें से एक उत्तर मिलता है। परमेश्वर कुछ भी करने में सक्षम है, परन्तु वह हमेशा वह करने के लिए तैयार नहीं है जो हम चाहते हैं कि वह करे (दानिय्येल 3:17)। इसलिए, जब आप दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं, तो सबसे पहले इस बात के प्रति संवेदनशील रहें कि परमेश्वर कैसे चाहता है कि आप प्रार्थना करें। जलदी से प्रार्थना में परमेश्नवर को आपने समाधान ना बताने लग जाएँ , उसे केवल समस्याए ही बताएं और उसे समाधान देने दें अपनी प्रार्थना बनाने में इतनी जल्दी मत करो। परमेशवर के पास एक और उपाय हो सकता है जो आपसे बेहतर हो। परमेश्वर से समाधान बताते हुए प्रार्थना न करें, समस्याओं की प्रार्थना करें और उन्हें अपना समाधान स्वयं करने दें। आप पाएंगे कि प्रार्थनाओं का उत्तर अधिक बार तब मिलता है जब आप उसे यह पता लगाने देते हैं कि किसी चीज़ की देखभाल कैसे की जाती है। अक्सर एक बाधा को दूर करने

के बजाय, वह हमें इसे सहने के लिए अनुग्रह देता है (2 कुरिन्थियों 12:7-10)। उस विकल्प को अपनी प्रार्थनाओं में दूसरों के साथ-साथ अपने लिए भी शामिल करें।

5. याचिका (याकूब 4:2; इब्रानियों 4:15-16; यूहन्ना 15:7)। याचिका का अर्थ है परमेश्वर से अपने लिए चीजें मांगना। यह वैध है। हमें हमेशा केवल अपने लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, ना ही हमें अपने लिए प्रार्थना करने के अयोग्य महसूस करना चाहिए। ऊपर जो कुछ भी मैंने ऊपर "मध्यस्थता " के तहत कहा था, वह यहाँ पर फिट बैठता है। कुछ चीजें हैं जो बाइबल कहती है कि हमें माँगना चाहिए: एक समझदार हृदय (1 राजा 3:7,9), अन्य विश्वासियों के साथ संगति (फिलेमोन 4-6), क्षमा (भजन संहिता 25:11,18,20), मार्गदर्शन (भजन संहिता 25:4-5; 27:11), पवित्रता (1 थिस्सलुनीकियों 5:23), प्रेम (फिलिप्पियों 1:9-11), दया (भजन संहिता 6:1-6), शक्ति (इफिसियों 3:16), आत्मिक विकास (इफिसियों 1:17-19) और परमेश्वर की इच्छा को जानना और करना (कुलुस्सियों 4:12)। जैसे आप अपने लिए प्रार्थना करते हैं तो उस पर दावा करने के लिए एक बाइबल प्रतिज्ञा के बारे में सोचें। परमेश्वर वायदा करता है कि वह हमें नहीं भूलेगा (यशायाह 49:15), हमें विफल नहीं करेगा (यहोशू 1:5), हमें दिखाएगा कि क्या करना है (1 शमूएल 16:3), हमारी मदद करेगा (यशायाह 41:10) और हमें मजबूत करेगा (यशायाह 41:10)।

6. सुनना (1 शमूएल 3:10; इब्रानियों 1:1-2; 3:15; भजन 62:5; 46:10) अच्छा संचार एक दोतरफा रास्ता है। कुछ मिनट रुकें और परमेश्वर को आपसे बात करता हुए सुनें। ऐसा आपको पूरे दिन करना चाहिए। आखिरकार, कौन सा अधिक महत्वपूर्ण है: आपका परमेश्वर को जानकारी देना या उसका आपको जानकारी देना ? आपने मन में स्थिर रहें, उसे आप के मन में उन विचारों, भावनाओं, विचारों आदि को डालने दें, जिनकी आपको आवश्यकता है। उसके अगुवाई के प्रति संवेदनशील रहें। जैसे किसी भी रिश्ते में होता है , आप किसी व्यक्ति को जितना बेहतर जानते हैं, संचार उतना ही बेहतर होता है। एक अजनबी के साथ अच्छा, गहरा संचार मुश्किल होता है, लेकिन जितना अधिक समय आप किसी व्यक्ति के साथ बिताते हैं, उतना ही बेहतर आप उन्हें 'सुन' सकते हैं, और परमेश्वर के साथ भी यही सच है। यह एक ऐसी कला है जिसे विकसित होने में समय लगता है। यदि आप इस पर काम नहीं करेंगे तो ऐसा नहीं होगा! (परमेश्वर को सुनने के बारे में अधिक जानकारी के लिए, अध्याय 12 देखें)।

उतरहीन प्रार्थना- प्रार्थना का मतलब परमेश्वर को यह बताना नहीं है कि क्या करना है और उससे यह उम्मीद करना कि वह वह सब कुछ करे जो हम माँगते हैं। प्रार्थना परमेश्वर के साथ समस्या के बारे में बात करना है और उसे यह निर्धारित करने देना कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है। क्या आप वो समाधान बताने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जो आप चाहते हैं, और समस्या नहीं? परमेश्वर को यह निर्धारित करने दें कि कौन सा समाधान सबसे अच्छा है। पौलुस ने शरीर में से अपने काँटे को निकालने के लिए प्रार्थना की, परन्तु परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया क्योंकि उसके पास इसे रहने देने का एक अच्छा कारण था (2 कुरिन्थियों 12:1-10)। परमेश्वर पर भरोसा रखें कि जो भी सबसे अच्छा है वहीं उसका उत्तर होगा।

अक्सर हमारे जीवन में पाप के कारण परमेश्वर के साथ हमारा संबंध टूट जाता है। यह पाप संचार को रोकता है। स्वार्थ (याकूब 4:2-3), घमंड (अय्यूब 35:12-13), अवज्ञा (1 यूहन्ना 3:22), दूसरों को क्षमा ना करना (मरकुस 11:25), करुणा की कमी (नीतिवचन 21:13) और अपने साथी के साथ ताल मेल में ना रहना (1 पतरस 3:7) सभी आपके और परमेश्वर के बीच आ सकते हैं और आपकी प्रार्थनाओं में बाधा डाल सकते हैं।

प्रार्थना के वायदे परमेश्वर हमें प्रार्थना के विषय में कई अद्भुत वायदे देता है। इन्हें पढ़ें और प्रार्थना करते समय इनका प्रयोग करें। जो आपसे ज्यादा संवाद करते हैं, उन्हें ज़ुबानी याद करें। मत्ती 7:7-11; 21:22;

यूहन्ना 14:13-14; 5:14-15; 15:7; यिर्मयाह 33:3; 29:12; मरकुस 11:24; याकूब 4:2-3; 1 यूहन्ना 3:22; 5:14-15.

शिष्यत्व: मैं एक नए विश्वासी को प्रार्थना करना सीखने में कैसे मदद कर सकता हूँ? यीशु के चेलों ने भी यही प्रशन पूछा और उसने उन्हें दिखाया कि वह कैसे प्रार्थना करता था (मत्ती 6:9-13)। आपको भी ऐसा ही करना चाहिए। हमेशा प्रार्थना में एक साथ अपना समय शुरू और बंद करें। यदि अन्य समय में विशेष आवश्यकताएँ आती हैं, तो एक साथ प्रार्थना करें। जब आप ज़ोर से प्रार्थना करते हैं तो बस स्वाभाविक रूप से और सामान्य रूप से परमेश्वर से बात करें, और फिर उन्हें भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों के साथ माता-पिता को दिन भर समय निकालना चाहिए ताकि वे रुकें और परमेश्वर से बात करें, उसे किसी चीज के लिए धन्यवाद दें या अपने या किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता के लिए प्रार्थना करें। हमेशा सुनिश्चित करें कि आप उसे बाद में भी धन्यवाद देने के लिए समय निकालते हैं । आप जो कुछ भी कहते और करते हैं उसमें एक धर्मी उदाहरण स्थापित करें।

7. चलना सीखना

मैं एक मसीही विश्वासी के रूप में जीवन में आगे बढ़ना कैसे सीख सकता हूँ?

चलना शुरू करने के लिए बच्चे की कितनी उम्र होनी चाहिए? 12 महीने? 15 महीने? क्या होगा अगर वे 5 साल के हैं और अभी भी रेंग रहे हैं? चलना स्वाभाविक है, कुछ ऐसा जो स्वस्थ बच्चे करना चाहते हैं। चलना सीखने में समय और मेहनत लगती है। यह जल्दी और आसानी से नहीं आता है लेकिन दृढ़ता की मांग करता है। बच्चा एक बार में एक कदम चलना सीखता है। संतुलन, समय और शक्ति धीरे-धीरे आती है। वे अक्सर नीचे गिर जाते हैं और उन्हें उठकर फिर से प्रयास करना पड़ता है।

परमेश्वर कहता हैं कि आध्यात्मिक रूप से चलना सीखने वाले बच्चे की भी यही सचाई है। वह कहता है कि हमें "आत्मा के अनुसार चलना" है (गलातियों 5:16, 25)। कदम दर कदम हमें सीखना चाहिए कि हमने कैसे प्रत्येक दिन अपने जीवन में धर्मी तरीके से आगे बढ़ना है। हमें अपने दैनिक जीवन को इस तरह से जीने की जरूरत है जो उसके लिए सम्मानजनक और प्रसन्नता भरा हो। हमें अपना संतुलन, समय और शक्ति पवित्र आत्मा से मिलते है, आपने आप से नहीं। यदि हम केवल अपना सर्वश्रेष्ठ करने के द्वारा ही मसीही जीवन जी सकते हैं, तो परमेश्वर का आपके पास अपनी आत्मा भेजने का कोई कारण नहीं होता । वह जानता है कि हमें उसकी सहायता की आवश्यकता है और पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा ही हम उसकी इच्छानुसार चल सकते हैं।

त्रिएक हम जो विश्वास करते हैं उसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि ईश्वर एक त्रिएक है: एक में तीन। परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है। वे अलग व्यक्ति हैं (उत्पत्ति 1:26; मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:14) लेकिन फिर भी एक (व्यवस्थाविवरण 6:4)। वह तीन एक हो सकता है और एक तीन गणितीय रूप से या हमारे दिमाग में गणना नहीं करता है, फिर भी दोनों सत्य बाइबल में सिखाए जाते हैं। केवल एक ही परमेश्वर है, लेकिन देवत्व की एकता में तीन शाश्वत और समान व्यक्ति हैं, पदार्थ में समान लेकिन निर्वाह में अलग।

पवित्र आत्मा के कार्य पवित्र आत्मा बाइबल का लेखक है, जिसने लेखकों को प्रकाशित और प्रेरित कर रहा था (2 पतरस 1:21; 2 तीमुथियुस 3:16)। पुराने नियम में वह आया और विश्वासियों को उनके जीवन और सेवकाई में विशेष आवश्यकता के समय भर दिया। यह उसकी शक्ति में है कि यीशु ने सेवा की

और चमत्कार किए, क्योंकि यीशु ने स्वेच्छा से पृथ्वी पर आने पे अपने ईश्वारिया गुणों को अलग रखा (फिलिप्पियों 2:7)।

आज वही है जो सामान्य रूप से पाप को रोकता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:7), अविश्वासियों को पाप के लिए दोषी ठहराता है (यूहन्ना 16:8-9), और (आश्वासन की गारंटी) विश्वासियों को मोहरबंद करता है (2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13) ; 4:30)। वह उद्धार के क्षण से प्रत्येक विश्वासी में वास करता है (यूहन्ना 7:37-39; 14:16-17; 1 कुरिन्थियों 6:19-20), विश्वासियों में फल (अच्छे कार्य) उत्पन्न करता है (गलतियों 5:22-23) और सभी मसीही विश्वासियों को मसीह की देह में बपतिस्मा देता है (पहचानता है) (1 कुरिन्थियों 12:13)। वह विश्वासियों का मार्गदर्शन और निर्देशन करने के साथ-साथ उन्हें परमेश्वर के वचन की शिक्षा और स्मरण दिलाता है (यूहन्ना 14:26)। वह प्रत्येक विश्वासी को आत्मिक वरदान देता है और उनके द्वारा सारी देह की सेवकाई करता है (1 कुरिन्थियों 12:4-13)।

हमें आत्मा के द्वारा (इफिसियों 5:18) लगातार परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण में रहने (गलातियों 5:16,25) और हमारे जीवन में किसी भी पाप या अवज्ञा की अनुमति नहीं देने के द्वारा (इफिसियों 5:18)पवित्र आत्मा से भरे (नियंत्रित) होने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 4:30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19)।

आत्मा के द्वारा कैसे चलें पौलुस आत्मा के द्वारा चलने के महत्व के बारे में लिखता है (गलातियों 5:16, 25)। इसका मतलब है कि हमें परमेश्वर की आत्मा को उसमे जो हम जो कुछ भी सोचते हैं और करते हैं , हमारा

मार्गदर्शन और हमे निर्देशित करने देना है। हम वह कैसे कर सकते है? बाइबल विश्वासियों को पवित्र आत्मा से "भरने" की आज्ञा देती है (इफिसियों 5:18)। पवित्र आत्मा से 'भरा' होना हममें पवित्र आत्मा को और अधिक प्राप्त करने का प्रयास करने की बात नहीं है। यह हमारी बात है कि हम अपने आप को परमेश्वर और उसकी आत्मा को और अधिक दें। जब आप यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं तो पवित्र आत्मा आप में वास करता है और जब तक आप इस पृथ्वी पर हैं तब तक रहता है। यह अपनी मुट्ठी को दस्ताने में डालने जैसा है। दस्ताना तुम्हारे हाथ में है, लेकिन वह तुम्हारे हाथ से नहीं भरा है। दस्तानों को हाथ से 'भरने' से पहले प्रत्येक उंगली को दस्ताने की प्रत्येक उंगली में पूरी तरह से भरना चाहिए। ऐसा ही हमारे और परमेश्वर की आत्मा के साथ है। दस्ताने को उसका कार्य करने के लिए जिसके लिए वो बनाया गया है, उसे पूरी तरह से हाथ द्वारा भरे रहना होगा। परमेश्वर की सन्तान के लिए जिस तरह से परमेश्वर चाहता है कि हम जियें, इसका अर्थ है कि हमें पूरी तरह से उसकी आत्मा से भरे जाना लाज़मी है । हमें उसे अपने जीवन के हर हिस्से में पूरी पहुंच देनी चाहिए, उसके नियंत्रण में से कुछ भी आपने हाथ में नहीं लेना चाहिए।

उद्धार परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करने का एक विश्वास-निर्णय है। जिस व्यक्ति ने ऐसा किया है वह एक मसीही है और उसके पास अनन्त जीवन का आश्वासन है। फिर एक और फैसला लेना चाहिए। यह इस से संबंधित है कि व्यक्ति किसके लिए जीवन व्यतीत करेगा: यीशु के लिए या स्वयं के लिए । यह दूसरा निर्णय यीशु के शिष्य के रूप में जीने की प्रतिबद्धता है, कि हम जो कुछ भी करें उसमें उसके जैसा बनना है (मत्ती 16:24-26; लूका 9:23; लूका 14:25-33)। यीशु को जीवन में प्रथम रखने के लिए अक्सर इस प्रतिबद्धता को दुबारा बनाने की आवश्यकता होती है। मुक्ति मुफ्त और आसान है। हमें इसके लिए कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता है क्योंकि यीशु ने हमारे लिए इसकी कीमत चुकाई हुई है। हम केवल इसे प्राप्त करते हैं। लेकिन शिष्य बनना महंगा है, क्योंकि इसका अर्थ है यीशु के लिए जीने की प्रतिबद्धता बनाना, ना कि स्वयं के लिए । यह महंगा है क्योंकि हमें परमेश्वर की आज्ञाकारिता का जीवन जीने के लिए अपनी पापपूर्ण इच्छाओं का त्याग करना लाज़मी होता है । यह केवल तभी किया

जा सकता है जब हम पवित्र आत्मा को हमें भरने और नियंत्रित करने की अनुमति देते हैं। हमें उसकी अगुवाई और निर्देशन के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। मसीही जीवन जीने का यही एकमात्र तरीका है। उद्धार यीशु पर विश्वास करने से है, मसीही जीवन जीना भी उस पर विश्वास करने से है।

बाइबल हमें यह सुनिश्चित करने के लिए भी चेतावनी देती है कि हम आत्मा को 'शोकित' नहीं करते (इफिसियों 4:30)। इसका मतलब है कि हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना है जिससे आत्मा दुखी हो। पाप करना , अवज्ञा करना या इतना व्यस्त होना कि परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिए समय ही नहीं निकाल पाना अदि यह सब कर देता है । जब ऐसा होता है, आत्मा तो हमें नहीं छोड़ता, लेकिन यह पाप हमें उसके द्वारा पूरी तरह से नियंत्रित होने से रोकता है। इस प्रकार, हम उसकी उपस्थिति, शक्ति और सुरक्षा का आनंद नहीं लेते हैं जैसा कि हम इसकी विपरीत अवस्था में लेते ।

दूसरा खतरा जिसके लिए हमें सावधान रहने की चेतावनी दी गई है, वह है आत्मा को 'बुझाना' (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। परमेश्वर की आत्मा को बुझाना एक नली या पुआल लेने और उसे मोड़ने जैसा है, इस तरह एक गांठ इसके माध्यम से तरल पदार्थ के मुक्त प्रवाह को रोकती है। पाप या हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की अवज्ञा परमेश्वर की आत्मा को पूरी तरह से भरने और हमारे माध्यम से उसकी इच्छा अनुसार और हमारी आवश्यकता अनुसार बहने से रोकेगी ।

यूहन्ना 15:1-8 में यीशु इसी सिद्धांत के बारे में बात करता है। वह अपने शिष्यों से कहता है कि उन्हें उसमें 'बने रहना ' चाहिए। इसका मतलब है कि उन्हें उससे जुड़े रहना चाहिए, उस पर निर्भर रहना चाहिए और उसके करीब रहना चाहिए। फल उत्पन किये जाने का यही एकमत्र तरीका है। एक शाखा जो बेल से जुड़ी नहीं है, चाहे वह कितनी भी करीब क्यों न हो, फल नहीं देगी। पौलुस भी उसी सत्य को चित्रित करने के लिए सूली पर चढ़ाए जाने की समरूपता का उपयोग करता है (गलातियों 2:20)।

ड्वाइट एल. मूडी ने एक बार इस तरह के सिद्धांत का प्रदर्शन किया था: "मुझे बताओ," उसने अपने दर्शकों से कहा, "मैं अपने हाथ में रखे गिलास से हवा कैसे निकाल सकता हूं?" एक आदमी ने कहा, "इसे पंप से चूसो।" लेकिन सुसमाचार के प्रचारक ने उत्तर दिया, "यह एक खालीपन पैदा करेगा और इसे चकनाचूर कर देगा।" अंत में, कई सुझावों के बाद, मूडी ने एक घड़ा उठाया और चुपचाप गिलास में पानी भर दिया। "वहाँ," उन्होंने कहा, "अब सारी हवा हटा दी गई है।" फिर उन्होंने समझाया कि परमेश्वर की संतान के लिए विजय पापी आदतों को समाप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने से नहीं आती है, बल्कि पवित्र आत्मा को पूर्ण अधिकार लेने की अनुमति देने से मिलती है।

आत्मा से भरा जीवन जीने के लिए आपको पूरी तरह से और सूक्ष्मता से आश्वस्त होना चाहिए कि आप पवित्र आत्मा की उपस्थित

शक्ति के अलावा कुछ भी नहीं कर सकते हैं। आत्मा द्वारा नियंत्रित जीवन एक भारी अहसास के साथ शुरू होता है कि हम पवित्र आत्मा के सशक्तिकरण के अलावा पूरी तरह से असहाय और निराश हैं।

यदि कोई मसीही पवित्र जीवन नहीं जीता है और पवित्र आत्मा के द्वारा नहीं चलता है, तो वह अभी भी एक मसीही है। वे अपना उद्धार नहीं खोता है (अध्याय 4 देखें)। परमेश्वर के साथ उनकी संगति पाप से टूट जाती है लेकिन वे अभी भी एक मसीही है और परमेश्वर के परिवार में हैं। बाइबल कहती है कि वह एक आत्मिक व्यक्ति के बजाय एक शारीरिक हैं, वे अपने शरीर की इच्छाओं को अपने ऊपर हावी होने दे रहा है, ना कि परमेश्वर की आत्मा को (1 कुरिन्थियों 3:1-3)। परमेश्वर के साथ संगति में वापस आने का उपचार है अंगीकार करना (1 यूहन्ना 1:9) और पाप का पश्चाताप और परमेश्वर से उन्हें अपनी आत्मा से भरने के लिए कहना (इफिसियों 5:18)।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहियों को मसीही जीवन जीने का तरीका सीखने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

नए विश्वासियों की मदद करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप जो कुछ भी कहते और करते हैं उसमें ईश्वरीय जीवन जीने का एक उदाहरण स्थापित करें । उस जीवन को हृदय से आना है ना कि केवल बाहरी कर्मो से। उनहे इस पर जोर दें। सुनिश्चित करें कि आप या आपका चर्च जो कुछ भी करता है उसमें कोई पाखंड नहीं है।

उन्हें स्मरण दिलाएं कि हम सब अनुग्रह से जीते हैं, ना कि व्यवस्था से (रोमियों 6:14)। उसमें भी मिसाल कायम करें। उन्हें पवित्र आत्मा और उसके द्वारा नियंत्रित और अगुवाई किए जाने के महत्व के बारे में सिखाएं। त्रिएक या पवित्र आत्मा के बारे में उनके किसी भी प्रशन का उत्तर दें। वास्तव में, जब आप उन्हें बाइबल का अध्ययन करना सिखाते हैं तो आप उन हिस्सों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जो मसीही जीवन जीने के बारे में सिखाते हैं जैसे गलातियों 5:16, 25; इफिसियों 5:18 और गलातियों 2:20।

मसीही जीवन जीने में दूसरों को अनुशासित करना एक चलती रहने वाली जिम्मेदारी है। उनके लिए प्रार्थना करें। उन्हें प्रोत्साहित करें। उन्हें सुनने में समय व्यतीत करें कि वे क्या सीख रहे हैं। उनके पास मौजूद सवालों के जवाब दें। उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए सुझाव दें। चाहे कुछ भी हो उनसे प्यार करो (यूहन्ना 13:31-38)।

8. बिना ठोकर खाए चलना

मैं नीचे गिरे बिना जीवन में कैसे आगे बढ़ सकता हूं?

जब एक छोटा बच्चा चलना सीखना शुरू करता है तो वह बहुत सावधान रहता है। वह हर कदम पर फोकस करता है और धीरे-धीरे चलता है। संतुलन खोना और गिरना अभी भी आसान है। जैसे-जैसे वह बड़ा और मजबूत होता जाता है और अधिक अनुभवी होता जाता है, उसके गिरने का खतरा रहता है लेकिन उतना नहीं। ठोकर लगने का और गिरने का खतरा हमेशा बना रहेगा, लेकिन समय और सतर्कता कई गिरावटों को रोकने में मदद कर सकती है।

नए मसीहीयों का भी यही सच है। एक नए विश्वासी के लिए फँस जाना आसान है और हर चीज़ के लिए पाप करना इतना नया है। आध्यात्मिक संतुलन विकसित करने, परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करने और हर गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करने में समय लगता है। फिर भी, ठोकर लगने का और गिरने का खतरा हमेशा बना रहता है, भले ही कोई व्यक्ति कितने समय से मसीही रहा हो। हमारे मसीही जीवन में बिना ठोकर खाए चलने की कुंजी यह है कि हम अपनी निगाहें यीशु पर रखें।

अपने आप को एक सड़क पर चलते हुए दिखने का चित्र बनाये । यीशू दूर एक सिरे पे है और आप वहीं जा रहे हैं। आपका लक्ष्य यीशु की तरह बनना है। सड़क के दोनों ओर जहाँ आप चलते हैं दुकाने है , ऐसी गतिविधियाँ हैं जिन से ध्यान भंग होता हैं - और कुछ भी जो आपकी आँखों को यीशु से दूर कर देता है और आपकी अपनी दिशा को धीरे से थोड़ा बदल देता है। जब आप ऐसा हम करते हैं तो आप ठोकर खाते हैं और गिरते हैं।

जो चीजें हमें विचलित करती हैं, वे दुनिया के आकर्षण हैं। शैतान हमारे रास्ते में भी प्रलोभन डालता है। तब, हमारा पापी स्वभाव भी हमारे लिए परमेश्वर के मार्गों से विचलित होने को स्वाभाविक बनाता है। हमारी सामान्य झुकाव अपनी जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने और खुद के लिए जीने का हो जाता

है। हमारे अधिकांश पाप इसलिए आते हैं क्योंकि हम एक वैध आवश्यकता को नाजायज तरीके से पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।

शैतान हमें धोखा देने के लिए झूठ का उपयोग करता है (प्रकाशितवाक्य 12:9) और हम सब उसके बहकावे में आने के लिए बहुत असान परिंदे साबित हो जाते हैं । जब तक हम अपने आप को अपने चेहरे पर सपाट नहीं पाते, तब तक आमतौर पर हमें पता ही नहीं चलता कि वे झूठ और छल हैं।

प्रलोभन आपको याद रखना चाहिए कि पाप की परीक्षा में पड़ना पाप करने के समान नहीं है। यीशु की परीक्षा हुई (मरकुस 1:13; लूका 4:1-13), परन्तु उसने कभी पाप नहीं किया (इब्रानियों 4:15)। सिर्फ इसलिए कि आप परीक्षा में हैं इसका मतलब यह नहीं है कि आपने पाप किया है। आपको यह स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है कि आपकी परीक्षा ली गयी है और परमेश्वर से आपको क्षमा करने के लिए कहना चाहिए । साथ ही, हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें कभी भी पाप के लिए परीक्षा में नहीं डालता (याकूब 1:13-15)।

प्रलोभन एक सड़क में "Y" के आने जैसा है। आपके पास किसी भी दिशा में जाने का विकल्प है, दाएं या बाएं। गलत तरीका है जिस तरह से शैतान हमें परीक्षा देता है। यह पाप का मार्ग है। परमेश्वर के प्रावधान पर उसके अपने तरीके और समय पर भरोसा करने के बजाय, हम अभी अपने तरीके से उस आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास करते हैं। सड़क में दूसरा रास्ता परीक्षण कर रहा है। परमेश्वर चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें और उसके तरीके से जिएं, ताकि हम उसे अपने जीवन में कार्य करते हुए देख सकें।

हमारे लिए शैतान का सबसे बड़ा झूठ यह है कि प्रलोभन इतना मंनमोहिना है कि हमें उसके आगे झुकना पड़ता है। हम अपनी मदद नहीं कर सकते। हम विरोध नहीं कर सकते। बाइबल कहती है कि ऐसा कभी नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 10:13)। जब हम पाप करते हैं, तो परमेश्वर का प्रावधान यह है कि हम उसके सामने इसका अंगीकार करें (1 यूहन्ना 1:9)। यदि हम अपने ज्ञात पाप को स्वीकार करते हैं, तो वह हमें हमारे सभी पापों के लिए क्षमा करता है, यहां तक कि उन पापों के लिए भी जिन्हें हम नहीं जानते हैं। यह उचित से कहीं अधिक है! हालाँकि, हमारा हिस्सा पाप को 'स्वीकार' करना है। इसका मतलब है कि 'परमेश्वर से सहमत', 'पाप के बारे में वही बात कहो जो परमेश्वर कहता हैं।' जब आप पहचानते हैं कि आपका पाप आपकी गलती है, किसी और की गलती नहीं है, और जब आप खुद उस दोष को लेते हैं, तो आप अपने पाप को स्वीकार कर रहे हैं। आप अपने पाप को वैसे ही देख रहे हैं जैसे परमेश्वर देखता है - इतना बुरा कि यीशु को इसके लिए मरना पड़ा। यदि यही एकमात्र पाप होता जो किसी ने किया होता, तो भी यीशु को क्रूस पर जाना पड़ता । यह कितना भयानक पाप है। कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर इससे नफरत करते हैं!

दुख-तकलीफ के क्षेत्र से गहरा संबंध है, प्रलोबन के क्षेत्र का है, क्योंकि यह अक्सर हमें ठोकर खाने और किसी भी चीज की तुलना में जल्दी गिरने का कारण बनता है। उद्धार से पहले लोगों को लगता है कि जीवन में सब कुछ अच्छा होना चाहिए और अगर ऐसा नहीं होता है तो यह सिर्फ दुर्भाग्य है। वे परमेश्वर को हर चीज पर नियंत्रण में नहीं देखते हैं और जो कुछ भी होता है उसके लिए एक योजना और उद्देश्य रखते हैं। वे परिपक्वता लाने में खिंचाव और पीड़ा की भूमिका की सराहना नहीं करते हैं। जीवन में जो कुछ भी परमेश्वर हमारे पास आने देता है, उसे प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है। यदि हम नहीं करते हैं, यदि हम उसे या दूसरों को दोष देते हैं या यदि हम चीजों को अपने हाथों में लेते हैं, तो हम ठोकर खाकर गिर गए हैं क्योंकि हमने परमेश्वर और उसके सर्वोच्च प्रेम पर भरोसा करना बंद कर दिया है।

जीवन दुख और पीड़ा से भरा है, इसका अधिकांश भाग अनुचित और अवांछनीय है। ये बातें क्यों होती हैं? मेरे पास उस प्रशन का केवल एक ही उत्तर है: "मैं नहीं जानता कि परमेश्वर इन चीजों को होने की अनुमति क्यों देता है, लेकिन वह ऐसा करता है।" मैं बहुत सी बातें नहीं जानता। मुझे नहीं पता कि बच्चे क्यों मरते हैं, माताएं कैंसर से क्यों पीड़ित होती हैं, किशोर अपनी कारों को पेड़ों से क्यों टकराते हैं। मैं बहुत सी बातें नहीं जानता। लेकिन सिर्फ इसलिए कि मुझे जवाब नहीं पता है इसका मतलब यह नहीं है कि ऐसा नहीं होता है।

हम सभी जानते हैं कि बुरी चीजें होती हैं। स्वयं यीशु के पास इन बातों का कोई आसान स्पष्टीकरण नहीं था। जब सिलोम में एक मीनार के ढहने का जिक्र किया गया जिसमें 18 लोग मारे गए थे (लूका 13:4), तो यीशु ने इस बात को बताया कि ये लोग बचे हुए लोगों की तुलना में कोई दोषी नहीं थे। बाद में, अपने मित्र लाजर की मृत्यु का सामना करने पर यीशु रोया।

मुझे नहीं पता कि दुख **क्यों** आता है, लेकिन मुझे पता है कि परमेश्वर का इस सब पर आपने सप्रभुत्वता में इन सब चीजो कर काबिज है और मैं यह भी जानता हूं कि वह जो करता है वह आखिर एक अच्छे कारण के लिए होता है। परिभाषा के अनुसार, परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और हर चीज पर उसका नियंत्रण है। हम जानते हैं कि परमेश्वर करुणा और प्रेम से भरा हुया हैं। उसने स्वर्ग छोड़कर और हमारे साथ पृथ्वी पर आकर रहने के लिए अपने प्रेम को सिद्ध किया है। ताकि वह अंततः हमारे पापों का भुगतान करने के लिए क्रूस पर मर सके और हमारे लिए स्वर्ग में परमेश्वर के साथ अनंत काल तक रहने का प्रावधान बना सके। परमेश्वर जो कुछ करता है उसके पीछे उसका प्रेम एक मार्गदर्शक शक्ति है। यह जानते हुए कि परमेश्वर का सब में नियंत्रण है और वह जो कुछ भी करता है वह प्रेम से प्रेरित है, वह ऐसी चट्टान है जिस पर हमें निर्भर हो जाना चाहिए जब हमारे पास जीवन में आने वाले 'क्यों' प्रशनो के उत्तर नहीं होते हैं।

जब चीजें अनुचित लगती हैं तो परमेश्वर को दोष ना दें। हम परमेश्वर के व्यक्तित्व और चरित्र का मूल्यांकन उसके कार्यों से करने की कोशिश नहीं कर सकते क्योंकि उसने स्वर्ग छोड़कर, एक आदमी बनकर, पृथ्वी पर रहकर, फिर हर पाप के लिए दंड लेने के लिए अपने चरित्र और प्रेम को साबित किया है, जो हम कभी भी किये होंगे । यह हमारे लिए उसके प्रेम को संदेह की छाया से परे साबित करता है। यदि ऐसा नहीं होता तो हम सभी नरक में अनंत काल के लिए होते। तो, नरक से हट कर जो कुछ भी है उसकी कृपा और दया है। ऐसा क्यों लगता है कि वह दूसरों की तुलना में कुछ पर अधिक दया दिखाता है, इसका न्याय करना हमारा काम नहीं है। इसलिए, परमेश्वर के चरित्र को उसके कार्यों के द्वारा समझने की कोशिश ना करें (मत्ती 5:45ब)। इसके बजाय उसके कार्यों को उसके चरित्र से समझें। उसका चरित्र सिद्ध है, और एक दिन उसके कार्य भी होंगे। जब तक हम स्वर्ग तक नहीं पहुंच जाते और सभी चीजों को नहीं जान लेते, तब तक हमें केवल उस पर भरोसा करना चाहिए और उसे दोष नहीं देना चाहिए।

परमेश्वर हमारे प्रति जवाबदेह नहीं है। हम उसके न्याय में खड़े नहीं रह सकते। छोटे बच्चों को कई चीजें अनुचित लगती हैं, लेकिन उन्हें अपने माता-पिता पर भरोसा करना चाहिए। एक डॉक्टर से एक इंजेक्शन लगवाना, एक बहुत ही चमकदार चाकू ले जाना, एक बच्चे को बहुत सी बातों से लगता हैं कि माता-पिता उन्हें प्यार नहीं करते हैं, लेकिन एक बच्चे के पास वास्तव में यह देखने का दृष्टिकोण ही नहीं है कि क्या हो रहा है और हम भी जीवन को परमेश्वर के दृष्टिकोण से नहीं देखते ।

हम जानते हैं कि पीड़ा और दुख संसार में पाप के प्रवेश करने का परिणाम है (उत्पत्ति 3:17-18)। अविश्वासियों के लिए यह उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता दिखा सकता है। विश्वासियों के लिए परमेश्वर एक अलग कारण के लिए दुख की अनुमति देता है। हम जानते हैं कि यह कभी दंड नहीं है

क्योंकि यीशु ने हमारी सजा ली और उसके बच्चों के लिए अब कोई दंड नहीं है (रोमियों 8:1)। परमेश्वर ने स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं को अय्यूब की विश्वासयोग्यता दिखाने के लिए उसको बहुत भावनात्मक और शारीरिक कष्टों से गुजरने की अनुमति दी (अय्यूब 1-2)। होशे को एक विश्वासघाती पत्नी से शादी का सामना करना पड़ा, केवल यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर अपने विश्वासघाती लोगों के साथ रहकर कैसे महसूस कर रहा था। दुख/ पीड़ा आज्ञाकारिता सिखा सकती है, जैसे यीशु मामले में (इब्रानियों 2:10; 5:8)। यह हमें परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर होने के लिए प्रेरित करती है (2 कुरिन्थियों 12:9) और हमें यीशु के करीब लाती है, हमें उसके जैसा बनाती है (1 पतरस 1:7-8; यशायाह 49:2)। जैसे परमेश्वर कठिन समय में हमारी सहायता करता है, उसकी सामर्थ दूसरों को दिखाई देती है (यूहन्ना 3:16; 16:33; 1 पतरस 1:13)। जब हम परमेश्वर के अनुग्रह को प्रतिक्रिया देते हैं जो हमें दुखों के माध्यम से मदद करता है, उसी समय पवित्र आत्मा का फल भी दिखाया देता है (गलातियों 5:22-23)। इसके अतिरिक्त, हमारी पीड़ा हमें दूसरों को समझने और उनकी सहायता करने में सहायता करती है जब वे परीक्षाओं से गुजरते हैं (2 कुरिन्थियों 1:3-4)।

तो आपने जीवन में दर्द का सामना करते समय हमें कैसे **प्रतिक्रिया** देनी चाहिए? सबसे पहले, सुनिश्चित करें कि आप परमेश्वर और उसकी इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता में जी रहे हैं, इसलिए दुख कोई आपके पाप का परिणाम नहीं है (1 पतरस 4:19)। यह जान लें कि परमेश्वर केवल वही करता है जो लम्बी अविधि में हमारे लिए सर्वोत्तम है (रोमियों 8:28; यूहन्ना 15:2)। इसके कारणों को अभी समझने की उम्मीद ना करें परन्तु याद रखें कि एक दिन आप जरूर समझेंगे (यूहन्ना 13:7)। परमेश्वर पर भरोसा रखें और उसके करीब आएं (इब्रानियों 13:5) और लज्जित ना हों जैसे कि यह आपकी अपनी गलती है (1 पतरस 4:16)। धीरज धरते हुए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर टिके रहो: भजन संहिता 126:5; यशायाह 66:13; रोमियों 8:28; याकूब 1:3; 1 कुरिन्थियों 10:13; भजन संहिता 91:4, 14-16)।

याद रखें, उसके दिल में हमारे सर्वोत्तम हित हैं। वह बड़ी तस्वीर देखता है। यह एक पहाड़ी सड़क के ऊपर अपना विमान उड़ाते हुए आदमी की कहानी है। उसने नीचे देखा तो एक कार अर्ध-ट्रक से आगे बड़ने करने की कोशिश कर रही थी। हालांकि, कार में सवार व्यक्ति सड़क में गड्ढे और मोड़ के कारण ट्रक के आसपास से गुजरते हुए नहीं देख सका। पायलट देख सकता था कि उस क्षेत्र में कोई अन्य वाहन नहीं थे, और कार को ट्रक से गुजरने में कोई खतरा नहीं होगा। वह बस इतना कर सकता था कि वह वहीं बैठ जाए और इस तथ्य पर चिंतन करे कि वह अपने सुविधाजनक स्थान से वह देख सकता था जो कार में सवार व्यक्ति नहीं देख सकता था। उसकी एक बड़ी तस्वीर थी। परमेशवर का भी ऐसा ही है। वह बड़ी तस्वीर देखता है, जो हम नहीं देखते हैं।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहियों को बिना ठोकर खाए चलने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

उन्हें परमेश्वर के वचन से सिखाने में समय व्यतीत करें कि प्रलोभन का विरोध करने का क्या अर्थ है। प्रलोभन को कैसे पहचानें और इसे कैसे दूर किया जाए, यह सीखने में उनकी मदद करें। उन्हें सिखाएं कि प्रलोभन पाप नहीं है। जब तक हम प्रलोभन के आगे झुकते नहीं हैं, तब तक हमें परीक्षा में पड़ने को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है। प्रलोभन पर काबू पाने के बारे में आप ने जो सीखा है वह साझा करें। 1 यूहन्ना 1:9 को समझने में उनकी सहायता करें और साथ साथ कि यह उनके जीवन पर कैसे लागू होता है । इन मुद्दों के विषय में उनके साथ और उनके लिए प्रार्थना करें।

दुख के पूरे मुद्दे के बारे में उनसे बात करें। जरूरी नहीं कि आपके पास सारे जवाब हों - किसी के पास भी नहीं होते । परमेश्वर की संप्रभुता और प्रेम पर ध्यान केंद्रित रखने में उनकी सहायता करें, भले ही हम हमेशा यह नहीं समझते कि वह क्या करता है (या नहीं करता है)। याद रखें कि हमारे लिए परमेश्वर

का प्रेम और बलिदान किसी भी चीज़ से बड़कर है, इसलिए हम जानते हैं कि वह अच्छा और प्यार करने वाला है। जब तक हम स्वर्ग तक नहीं पहुंच जाते, तब तक हमें कुछ बातों से उस पर भरोसा करना होगा, तब हम देखेंगे कि वह सबसे अच्छी तरह जानता है।

9. धुलाई और पिटाई

क्या होता है जब मैं पाप करता हूँ?

जब एक बच्चा पैदा होता है तो वह साफ और खाली होता है, लेकिन जैसे ही वह दुनिया के सामने आता है वह गंदा और दूषित हो जाता है। इसे धोने और साफ करने की जरूरत है। जब हम आध्यात्मिक रूप से नए सिरे से जन्म लेते हैं तो हम शुद्ध और पापरहित होते हैं, लेकिन दुनिया के परदुषण और भीतर के पाप को हमें प्रदूषित करने में देर नहीं लगती। जैसे-जैसे हम आध्यात्मिक रूप से बढ़ते हैं, हमें भी नियमित रूप से शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है।

पाप वास्तविक में है - शुरू से ही, मनुष्य ने पाप को नकारने की कोशिश की है। आदम और हव्वा, कैन, और सभी ने तब से पापों के परिणामों से बाहर निकलने का रास्ता खोजने में लगे रहें हैं । आज कोई अलग बात नहीं है। पाप को स्वीकार करने और बदलने के बजाय, मनुष्य अपने पाप में रहना पसंद करेगा और अपने आप को यह विश्वास दिलाकर अपने अपराध को नकार देगा कि कोई पाप ही नहीं है। ऐसा करने के लिए मनुष्य को इस विचार से छुटकारा पाना होगा कि परमेश्वर, या किसी उच्च अधिकारी के पास पूर्ण मानक हैं , जिनको जब मनुष्य तोड़ेगा , तो पाप होगा। इस प्रकार, मनुष्य विकासवाद जैसे दर्शन की ओर भागता हैं, जो उन्हें किसी भी उच्च अधिकारी के प्रति जवाबदेही से इनकार करने की अनुमति देता है और इस प्रकार पाप का अस्तित्व होता है । यदि कोई परमेश्वर नहीं है, तो मनुष्य परम अधिकारी है, कोई पूर्ण रूप से सही या गलत नहीं है, और कुछ मान्य है। परन्तु यह वह नहीं है जो बाइबल कहती है (रोमियों 3:23; 6:23)। इसके अलावा, यह व्यावहारिकता में काम नहीं करता है। अपराधबोध और तनाव के लक्षणों को छिपाने के लिए दवाएं, आत्महत्या, परामर्श, अपराध - ये सभी भयानक दर से बढ़ रहे हैं। जो लोग कहते हैं कि 'गलत' सिर्फ एक सीखी हुई प्रतिक्रिया है या एक अपूर्ण संस्कृति के लिए जबरन प्रतिक्रिया है, वे गलत हैं। हम पहले से कहीं अधिक विकासशील समाज में रहते हैं, फिर भी ये चीजें ना केवल बनी रहती हैं बल्कि बढ़ती जाती हैं। पाप सीखा नहीं जाता - यह भीतर से आता है। बच्चे स्वार्थी और आत्मकेंद्रित पैदा होते हैं; उन्हें किसी से यह सीखने की जरूरत नहीं है। उन्हें यह सीखने की जरूरत है कि यह कैसे नहीं होना चाहिए। समाधान क्या है? सबसे पहले, समस्या को सही ढंग से समझें।

पाप परिभाषित- कुछ भी है जो परमेश्वर के चरित्र के विपरीत हो वह पाप है । जबकि एक पाप एक फिसलन या गलती से मकसद के रूप में भिन होता है, सभी पापों को गलतियों के रूप में खारिज करना कार्य की वास्तविकता में पाप को स्वीकार करने से इंकार करना होता है। यह खतरनाक जहर को हल्के से अप्रिय पदार्थ के रूप में गलत लेबल करने जैसा है। आपने आप की तुलना यीशु के साथ करने के अलावा पाप को नहीं देखा जा सकता है। उसका आदर्श मानक हमारा लक्ष्य है। कुछ भी जो उसके होने ,सोचने , कहने, करने या नहीं करने के विपरीत है, वह पाप है।

पाप की उत्पत्ति- पाप की शुरुआत शैतान के परमेश्वर के विरूद्ध घमण्डी विद्रोह के साथ हुई (यहेजकेल 28:14-15)। परमेश्वर किसी भी तरह से पाप के लिए जिम्मेदार नहीं है। उसने शैतान को एक स्वतंत्र इच्छा दी, लेकिन उसका पाप से कोई लेना-देना नहीं था। अगर मैं अपने बेटे को कहीं जाने के लिए कार

की चाबी दे दूं और वह सड़क से हट जाए, तो क्या उसे गाड़ी चलाने देना मेरी गलती है? नहीं, वह 100% जिम्मेदार है। पाप के लिए जिम्मेदार शैतान है , परमेश्वर नहीं है। जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तब शैतान इसे ईडन में पृथ्वी पर लाया।

पाप का अपराध बाइबल हमें बताती है कि हम तीन क्षेत्रों में पाप के दोषी हैं:

आरोपित पाप का अर्थ है कि हम आदम के साथ उसके पाप के लिए दोषी हैं (रोमियों 5:12)। मानव जाति के प्रतिनिधि के रूप में, हम सभी उसके अपराध को साझा करते हैं। हम भी वही करते यदि उसकी जगह हम होते।

विरासत में मिला पाप पाप स्वभाव का वर्णन करता है जो माता-पिता से बच्चे को मिलता है (भजन संहिता 51:5)। हम सभी पाप करने की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ जन्म लेते हैं। प्रत्येक बच्चा स्वाभाविक रूप से स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होता है। इस वजह से हम 'पूरी तरह से भ्रष्ट' हो गए हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम हमेशा उतना ही पाप करते हैं जितना हम हर क्षेत्र में कर सकते हैं। मानवीय रूप से कहें तो, मनुष्य अच्छी चीजें कर सकता है और करता भी है और अक्सर गलत पर सही को चुनता है। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए या उसे प्रभावित करने के लिए कुछ नहीं कर सकते (यशायाह 64:6) । यदि हमारे धर्म के काम उसकी दृष्टि में गंदे हैं (यशायाह 64:6), तो हमारे पाप कैसे होंगे? विरासत में मिले पाप का मतलब है कि हमारे पास पाप करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यह आपने आप से ही आ जाता है। इसका अर्थ है कि हमारा हर कार्य और विचार परमेश्वर के लिए दूषित और अस्वीकारयोग्य है। दूषित पाइपों के माध्यम से साफ पानी चलाने से पाइप साफ नहीं होते हैं इससे पानी खराब हो जाता है। इस प्रकार, हम जो कुछ भी करते हैं वह हमारे विरासत में मिले पाप स्वभाव के कारण स्वार्थ और पापीपन के द्वारा कलंकित होता है।

व्यक्तिगत पाप उन पापों के कार्यों को संदर्भित करता है जो हम प्रतिदिन करते हैं: गलत विचार, कार्य या उद्देश्य। यह उन अच्छी चीजों को भी संदर्भित करता है जो हमें करना चाहिए लेकिन नहीं करते । हमारे पापपूर्ण कार्य हमारी पापीपन के पहाड़ का सिरा हैं, लेकिन सबसे अधिक दिखाई देने वाला भाग है।

इस प्रकार, हम तीन गुना दोषी हैं - तीन हमले और आप बाहर हैं! इनमें से कोई भी, वास्तव में पाप का कोई एक व्यक्तिगत कार्य (काम, विचार, मकसद, उच्च विपरीतता) हमें हमेशा के लिए बर्बाद करने के लिए पर्याप्त होगा। एक पवित्र परमेश्वर अपनी उपस्थिति में किसी भी पाप की अनुमति नहीं दे सकता। तो पाप का उपाय क्या है?

विशवासी के लिए पाप का समाधान एक बार जब परमेश्वर की मुक्ति का मुफ्त उपहार स्वीकार कर लिया जाता है, तो हम कभी भी उद्धार को नहीं खो सकते हैं। पाप पापी और परमेश्वर के बीच अलगाव/फासले का कारण बनता है, इसे स्वीकार किया जाना चाहिए (पाप को पहचानें और स्वीकार करें - 1 यूहन्ना 1:9)। पश्चाताप; पाप से फिरने का निर्णय लें। तब इसे क्षमा कर दिया जाता है और परमेश्वर के साथ संगति बहाल हो जाती है। इस जीवन में सभी पापों से बचना असंभव है, लेकिन यह अभी भी हमारा लक्ष्य है और हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। यह केवल तब ही हो सकता है जब हम परमेश्वर के करीब रहते हैं, हम पाप पर विजय पा सकते हैं।

एक पायलट एक दिन अपने छोटे से विमान को उड़ा रहा था, तभी उसने एक शोर सुना, जिसे उसने चूहे के कुतरने के रूप में पहचाना। यह सोचकर कि उसके नुकीले दांत क्या काट रहे हैं, उसे अचानक डर के मारे एहसास हुआ कि यह एक बिजली की तार हो सकती है। फिर वह विमान से नियंत्रण खो देगा।

तब उसे याद आया कि कृंतक(चुहे,गिलहरी जैसे जीव) अधिक ऊंचाई पर जीवित नहीं रह सकते। तुरंत ही वह चढ़ाई करने लगा जब तक कि आखिरकार उसे अपना ऑक्सीजन मास्क नहीं लगाना पड़ा। जल्द ही कुतरने की आवाज बंद हो गई, और जब वह उतरा तो उसने चूहा मृत पाया। परमेश्वर के करीब रहना ही हमारे जीवन में पाप पर विजय पाने का एकमात्र तरीका है। अपने शत्रु (पाप) को जानो लेकिन उससे भी अधिक जानो कि विजय कैसे प्राप्त करें (यीशु)।

पाप के लिए अनुशासन विश्वासी के लिए कोई न्याय नहीं है (रोमियों 8:1) परन्तु परमेश्वर हमें अनुशासित करता है (इब्रानियों 12:3-11)। न्याय हमें दंड देने के लिए है, हमें हमारे द्वारा किए गए पापों के लिए पीड़ित करने के लिए है। अनुशासन एक सकारात्मक उद्देश्य के लिए है, हमें परिपक्व बनाने के लिए ताकि हम फिर से वही गलती ना करें। न्याय पिछले पाप को देखता है?, भविष्य में सुधार के लिए अनुशासन। माता-पिता को हमेशा अपने बच्चों को अनुशासित करना चाहिए; उन्हें कभी दंडित ना करें। हमारी जेल व्यवस्था न्याय की तस्वीर है। एक चरवाहा जो भेड़ की टांग तोड़ता है, ताकि भेड़ें भागती ना रहे, लेकिन उसका चरवाहे पर भरोसा करना सीख जाना जैसे वह उसको इधर उधर घुमाता है , वह अनुशासन की एक तस्वीर है। जबकि पाप को परमेश्वर द्वारा क्षमा किया जा सकता है, वहाँ अक्सर पाप के पार्थिव परिणाम होते हैं; विश्वास की हानि, शारीरिक चोट, जुर्माना, जेल का समय, गर्भाधारण , आदि।

अविश्वासी के लिए पाप का समाधान उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करना ही एकमात्र समाधान है: क्रूस पर यीशु के कार्य को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करना (यूहन्ना 3:16)। वहाँ उसने हमारे सभी पापों के लिए दंड का भुगतान किया। उसने क्रूस पर वह भोगा जो हम नरक में अनंत काल तक द पाप के लिए भुगतते रहते। क्योंकि वह सिद्ध था, वह पाप रहित था। क्योंकि वह इंसान था , वह हमारी जगह ले सकते था । क्योंकि वह परमेश्वर है, वह एक ही बार में सभी लोगों के लिए कष्ट सह सकता था क्योंकि उसके पास कष्ट सहने की क्षमताअधिक थी।

शिष्यत्व: मैं नए मासीहीयों की पाप को समझने और अंगीकार करने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

जिन्हें आप इस अध्याय में की गई बातों के बारे दरुस्त कर रहे हैं, उन्हें सिखाएं। उन्हें पाप की गंभीरता और पवित्र जीवन जीने के महत्व को देखने में मदद करें। सुनिश्चित करें कि वे जानते हैं कि पाप आपने दिल में शुरू होता है, ना कि केवल बाहरी कार्यों में। उन्हें आश्वासन दें कि यदि वे अपने पापों को स्वीकार करते हैं और पश्चाताप करते हैं तो परमेश्वर उन्हें क्षमा कर देंगा और वह अपने साथ उनकी संगति बहाल कर देगा , लेकिन पाप को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए । असफल होने पर उन्हें प्रोत्साहित करें और उन विशिष्ट पापों पर विजय प्राप्त करने के तरीके खोजने में उनकी सहायता करें जिनके साथ वह सबसे अधिक संघर्ष करते हैं।

10. चोट से सुरक्षा

मैं शैतान के हमलों से कैसे सुरक्षित रह सकता हूँ?

बच्चे असहाय और रक्षाहीन होते हैं। उन्हें खतरे से और नुकसान पहुंचाने वालों से बचाने के लिए वयस्कों की जरूरत होती है। परमेश्वर स्वयं हमारी रक्षा करता है, लेकिन वह अक्सर अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए स्वर्गदूतों का उपयोग करता है।

स्वर्गदूतों का निर्माण परमेश्वर ने संसार के निर्माण से पहले स्वर्गदूतों को बनाया (अय्यूब 38:6-7), उसी समय उसने हम में से प्रत्येक को बनाने की योजना बनाई (और वह पहले से ही हमें उसके दिमाग में जानता था)। उसने स्वर्गदूतों को एक "अनगिनत" संख्या को सृजा (इब्रानियों 12:22; प्रकाशितवाक्य 5:11)। तब से ना तो कोई फरिश्ता बनाया गया है और ना ही नष्ट किया गया है। संख्या बिल्कुल वैसी ही है। हम इसके बारे में कैसे जानते हैं? मरने वाले लोग फरिश्ता नहीं बनते। अनंत काल में हमारे पास स्वर्गदूतों से बड़ा रुतबा होगा (1 कुरिन्थियों 6:3)।

स्वर्गदूतों का व्यक्तित्व परमेश्वर ने अपनी छवि में स्वर्गदूतों और मनुष्यों को बनाया है कि हम सभी के पास तर्कसंगत रूप से सोचने और तर्क करने का मन है (1 पतरस 1:12), भावनाओं को महसूस करने और अनुभव करने के लिए (लूका 2:13), और हमारे पास नियति चुनने के लिए एक स्वतंत्र इच्छा है। (यहूदा 6)। सृष्टि के तुरंत बाद, शीर्ष स्वर्गदूत (लूसिफर, जिसे अब शैतान कहा जाता है , यहेजकेल 28:12-15) ने परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करने के लिए अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग किया (2 थिस्सलुनीकियों 2:4) और परिणामस्वरूप उसे स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया (यशायाह 14:12- 15, यहेजकेल 28:15-17; लूका 10:18)। तब स्वर्गदूतों के पास शैतान या परमेश्वर का अनुसरण करने का एक बार का ही विकल्प था। लगभग एक तिहाई (प्रकाशितवाक्य 12:4) ने अपने विद्रोह में शैतान का अनुसरण किया और अपना पहला स्थान खो दिया। वे अब दानव कहलाते हैं। यह एकमात्र समय था जब स्वर्गदूतों को अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने का अवसर मिला था। वे अब 'बंद' हो गए हैं और अपनी स्थिति नहीं बदल सकते हैं (स्वर्गदूत दानव बनने के लिए नहीं गिर सकते हैं, ना ही राक्षस स्वर्गदूत बनने के लिए ऊपर जा सकते हैं)। स्वर्गदूत नहीं जानते कि उनके जीवन में परमेश्वर की कृपा का अनुभव करना क्या होता है क्योंकि वे कभी पाप से संघर्ष नहीं करते हैं। इसलिए जब हम बात करते और जीते हैं तो वे हमें देखने में बहुत दिलचस्पी रखते हैं (1 पतरस 1:12)। जैसे हमारा जीवन में परमेश्वर की कृपा और प्रेम दिखते हैं और काम करता है इस तरह से वे व्यक्तिगत रूप से अनुभव नहीं करते हैं। वे हम पर परमेश्वर की दया के लिए प्रभावित है।

स्वर्गदूतों की प्रकृति स्वर्गदूत आत्मा - प्राणी हैं। वे परमेश्वर की तरह नहीं हैं, क्योंकि वे सब कुछ नहीं जानते हैं। वे एक समय में एक ही स्थान पर रहने तक सीमित हैं। वे सर्शक्तिमान या सर्वज्ञानी नहीं हैं (भजन सहिता 103:20;

2 थिस्सलुनीकियों 1:7)। उनके पास कोई भौतिक शरीर नहीं है, लेकिन कभी-कभी वे एक व्यक्ति के रूप में प्रकट होते हैं (इब्रानियों 13:1)। ऐसा परमेश्वर के लोगों की ज़रूरत में मदद करने के लिए होता है। कुछ के पास शक्ति और महिमा दिखाने के लिए पंख होते हैं, लेकिन सभी के पास पंख नहीं होते। स्वर्गदूतों को हमेशा पुर्शिलंग में ही जाना जाता जाता है। इनके लिए सदैव पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक स्वर्गदूत अलग है, जैसे लोग अलग हैं: परमेश्वर की सेवा में विभिन्न क्षमताएं और कार्य, विभिन्न लक्षण और कौशल और विभिन्न व्यक्तित्व। स्वर्गदूत प्रजनन नहीं करते और ना ही कर सकते हैं (मत्ती 22:30; मरकुस 12:25), हालाँकि ऐसा प्रतीत होता है कि नूह के दिनों में जलप्रलय से पहले राक्षसों ने किसी तरह महिलाओं को गर्भवती कर दिया था (उत्पत्ति 6:1-4)। स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ कभी नहीं मरते (लूका 20:36)।

स्वर्गदूतों का संगठन स्वर्गदूतों (और राक्षसों का संगठन) को सेना की तरह से जनरलों, कर्नलों, लेफ्टिनेंटों, हवलदारों, निजी लोगों आदि के साथ संगठित किया जाता है। उन्हें महादूत, राजकुमार, शासक, सेराफिम, आदि कहा जाता है। (रोमियों 8:38; इफिसियों) 3:10; 6:12; कर्नल 1:16; 2:5)। कुछ

लोगों के पास भौगोलिक क्षेत्रों पर अगुवाई की जिम्मेदारी है, अन्य के पास लोगों के समूहों पर अधिकार और जिमेदारी है (जैसा कि मीकयेल इज़राइल की देखभाल करने वाला महादूत प्रतीत होता है)।

स्वर्गदूतों के कर्तव्य 'स्वर्गदूतों ' के लिए ग्रीक शब्द ('एंजेलोस')का अर्थ है "संदेश-वाहक ।" दरअसल, यह शब्द हमारे बाइबल में सिर्फ लिप्यंतरित है (अंग्रेज़ी अक्षर ग्रीक अक्षरों की जगह लेते हैं लेकिन शब्द वही है)। यदि इसका अनुवाद किया जाता तो हमारे पास "दूत" शब्द हर बार 'संदेश-वाहक ' ही होता। वह मूल रूप से उनका कार्य है - परमेश्वर के दूत (सेवक)। वे परमेश्वर के सेवक हैं जो परमेश्वर के लोगों की सहायता करते हैं (इब्रानियों 1:14)। अलग-अलग स्वर्गदूत बच्चों और विश्वासियों (प्रेरितों के काम 12:7-11) को विशेष तरीकों से उनकी मदद करने के लिए नियुक्त किए गए प्रतीत होते हैं। परमेश्वर अपनी संप्रभु शक्ति का उपयोग दुर्घटना को रोकने, बच्चे को सुरक्षित रूप से गिरने और चोट ना पहुँचाने, खोई हुई चाबियों का एक सेट, या इसी तरह के कार्यों को करने के लिए कर सकता है, लेकिन आमतौर पर उसके स्वर्गदूत ऐसे कार्य करते हैं। वे परमेश्वर के लोगों की रक्षा करते हैं (भजन संहिता 34:7; 91:12; मत्ती 18:10)। वे प्रार्थनाओं के उत्तर लाते हैं (प्रेरितों के काम 12:7), हालाँकि कभी-कभी दुष्टात्माएँ उनका विरोध करती हैं और उत्तर देर से आते हैं (दानिय्येल 10:10-21)। स्वर्गदूत विश्वासियों को देखते और उनसे सीखते हैं (1 कुरिन्थियों 4:9; इब्रानियों 12:22-23)। वे हमें खतरे में प्रोत्साहित करते हैं (प्रेरितों 27:23-24)। वे सुसमाचार प्रचार में भी मदद करते हैं (लूका 15:10; प्रेरितों के काम 8:26)। जब हम मरते हैं तो वे परमेश्वर के लोगों की परवाह करते हैं (लूका 16:22; यहूदा 9)। वे दुष्टात्माओं से लड़ते हैं (प्रकाशितवाक्य 12)।

स्वर्गदूतों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया हमें स्वर्गदूतों से संपर्क करने की कोशिश नहीं करनी है। परमेश्वर के निर्देशानुसार वे हमारी सेवा करेंगे। मुझे यकीन है कि हम सभी ने इसे जाने बिना कई बार स्वर्गदूतों की सेवकाई को प्राप्त किया है । स्वर्गदूत हमेशा हमारे आसपास मौजूद होते हैं, खासकर जब हम यीशु के नाम पर अन्य विश्वासियों के साथ इकट्ठे होते हैं। हालाँकि, हम उन्हें तब तक नहीं देख सकते जब तक कि परमेश्वर हमारी आँखों को एक विशेष तरीके से नहीं खोलता (2 राजा 6:17)। यह बहुत संभव है कि आपने स्वर्गदूतों को देखा हो, लेकिन लोगों के रूप में (इब्रानियों 13:2) और इसलिए एक स्वर्गदूत के रूप में नहीं पहचाना होगा । वह अजनबी जो सहायता या सहायता प्रदान करने के लिए सही समय पर आता है, जिसे हम 'स्वर्गदूत' कहते हैं, वह शायद एक स्वर्गदूत ही रहा होगा!

हमें स्वर्गदूतों पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना है या उनकी आराधना नहीं करनी है (प्रकाशितवाक्य 19:10)। वे परमेश्वर को आदर और महिमा देने के लिए सृजे गए हैं; वे उसके सेवक हैं। और इसी तरह हम भी । जब आप स्वर्गदूतों के बारे में सुनते हैं, तो उस महान परमेश्वर के बारे में सोचें जिसने उन्हें हमारी सहायता करके उसकी सेवा करने के लिए बनाया है। उसे स्तुति और सम्मान और महिमा दें और उसी पर ध्यान दो, ना कि स्वर्गदूटन पर । वह ही केवल सारी प्रशंसा के योग्य है (प्रकाशितवाक्य 4:11; 5:8-11)।

शैतान के नाम शैतान के नाम उसके और उसके चरित्र के बारे में बहुत कुछ बताते हैं। उसे शैतान (परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों का विरोधी), शैतान (मसीहीओं का "अभियुक्त"), दुष्ट या पापी (अपने आवश्यक स्वभाव को दिखाने वाला), शत्रु (परमेश्वर के लोगों के लिए), हत्यारा, धोखेबाज, बील्ज़ेबूब (" राक्षसों के राजकुमार"), इस दुनिया का शासक, इस दुनिया का भगवान, नाग, ड्रैगन और प्रकाश का दूत (लोगों को धोखा देने के लिए नकली प्रकाश), झूठ का पिता। निश्चित रूप से ये नाम स्पष्ट रूप से संक्षेप में बताते हैं कि वह क्या है और क्या करता है।

शैतान के काम आज आदम और हव्वा को पाप के लिए लुभाने और उनसे दुनिया पर नियंत्रण पाने के बाद, शैतान और उसकी सेना ने परमेश्वर की उपासना को रोकने और इसे अपने लिए प्राप्त करने का

प्रयास जारी रखा है। वे अविश्वासियों की बुद्धि को अन्धा कर देते हैं (2 कुरिन्थियों 4:4) और वचन को उनके हृदय से निकाल लेते हैं (लूका 8:12)। वे परमेश्वर के कार्य का विरोध करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं (प्रकाशितवाक्य 2:13)। चूँकि वे परमेश्वर पर हमला नहीं कर सकते, इसलिए वे अपना गुस्सा उन लोगों पर निकालते हैं जो परमेश्वर के लोग (यहूदी और ईसाई) हैं। शैतान और उसकी सेनाएँ मसीहियों को झूठ बोलने के लिए प्रलोभित करती हैं (प्रेरितों के काम 5:3), परमेश्वर के सामने हम पर दोषारोपण और निन्दा करते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:10), हमारे कार्य में बाधा डालते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 2:18), हमें हराने के लिए हर संभव प्रयास करते है (इफिसियों 6:11) -12), हमें अनैतिकता के लिए प्रलोभित करते हैं (1 कुरिन्थियों 7:5) और हमारे विरुद्ध सताव को भड़काते है (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

शैतान की हार शैतान और उसकी सेना पराजित शत्रु हैं, जिन्होंने यीशु को क्रूस पर नष्ट करने के लिए अपना सब कुछ दे दिया, लेकिन इसके बजाय शैतान उसके द्वारा हराया गया (इब्रानियों 2:14-15; 1 पतरस 3:18-22)। जब यीशु लौटाएगा तो शैतान और उसकी दुष्टात्माएं हमेशा के लिए आग की झील में डाल दी जाएंगी (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:1-15)।

दानव "दानव" का अर्थ है "विनाशक।" उन्हें दुष्ट या अशुद्ध आत्मा भी कहा जाता है; इस तथ्य का जिक्र करते हुए कि उनके पास भौतिक शरीर नहीं है। वे अपने पाप और अशुद्धता को किसी भी तरह फैलाते हैं। वे आध्यात्मिक आतंकवादी हैं, जो परमेश्वर के राज्य के कार्य को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं। मानव आतंकवादियों की तरह, उनसे कोई भी सुरक्षित नहीं है, वे घातक गंभीर हैं और उनमें कोई कोमलता या दया नहीं है। वे शैतान की सेवा करते हैं, जो उनका सेनापति है, और उसके आदेशों का पालन करता है। वे मूर्तियों या परमेश्वर के अलावा किसी और चीज को दी जाने वाली आराधना को प्राप्त करते हैं (1 कुरिन्थियों 10:20)।

राक्षसों का संगठन शैतान अपने राक्षसों को उसी तरह संगठित करता है जैसे परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को संगठित किया है - एक सैन्य संरचना में। ये सेनापतियों, कर्नलों, प्रमुखों, लेफ्टिनेंटों, हवलदारों, नायक, गोपनीय लोग, आदि के समान हैं (इफिसियों 6:12)। आमतौर पर एक "मजबूत आदमी" (या शासक) को एक कार्य सौंपा जाता है, और उसके पास काम में मदद करने के लिए उसकी आज्ञा में छोटी दुष्टात्माएँ होती हैं (मत्ती 12:25-29; दानिय्येल 10:2-6, 12-14)। इन राक्षसों के नाम आमतौर पर उनके काम ("डर," "क्रोध," "वासना," "अभिमान," "धोखा," आदि) का उल्लेख करते हैं।

मृत्यु, अंधेरा और आध्यात्मिक अंधापन शैतान की सभी ताकतें अंधेरे के दायरे में काम करती हैं (भय, धोखे, अंधापन, भ्रम, निराशा, अवसाद, आत्म-दया, क्रोध, बदला, आत्महत्या, मृत्यु, आदि) वह लोगों को आध्यात्मिक चीजों के लिए अंधा कर देता है (2 कुरिन्थियों 4:4; 1 यूहन्ना 2:11)। वह मन और हृदय को आत्मिक बातों के लिए कठोर करता है (2 कुरिन्थियों 3:14; इफिसियों 4:18; रोमियों 1:21)। वह इसे व्यक्तियों के साथ-साथ राष्ट्रों के साथ भी करता है (अर्थात: रोमियों 11:7-10 में इस्राएल)। उसका उद्देश्य मनुष्यों को परमेश्वर के प्रकाश और उद्धार से दूर रखना है (2 कुरिन्थियों 4:4)। परमेश्वर का प्रकाश शैतान के अन्धकार से बड़ा है (उत्पत्ति 1:14-19; यूहन्ना 1:5-9; 3:19-20; 8:12; 9:5; मत्ती 17:2; इफिसियों 5:8; 1 यूहन्ना 1: 5-7; प्रकाशितवाक्य 21:11,23-24; 22:5; यशायाह 60:1)। विश्वासी ज्योति में हैं, अन्धकार में नहीं (प्रेरितों के काम 26:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:4-5; कुलुस्सियों 1:12-13; यूहन्ना 8:12) इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए कि हम स्वयं को फिर से अन्धकार में ना डालें।

अंधकार की प्रतिमूर्ति मृत्यु है। जैसे मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना जीवन है, मनुष्य के लिए शैतान की योजना मृत्यु है, । शैतान शुरू से ही एक हत्यारा है (यूहन्ना 8:44)। उसका नाम, अबद्दोन का अर्थ है "विनाश।" अपोलियन का अर्थ है "विनाशक।" वह शारीरिक रूप से (यूहन्ना 8:44; मरकुस 9:20-22; 1

यूहन्ना 3:12) या आध्यात्मिक रूप से (2 कुरिन्थियों 4:4) जीवन को नष्ट करने का प्रयास करता है। शैतान के पास मृत्यु लाने की शक्ति है (अय्यूब 1:19; लूका 11:21-22; इब्रानियों 2:14; प्रकाशितवाक्य 9:14-16), लेकिन क्योंकि मृत्यु की शक्ति क्रूस पर नष्ट हो गई थी (इब्रानियों 2:14-15)) वह परमेश्वर की अनुमति के बिना उस शक्ति का उपयोग नहीं कर सकता (अय्यूब 2:6; प्रकाशितवाक्य 9:4)। शैतान हमें मृत्यु के द्वारा भी परमेश्वर से अलग नहीं कर सकता (रोमियों 8:37-39)।

शैतान और उसकी शक्तियों पर विजय प्राप्त करना परमेश्वर शैतान और उसकी सेना से बड़ा है (1 यूहन्ना 4:4), इसलिए हमें उनसे डरने की आवश्यकता नहीं है (लूका 10:17-19)। हमें नम्रता से परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर रहना चाहिए, ना कि अपनी शक्ति पर (याकूब 4:6-7; 5:16)। उन पापों और कमजोरियों को स्वीकार करें जिनका उपयोग शैतान आपके जीवन में करता है (भजन संहिता 32:5; 139:23-24), और आपने किसी भी पाप को स्वीकार करें (1 यूहन्ना 1:9)। परमेश्वर की क्षमा को स्वीकार करें और उसकी सहायता से पाप को त्याग दें (रोमियों 2:4; यहेजकेल 20:43)। शैतान आपके जीवन में जिस भी राह का उपयोग कर रहा है प्रार्थना में उस पा दावा करें (प्रेरितों के काम 19:18-19; मत्ती 3:7-8)। निरंतर स्तुति और प्रार्थना का जीवन विकसित करें (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। अन्य विश्वासियों के साथ निकट संगति में रहें (इब्रानियों 10:24-25)। पूरी तरह से परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करें (इफिसियों 6:16)।

अपने आप को जांचें... नीचे दानवी गतिविधि के प्रमाणों की एक सूची दी गई है। जितना अधिक आप पर लागू होता है और उतनी ही मजबूत और अधिक बार ये चीजें लागू होती इनका दानवी होने की अधिक संभावना को संकेत करता है।

अंधकार (मति 17:15, मरकुस 1:26; 7:24-30, लूका 4:35)

जबरदस्ती खाना, झूठ बोलना, चोरी करना, शराब पीना/नशीला पदार्थ, यौन पाप, लालच (प्रेरितों के काम 5:3)

लगातार हिंसक विचार (आत्महत्या, बलात्कार, हत्या, आत्म-दुर्व्यवहार, आदि)

गहरा अवसाद और निराशा (लगातार और लंबी)

पवित्र जीवन जीने की इच्छा लेकिन ऐसा करने में असमर्थता

आध्यात्मिक चीजों के आसपास अत्यधिक सुस्त और नींद आना (बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, आदि)

अत्यंत नीच आत्म-छवि (अयोग्य, अशुद्ध, दोष, क्षमा, आदि महसूस करना) लूका 8:2

बिना किसी उचित कारण के दूसरों के प्रति घृणा और कटुता

आध्यात्मिक सत्यों, पर विश्वास करने में असमर्थता, जो आप सुनते या पढ़ते हैं

तर्कहीन क्रोध या हमला (मत्ती 8:28)

तर्कहीन भय, घबराहट और डर (रोमियों 8:15 लूका 9:39)

ठेबाज़ी और ईशनिंदा विचार (विशेष रूप से आध्यात्मिक सत्य सुनते समय)

उचित स्पष्टीकरण के बिना दर्द, विशेष रूप से सिर या पेट में (कोई भी चिकित्सीय समस्या जिसे डॉक्टर समझ नहीं सकते या ठीक नहीं कर सकते, लूका 9:39)

भयानक दुःस्वपन (यौन, डरावनी, भयभीत, आदि)

दौरे (मरकुस 1:26; 7:24-30) यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि वे सभी दानवी हैं, लेकिन उन्हें सुनिश्चित करने के लिए जाँच करनी चाहिए ।

अलौकिक अनुभव (भूतिया, हिलजुल या वस्तुओं का गायब होना, अन्य अजीब अभिव्यक्तियाँ)

मन में सुनाई देने वाली आवाजें (मजाक, डराना, आरोप लगाना, धमकी देना, सौदेबाजी करना (यूहन्ना 13:22, 27; प्रेरितों के काम)5:3; 1 इतिहास 21:1)

परमेश्वर का कवच शैतान शायद ही कभी उन लोगों को परेशान करता है जो प्रतिबद्ध विश्वासी नहीं हैं। वे पहले से ही उसके हैं (कुलुस्सियों 1:13) और उसकी सेवा करते हैं (इफिसियों 2:2)। जब कोई उस रास्ते से मुड़ना चाहता है क्योंकि उसने यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है और उसे अपने जीवन का प्रभु बनाना चाहता है, तो शैतान उस व्यक्ति का विरोध करता है। शैतान अपनी एक भी प्रजा को आसानी से नहीं छोड़ेगा और उस व्यक्ति को वापस पाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। वह उसका उद्धार नहीं छीन सकता है, लेकिन उसे पहले जैसा जीवन जीने के लिए विवष कर सकता है (पाप और शैतान की सेवा में से एक)। परमेश्वर अपने बच्चों के लिए ऐसा नहीं चाहता। उसने शैतान को हरा दिया है और हमारे लिए उस जीत में हिस्सा लेने का इंतज़ाम किया है। एक अच्छे सेनापति के रूप में, वह शैतान को हराने और हमारी रक्षा करने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता है (इफिसियों 6:10-17, 2 कुरिन्थियों 10:35, मत्ती 12:29)। परमेश्वर के कवच का अध्ययन करें इसे समझे और विजय के लिए इसे अपने जीवन में लागू करें!

परमेश्वर के वचन का प्रयोग परमेश्वर के वचन को जानना और उसका उपयोग करना, आत्मा की तलवार, विजय की कुंजी है (यहोशू 1:8; भजन संहिता 77:12; 1 इतिहास 28:9; मत्ती 22:37-38; 1 कुरिन्थियों 2:16 ; फिलिप्पियों 4:8) । इस तरह यीशु ने शैतान को हराया (मत्ती 4:1-11)। शैतान मनुष्य के मन में परमेश्वर के वचन के बारे में संदेह पैदा करने की कोशिश करता है। उसने परमेश्वर का वचन को गलत तरीके से हवाला दे कर हव्वा को पाप करने के लिए धोखा दिया। शैतान परमेश्वर की सच्चाई को कमजोर कर रहा था, और वह जीत गया! जीतने के लिए हमें वचन की तलवार (इफिसियों 6:17) के उपयोग में निपुण होना चाहिए। पवित्रशास्त्र में रहो (भजन 1:1-3)। वचन एक दर्पण है (याकूब 1:22-25) एक दीपक (भजन संहिता 119:105) एक शुद्ध करने वाला (इफिसियों 5:25-26) एक तलवार (इब्रानियों 4:12) और भोजन (1 पतरस 2:2; मत्ती 4) :4). इन सभी अनुप्रयोगों के लिए इसका इस्तेमाल करें।

विशेष रूप से आध्यात्मिक युद्ध से संबंधित वायदे:

हमारे विरोधी हार जाएंगे: व्यवस्थाविवरण 32:43; फिलिप्पियों 1:28; व्यवस्थाविवरण 33:27

विजय का वायदा किया गया है: 1 कुरिन्थियों 15:57;11 इतिहास 29:11; नीतिवचन 21:31; 1 यूहन्ना 5:4, 18; प्रकाशितवाक्य 12:11; 15:2; रोमियों 8:37; 2 कुरिन्थियों 2:14; यूहन्ना 16:33

परमेश्वर हमारे लिए लड़ने की प्रतिज्ञा करता है: 1 शमूएल 17:45-47; यिर्मयाह 1:8

विश्वासी के विरुद्ध कोई भी बनाया हथियार सफल नही हो सकता: यशायाह 54:17

यीशु लगातार हमारी ओर से प्रार्थना और मध्यस्थता कर रहा है: 1 यूहन्ना 2:1; इब्रानियों 7:25

परमेश्वर हमेशा हमारे साथ है: मत्ती 28:20; इब्रानियों 13:5; मत्ती 18:20; यूहन्ना 14:16, 21; प्रकाशितवाक्य 3:20

हम कभी भी परमेश्वर से अलग नहीं होंगे: रोमियों 8:35-39; यूहन्ना 10:27-29; 3:36; 5:24

परमेश्वर हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करेगा: फिलिप्पियों 4:19; भजन संहिता 84:11; रोमियों 8:32; 1 शमूएल 12:24

चिंता करने या डरने की कोई आवश्यकता नहीं है: मत्ती 6:25,34; 1 पतरस 5:7; यशायाह 40:11; मत्ती 5:38-39; भजन संहिता 37:1-9; यहूदा 24; नीतिवचन 3:25; यशायाह 14:3; भजन संहिता 34:4; यहोशू 1:9; 10:8; 23:9-11; लैव्यव्यवस्था 26:8; निर्गमन 14:13; 1 शमूएल 17:45-47; 2 शमूएल 22:33-35,40-41

परमेश्वर देखभाल करने और सुरक्षा देने का वायदा करता है: व्यवस्थाविवरण 33:27; उत्पत्ति 17:1; यिर्मयाह 23:24; 32:7

अंत में सब कुछ ठीक हो जाएगा: रोमियों 8:28

आप कभी भी किसी ऐसी चीज का सामना नहीं करेंगे जिसे आप परमेश्वर की सहायता से संभाल नहीं सकते: 1 कुरिन्थियों 10:13

हर परस्थिति में शांति उपलब्ध है: यूहन्ना 14:27; रोमियों 5:1; कुलुस्सियों 1:20; यशायाह 26:3; फिलिप्पियों 4:6-7; मत्ती 11:28-30; 2 तीमुथियुस 1:7

परीक्षाओं को आत्मिक वृद्धि लाने के लिए अनुमति दी जाती है: भजन संहिता 119:67, 71,75; 94:12; यशायाह 48:10; रोमियों 5:3

परमेश्वर शान्ति की प्रतिज्ञा करता है: भजन संहिता 23:4; विलापगीत 3:22-23; मत्ती 5:4; 11:28-30; यूहन्ना 14:16, 18; रोमियों 15:4; 2 कुरिन्थियों 1:3-4; 2 थिस्सलुनीकियों 2:16-17

परमेश्वर हमें साहस देगा: यहोशू 1:9-11:1;1 कुरिन्थियों 16:13; 2 तीमुथियुस 1:7

जो मांगते हैं उनके साथ बुद्धि की प्रतिज्ञा की जाती है: याकूब 1:5; 3:14-17; लूका 21:15; नीतिवचन 1:7; 2:6; 1 कुरिन्थियों 2:5; 3:19

जुबानी याद करने को परमेश्वर के वचन परमेशवर के वचन को जुबानी याद करें ताकि जब हमें इसकी आवश्यकता होती है यह हमारे दिलों में हों, यह पाप, शैतान और प्रलोभन पर विजय पाने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण तरीका है (मत्ती 4:1-11; भजन संहिता 119:9-11)। जीत का कोई बेहतर तरीका नहीं है! ये वे पद हैं जिन्हें आपको दिल से जुबानी याद होना चाहिए: इब्रानियों 4:12; यूहन्ना 8:32; रोमियों 12:1; याकूब 4:6-8; 1 यूहन्ना 4:4; फिलिप्पियों 4:19; रोमियों 12:2; याकूब 5:16; लूका 10:18-19; भजन संहिता 139:23-24; 2 कुरिन्थियों 5:17; 12:9-10; 1 पतरस 5:8-9)।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहिओं को आध्यात्मिक युद्ध, स्वर्गदूतों, शैतान और दानवो को समझने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

इस अध्याय में बात करने के लिए बहुत कुछ है इसलिए धीरे-धीरे आगे बढ़ें और इसे एक-एक करके समझाएं। आप उन्हें समझने में मदद करने के लिए व्यक्तिगत अनुभव साझा कर सकते हैं। आपका कोई परिचित हो सकता है जिसे आध्यात्मिक युद्ध की अच्छी समझ हो। आप उन्हें उस व्यक्ति से बात करने के लिए कह सकते हैं जिसे आप अनुशासित कर रहे हैं। उनके किसी भी प्रशन का उत्तर दें। इन चीजों के बारे में जानने में मदद के लिए आप मेरी किताब "आध्यात्मिक युद्ध कला " का उपयोग कर सकते हैं। यह पुस्तक और मेरे द्वारा लिखी गई अन्य चीजें मेरी वेब साइट SW.ChristianTrainingOrganization.org पर देखी जा सकती हैं। आपको वहां बहुत सी उपयोगी जानकारी के साथ-साथ अपने प्रशनो के साथ मुझसे संपर्क करने का लिंक भी मिल सकता है। यह एक कठिन विषय है लेकिन एक ऐसा विषय जो आपके और दूसरों के लिए सीखना महत्वपूर्ण है। हमारे लिए डरने की कोई बात नहीं है, परमेश्वर विजयी है

11. पिता के साथ समय बिताना

मैं परमेश्वर को बेहतर तरीके से कैसे जान सकता हूँ?

बिना समय बिताऐ कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति को बेहतर तरीके से नहीं जान सकता, चाहे वह पुरुष हो या महिला हो । इसलिए बच्चे और माता-पिता एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह जानते हैं। वे एक-दूसरे से बात करते हैं और कि एक-दूसरे का कहना सुनते हैं । यही एकमात्र तरीका है जिससे हम परमेश्वर की नजदीकी में भी बढ़ सकते हैं। हमें उसके साथ समय बिताने, उससे बात करने और उसे सुनने की जरूरत है। केवल रविवार की सुबह ऐसा करना ऐसा होगा जैसे आप आप सप्ताह में केवल एक बार भोजन करने से आपने आप के बढ़ने की उम्मीद करते हैं। हमें हर दिन उसके साथ समय चाहिए!

हम प्रार्थना और आराधना में भगवान से बात करते हैं। वह अपने वचन के द्वारा हमसे बात करता है। उसके वचन को याद करने का यह एक और लाभ है। ना केवल हमें उसके साथ संगति के समय की आवश्यकता है, बल्कि वह भी उन लम्हों को हमारे साथ बिताना चाहता है। वह हमारे साथ एक व्यक्तिगत संबंध रखना चाहता है (1 यूहन्ना 4:10, 19; उत्पत्ति 5:1; लैव्यव्यवस्था 26:12)। इसलिए उसने हमें बनाया और फिर हमें छुड़ाने के लिए कीमत चुकाई जब हम उसको छोड़ पाप की तरफ चले गए (गलातियों 3:13)।

हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपादान परमेश्वर के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना है, उसे और उसके वचन को बेहतर तरीके से जानना है। बात करते और सुनते समय उसके वचन को पढ़ने में समय व्यतीत करना महत्वपूर्ण है। इसके बिना बढ़ना असंभव है।

ऐसा करने का कोई सही या गलत तरीका नहीं है। दूसरों के साथ हमारा हर रिश्ता अलग होता है, और इसलिए हम सभी का परमेश्वर के साथ कैसे समय बिताने का अलग अलग तौर तरीका हो सकता है । उसके साथ जुड़ना महत्वपूर्ण है। जब तक हमारे पास ये तीन हैं: उसके वचन को पढ़ना, उससे बात करना और उसे सुनना, हम उसके करीब बढ़ते जाएंगे।

अन्य चीजों को करने से पहले, इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। इसे पास प्रत्येक दिन की, यीशु के साथ,आपनी एक नियुक्ति के रूप में समझे जो आप के पास है। जब आप उपस्थित ना हों तो उसे ना

तो छोड़ें और ना प्रतीक्षा कराएँ । प्रत्येक दिन एक निश्चित समय और स्थान निर्धारित करें। सुसंगत रहें, डर या अपराधबोध के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि आप वास्तव में उसके साथ रहना चाहते हैं और उसके करीब आना चाहते हैं। अपनी बाइबल और एक कागज़ और पेंसिल साथ रखें ताकि आप प्रशन लिख सकें, प्रार्थना में रखने के लिए बातें और वे बातें जो परमेश्वर आपको दिखा रहा है, जिन्हें आप याद रखना चाहते हैं या फिर जो कुछ भी सामने आता है। अपनी प्रार्थनाओं को लिखना या आध्यात्मिक पत्रिका रखना भी फायदेमंद हो सकता है।

पहले अपने जीवन में किसी भी पाप को स्वीकार करें और सुनिश्चित करें कि आपके और परमेश्वर के बीच कुछ भी नहीं है। फिर ध्यान से और धीरे-धीरे कुछ आयातों को पढ़ें और उन पर मनन करें। स्तुति और आराधना के लिए कुछ समय निकालें। वह आपके लिए जो कुछ कर रहा है, उसके लिए उसका धन्यवाद करें। आप दूसरों के लिए अपने अनुरोध उसके पास ला सकते हैं, और फिर अपनी जरूरतें भी । परमेश्वर

से पूछने के लिए सावधान रहें कि आपको दूसरों के साथ-साथ अपनी जरूरतों के लिए कैसे प्रार्थना करनी चाहिए। जो आप उनकी या आपकी समस्याओं के समाधान के रूप में क्या देखते हैं उसको ही प्रार्थना ना बनाए । केवल समस्या को उसके सामने लाएं और उसे यह तय करने दें कि सबसे अच्छा समाधान क्या है और इसे कब लागू करना है। सुनिश्चित करें कि आप इस पूरी प्रक्रिया में उसे सुनने के लिए समय देते है । कोई भी रिश्ता तब नहीं बढ़ता जब एक ही व्यक्ति सारी बातें करता है। सुनना भी महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम अगले अध्याय में देखेंगे।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहियों को परमेश्वर के साथ समय विकसित करने और उसे बेहतर तरीके से जानने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

यह शिष्यता का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है और उद्धार के तुरंत बाद शुरू होना चाहिए। उपरोक्त जानकारी को उनके साथ बैठ कर पढ़ें और अपने अनुभव और सुझाव उनके साथ साझा करें। जब आप प्रार्थना करने और परमेश्वर से बात करने में समय व्यतीत करते हैं तो शुरुआत में आपको उन्हें अपने साथ शामिल होने देना चाहिए ताकि वे देख सकें कि आप क्या करते हैं। इसे एक साथ करें और उन्हें भी इसमें भाग लेने दें। इससे उन्हें अपने दम पर कुछ ऐसा ही करने में मदद मिलेगी।

हर बार जब आप मिलते हैं तो उनसे पूछें कि वे इसे करने में कैसा महसूस करते हैं , वे परमेश्वर के बारे में क्या सीख रहे हैं और क्या उनके पास उसके साथ समय बिताने के बारे में कोई प्रशन हैं। अपने उत्तरों में खुले विचारों वाले और ईमानदार रहें। उन्हें नियमित रूप से परमेश्वर से जुड़ने के लिए गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करें।

12. दिशा-निर्देषों की पालना

मैं कैसे जान सकता हूँ कि परमेश्वर क्या चाहता है कि मैं करूं ?

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, वह वही करना चाहेगा जिसमें उसके माता-पिता हैं। वे अपने माता-पिता का अनुसरण करना चाहते हैं और वही करना चाहते हैं जो माता-पिता उनसे कराना चाहते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि वे सुनें कि उनके माता-पिता क्या कहते हैं, इसलिए उन्हें यह सीखना होगा कि जब वे बोलते हैं तो उन्हें कैसे सुनना है। मसीही होने के नाते हमें यह सुनना सीखना चाहिए कि हमारा स्वर्गीय पिता हमसे क्या कह रहा हैं।

परमेश्वर हमसे बात करना चाहता है और वह अक्सर बोलता है। वह चाहता है कि हम उसकी आवाज सुनना सीखें (भजन संहिता 81:13; यिर्मयाह 33:3; भजन संहिता 50:3)। यह उसके साथ व्यक्तिगत संबंध रखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम जानते हैं कि परमेश्वर की तरफ से संचार संभव है क्योंकि वह परमेश्वर है। यदि वह हमें उससे बात करते हुए सुन सकता है, तो वह निश्चित रूप से हमसे भी बात कर सकता है। ना केवल यह संभव है, बल्कि यह संभव है क्योंकि उसने हमें उसके साथ संगति करने के लिए ही बनाया है। इससे भी अधिक, यह आवश्यक है, क्योंकि मनुष्य का परमेश्वर को जानने का एकमात्र यही तरीका है।

जब हम एक दूसरे के साथ संवाद करते हैं तो हम शब्दों, शारीरिक भाषा या लिखित शब्दों का प्रयोग करते हैं। परमेश्वर हमारे साथ संवाद करने के लिए भी विभिन्न माध्यमों का उपयोग करता है। आज परमेश्वर हमसे कैसे बात करता है? परमेश्वर की इच्छा, उसके उद्देश्य और योजनाएँ, उसका स्वभाव, सभी पवित्र शास्त्र के पन्नों के माध्यम से हमारे सामने स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं (इब्रानियों 4:12; 2 तीमुथियुस 3:16)। परमेश्वर हमसे बात करने के लिए अपने वचन का उपयोग करता है जब पवित्रशास्त्र का एक परिचित पृष्ठ सहमने आता है, जब एक वायदा जो उस स्थिति से मेल खता है जिसमें हम होते हैं, दिमाग में आता है और चिपक जाता है, जब एक निश्चित हिस्सा , कहानी या कविता दिमाग में आते है, जब जो कुछ ऐसे आता है एक नए तरीके से जीवित साबित होता या जब हम जो कुछ सुनते हैं वह हमारी आत्मा में गहराई तक जाता है और सेवकाई करता है । वह पवित्र आत्मा है जो लिखित वचन को लेकर हमारे हृदयों में इसे लागू करता है (यूहन्ना 16:6-13; रोमियों 8:26-27)।

परमेश्वर अच्छा मार्गदर्शन और सलाह देने के लिए हमे अन्य लोगों के माध्यम से भी बोल सकता है, विशेष रूप से परिपक्व विश्वासीयों के मध्यम से जो हमें जानते हैं, । इसके अलावा, कभी-कभी परमेश्वर हमसे सीधे बात करता है। उसकी आवाज वह आवाज नहीं है जिसे हम अपने कानों से सुनते हैं। हम इसे अंदर, अपने दिमाग या दिल में सुनते हैं। एक बार जब आप इस आवाज को पहचानना और उसका जवाब देना सीख जाते हैं तो आप उसे अपने से बात करते हुए पहचान लेंगे।

परमेश्वर की आवाज कैसी लगती है, इसका पहला सुराग हमें 1 राजा 19:11-13 में मिलता है, जहां हम देखते हैं कि यह एक शांत, छोटी आवाज है **- एक कोमल फुसफुसाहट**। परमेश्वर की शांत, छोटी आवाज में हमें एक संदेश दिया जाता है जो उसके व्यक्तित्व की छाप को काफी स्पष्ट रूप से छोड़ता है और जिस तरह से हम पहचानना सीख जायेंगे ।

मुझे याद है कि कई साल पहले मैं एक ऐसे जोड़े से शादी कर रहा था जो काफी समय से चर्च और बाइबल अध्ययन में आ रहा था। उनके जीवन में कुछ बड़े पाप थे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उन्होंने उन्हें रोक दिया है। हालांकि, शादी से एक दिन पहले दूल्हे ने कुछ ऐसा किया जो उसके पुराने जीवन का हिस्सा था।

मैंने अपनी आत्मा में स्पष्ट रूप से परमेश्वर की आवाज़ सुनी जो मुझसे शादी करने से रोक रही थी, इसलिए मैंने ऐसा नहीं किया। दुल्हन और दोनों परिवारों ने वास्तव में मुझ पर शादी को आगे बढ़ाने के लिए बहुत दबाव डाला, लेकिन मुझे पता था कि परमेश्वर ने बात की थी, और ऐसा नहीं किया ।

याद रखें, यह मौखिक आवाज, संवेदना या भावनात्मक अनुभव नहीं है। वास्तव में, उसकी आवाज़ को नज़रअंदाज़ करना या यह सोचना कि यह हमारा अपना विचार है, बहुत आसान हो सकता है। जब परमेश्वर हमसे बात करता है तो हमें उसकी स्थिर आवाज सुनना सीखना चाहिए। मैं कई बार सोच सकता हूं कि उसने मुझे किसी से उसके (परमेम्श्वर) बारे में बात करने के लिए कहा था और मैंने नहीं किया।

यह आज भी मुझे सताता हैं। बेहतर यादें वो समय हैं जब परमेश्वर ने कुछ करने के लिए मेरे दिल या दिमाग में डाल दिया और मैंने उसकी बात मानी।

जब हम सुनना सीखते हैं, तो हम पहचानते हैं कि **वह हमारे दिमाग में समृद्ध और प्रबुद्ध विचार बोलता है**। परमेश्वर हमारे दिमाग में सीधे और तुरंत एक नया विचार डाल सकता है। वह हमें किसी चीज को देखने का एक नया नजरिया दे सकता है। **वह हमारे दिलों में नई इच्छाएं डाल सकता है**। अक्सर परमेश्वर की शांत, छोटी आवाज उन विचारों का रूप ले लेती है जो हमारे विचार प्रतीत होते हैं, हालांकि वे हमारे नहीं होते हैं।

जब मैं अध्ययन करता हूं और जब मैं उपदेश और पाठ तैयार करता हूं, तो मैं उन समृद्ध और ज्ञानवर्धक विचारों से बहुत अवगत होने की कोशिश करता हूं जो परमेह्वर मुझे अपनी आत्मा के माध्यम देता हैं। जब मैं सलाह देता हूं तो मैं हमेशा उस्की अगुवाई और निर्देशन के प्रति संवेदनशील होने की कोशिश करता हूं। जब हम आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होते हैं तो यह सुनने के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर मुझे क्या चेतावनी या सुझाव देता है। इन पुस्तकों को लिखने में मुझे इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि परमेश्वर मुझे क्या कहने या ना कहने के लिए प्रेरित कर रहा है और साथ ही इसे कैसे कहना है।

अक्सर यह शांत, छोटी आवाज मेरे दिल में एक इच्छा पैदा करके समृद्ध और ज्ञानवर्धक विचार बोलती है। जिन चेलों ने यीशु के साथ इम्माऊस के रास्ते में बात की थी, उस पहले पुनरुत्थान रविवार को इसका अनुभव किया था (लूका 24:32)। दाऊद ने भी इसका अनुभव किया (भजन संहिता 39:1-3)।

क्या आपने कभी अपने आप को किसी ऐसी चीज़ से प्रेरित पाया है जिसे आप अपनी आत्मा में महसूस करते हैं? शायद यह किसी गीत या उपदेश के दौरान होता है, जब किसी गवाही को सुनते समय या प्रकृति में होते हैं ? यह उत्तेजना है परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से हमारे दिलों से बात कर रहा है, कुछ महत्वता दिखाने के लिए अपनी आग हमारे भीतर डाल रहा है।

यह अभी भी, छोटी आवाज हमारे दिलों में एक इच्छा पैदा करके या अपने विचारों को हमारे दिमाग में डालकर समृद्ध और ज्ञानवर्धक विचार बोलती है। यह हमेशा एक कोमल, शांत फुसफुसाहट होती है। उसकी आवाज क्या कहती है? हम परमेश्वर से क्या सुनने की उम्मीद कर सकते हैं? वह सुननेवालों से किस प्रकार की बातें करता है?

हम में से अधिकांश के लिए, पहली बार जब हमने परमेश्वर को हमसे बात करते हुए सुना, **तो वह हमें पाप के लिए दोषी ठहरा रहा था**, हमें उद्धार की हमारी आवश्यकता दिखा रहा था (यूहन्ना 16:7-11; 1 थिस्सलुनीकियों 1:4-5)। उद्धार के बाद जिस तरह से परमेश्वर हमसे बात करता है वह है हमें हमारे जीवन में पाप का दिखाना। वह हमें पाप के लिए दोषी ठहराता है, इसलिए हम उसे अंगीकार कर सकते हैं और हटा सकते हैं।

एक दूसरे प्रकार का संदेश जो परमेश्वर हमसे बोलता है वह है **सूचना और मार्गदर्शन** (यूहन्ना 16:130। बाइबल इसके उदाहरणों से भरपूर है।पौलुस ने कहा कि पवित्र आत्मा ने उसे चेतावनी दी थी कि जब वह यरूशलेम गया तो क्या होगा (प्रेरितों के काम 20:22-) 23) यूसुफ ने फिरौन के सपने के बारे में सुना और परमेश्वर ने उसे अर्थ बताया। परमेश्वर ने दानिय्येल को नबूकदनेस्सर के सपने का विवरण और व्याख्या दी। याकूब (उत्पत्ति 46:2) और शमूएल (2 शमूएल 23:2) दोनों ने कहा कि परमेश्वर ने उनके लिए अपना मार्गदर्शन बताया। शिमोन आत्मा द्वारा प्रेरित होकर यीशु को उसके माता-पिता के साथ हैकल में ढूंढ़ने के लिए प्रेरित हुआ (लूका 2:25-28)। कई बार बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने यीशु

की आत्मा को निर्देशित करके उसे निर्देशित किया (मरकुस 2:8; यूहन्ना 13:21) परमेश्वर ने हनन्याह से बात की और उसे अंधे पौलुस के पास जाने को कहा (प्रेरितों के काम 9:11-15)।

एक सादृश्य जो मुझे पसंद है वह चरवाहा-भेड़ का चित्रण है। यीशु ने कहा कि उसकी भेड़ें उसकी आवाज सुनती हैं और उसका अनुसरण करती हैं (यूहन्ना 10:4, 16, 27)। एक शिष्य के लिये यीशु की परिभाषा है कि वह जो उसका अनुसरण करता है, जो उसकी आवाज सुनता है और प्रतिक्रिया करता है। क्या आप उसकी आवाज को पहचानते हैं जब वह आपसे बात करता है? जो कुछ वह कहता है क्या तुम उसका पालन करते हो?

कई साल पहले, मैं चर्चों के बीच यह खोज रहा था कि परमेशवर मुझे कहां सेवक बनाएगा। एक चर्च ने हमें बात करने और आवेदन करने के लिए आमंत्रित किया, जैसा हमने किया। हमें यकीन नहीं था कि परमेशवर चाहत है कि हम वहां जाएं या नहीं, लेकिन उन्होंने अपनी प्रक्रिया को आगे बढ़ाया और हमें वोट दिया। वोट 100% था - एकमत। मुझे याद है कि मैं निर्णय पर तड़प रहा था, उनके अंतिम आवाज़ का इंतजार कर रहा था कि हम आयें या नहीं। जब फोन बजा तो मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था, लेकिन जब मैं बात कर रहा था तो मुझे लगने लगा कि परमेश्वर मुझसे इसको ना कहने के लिए कह रहा था । मैं वास्तव में वहाँ जाना चाहता था लेकिन जानता था कि परमेश्वर "नहीं" कह रहा था । छ: महीने बाद परमेश्वर हमें उस कलीसिया में ले गया जिसकी मैंने 35 वर्षों तक पासबानी की है , और जहाँ हम अभी भी सेवकाई करते हैं। चर्च में कई समस्याएं थीं और हमें वहां ना जाने की सलाह दी गई थी, लेकिन यही वह जगह है जहां भगवान हमें चाहता था और जहां उसने हमें आशीश दी । इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर की सुनें और उसको हमारा मार्गदर्शन और निर्देशन करने दें।

केवल बड़ी चीजों में ही नहीं है, बल्कि छोटी चीजों में भी वह हमें साथ लेकर चलता है। कई बार मुझे अपनी चाबियां या कोई ऐसी चीज नहीं मिली जो मैंने खोई हो। हर जगह देखने के बाद मैं अंत में रुक जाता हूं और प्रार्थना करता हूं, और उसके तुरंत बाद मुझे याद आता है कि उन्हें कहां देखना है।

परमेश्वर हमसे केवल जानकारी देने के लिए ही नहीं बोलता ; अक्सर वह प्रोत्साहन, **शांति, आराम और शक्ति के वचन बोलता है** (यूहन्ना 14:27; फिलिप्पियों 4:6-7)। जब हम परीक्षाओं से गुज़र रहे होते हैं, तो हमें शांति और आराम का अनुभव होता है।

उसकी वाणी लोगों को सेवकाई में भी बुलाती है (1 तीमुथियुस 1:12; 2:6-7) और फिर जिन्हें उसने बुलाया होता है , उन्हें बताता है कि **क्या कहना है या क्या करना है**। मूसा इसका एक उदाहरण है (निर्गमन 4:10-12)। मुझे यकीन है कि आपने कई बार देखा होगा जब आप किसी से आध्यात्मिक चीजों के बारे में बात कर रहे होंगे और अचानक आपके पास सही विचार आए और आप कुछ इस तरह से समझाने में सक्षम हो गए जैसे आपने कभी नहीं सोचा होगा इस तरह से आप कर सकते थे ।

जब मैं सिखाता और प्रचार करता हूं तो मैं परमेश्वर पर निर्भर करता हूं की वह मुझे कहने के लिए सही शब्द देगा । मैं शुरू करने से पहले हमेशा प्रार्थना करता हूं, मुझे बोलने के लिए मै उससे अपने शब्द देने के लिए प्रार्थना करता हूं और हर कोई मेरे माध्यम से उसे सुनता है। मुझे उसकी बात सुनने की जरूरत होती है। आपको भी उस से सुनने की जरूरत है।

उसका संचार जो अंतिम रूप ले सकता है, वह **उसका स्वयं का प्रकाशन** है। अक्सर ऐसा लगता है कि हमें 'ताकत से बोलना ' है कि परमेश्वर कितना अद्भुत, शक्तिशाली या राजसी हैं। यह उसकी आत्मा है जो यीशु को हम पर प्रकट कर रही होती है। वह ऐसा करता है इसलिए हम स्तुति और आराधना में उत्तर देंगे । यह मेरे साथ अक्सर संगीत या उसकी प्रशंसा करने के माध्यम से होता है।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि परमेश्वर एक कोमल फुस्फसाहट में हमसे बात करता है। कभी-कभी, जब वे ऐसा करता हैं, तो वे हमारे मन में समृद्ध और ज्ञानवर्धक विचार बोलता हैं। या जब वह हमारी भावनाओं से बात करता है तो वह हमारे दिलों में एक इच्छा पैदा कर सकता है। वह सामग्री, जो वह हमसे संप्रेषित करता है, उसमें दृढ़ विश्वास, सूचना और मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और शांति, सेवकाई में सक्षमता, और स्वयं का एक प्रकाशन शामिल होता है जो हमें उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित करता है।

पिछले सप्ताह के दौरान वह इनमें से किस क्षेत्र में आपसे बात कर रहा है? वह अब आप से किस चीज में बात कर रहा है? आने वाले सप्ताह में आपको उसे बोलते हुए सुनने की क्या आवश्यकता है? अब जबकि आप थोड़ा बेहतर तरीके से जानते हैं कि परमेश्वर की वाणी कैसी लगती है और वह किस प्रकार की बातों के बारे में बात करता है, सुनिश्चित करें कि आप इस सप्ताह उनके बारे सुन रहे हैं।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहियों को परमेश्वर को सुनना सीखने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

परमेश्वर को सुनना सीखना एक ऐसा कौशल है जिसे बहुत से विश्वासी कभी विकसित नहीं करते हैं। सुनिश्चित करें कि आप अपने जीवन में इसमें बढ़ रहे हैं। आप इस अध्याय में जिस व्यक्ति को जानकारी के लिए अनुशासित कर रहे हैं, उसे अपने जीवन में उदाहरण देकर उसके किसी भी प्रशन का उत्तर देकर सिखाएं। भविष्य में मिलने पर समय-समय पर इसे सामने लाने की यह एक सत्य प्रक्रिया है। उनसे पूछें कि वे इसके साथ कैसा महसूस कर रहे हैं और वे क्या सीख रहे हैं। उन्हें ऐसा करने में समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करें। आप जो सीख रहे हैं उसे भी साझा करते रहें।

13. परिवार में अपनी भूमिका निभाना

मैं परिवार में दूसरों के लिए कैसे योगदान कर सकता हूं?

जैसे ही एक बच्चा चलना और बात करना शुरू करता है, वह घर के चारों ओर "मदद" करना चाहता है। वह दूसरों की मदद करने के लिए छोटे-छोटे काम करने की कोशिश करता है। हालाँकि वह पहली बार में बहुत कुछ नहीं कर पाता है, फिर भी वह कोशिश करता है और कोशिश करता है। वह बहुत अच्छा महसूस करता है जब वह योगदान कर सकता है और किसी की 'मदद' कर सकता है।

परमेश्वर के परिवार में भी यही सचाई है। एक नया विश्वासी पहली बार में बहुत कुछ करने में सक्षम नहीं होता है, लेकिन वह जो कर सकता है उसे करने की मज़बूत इच्छा होनी चाहिए। आध्यात्मिक परिवार में योगदान देना और हर संभव मदद करना स्वाभाविक है। माता-पिता अपने बच्चों को योगदान करने में सक्षम होने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। परमेश्वर अपने बच्चों को दूसरों के लिए योगदान देने में मदद करने के लिए आध्यात्मिक उपहार देता है।

आध्यात्मिक उपहार उद्धार के समय हमें प्राप्त होने वाली कई आशीषों में से एक है आत्मिक उपहार (1 कुरिन्थियों 12) ये वे सक्षमताएं हैं जो आत्मा प्रत्येक के लिए प्रदान करता है। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के पास प्रतिभाओं का एक अनूठा समूह होता है, उसी तरह प्रत्येक विश्वासी के पास आध्यात्मिक उपहारों का एक अनूठा समूह होता है। ये प्रतिभाओं से भिन्न हैं। ये विशेष कौशल/क्षमताएं हैं जो परमेश्वर का पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी को मसीह की देह में दूसरों की सेवा करने के लिए देता है (1 कुरिन्थियों 12:4-31)।

आध्यात्मिक उपहार किसी के अपने लाभ के लिए उपयोग करने को नहीं दिए जाते हैं। वे मसीह की देह में दूसरों की सेवा करने के उद्देश्य से हैं (इफिसियों 4:12)। यदि आप अपने उपहार का उपयोग नहीं कर रहे हैं, तो आपके आस-पास के अन्य मसीहिओं को उतना लाभ नहीं मिल रहा है जितना उन्हें मिलना चाहिए।

प्रत्येक विशवासी के पास उपहारों का एक अनूठा संयोजन होता है। जैसे तीन रंग, पीला, लाल और नीला, हजारों रंगों को बनाने के लिए विभिन्न संयोजनों में मिश्रित होते हैं, इसलिए इन मूल उपहारों को दूसरों के साथ मिलाकर प्रत्येक विश्वासी में एक अनूठा संयोजन बनाया जाता है। हम में से कोई भी दो बिल्कुल एक जैसे प्रतिभाशाली नहीं हैं।

पासबान : पादरी का उपहार विश्वासियों के एक समूह के आध्यात्मिक कल्याण के लिए दीर्घकालिक व्यक्तिगत जिम्मेदारी ग्रहण करने की विशेष क्षमता है।

शिक्षण: शिक्षण का उपहार देह और उसके सदस्यों के स्वास्थ्य और सेवकाई से संबंधित जानकारी को इस तरह से संप्रेषित करने की विशेष क्षमता है कि दूसरे इससे सीखेंगे।

उपदेश: उपदेश का उपहार लिखित शब्द को स्पष्टता के साथ घोषित करने और सुधार करने या संपादन करने और आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से किसी विशेष स्थिति में इसे लागू करने की विशेष क्षमता है।

अगुवाई : अगुवाई का उपहार भविष्य के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करने और दूसरों को इन लक्ष्यों को इस तरह से संप्रेषित करने की विशेष क्षमता है कि वे स्वेच्छा से और सामंजस्यपूर्ण रूप से परमेश्वर की महिमा के लिए इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

सुसमाचार प्रचार : सुसमाचार प्रचार का उपहार उद्धार की खुशखबरी को प्रभावी ढंग से घोषित करने की विशेष क्षमता है ताकि व्यक्ति या लोगों के समूह रूपांतरण और शिष्यत्व में मसीह के दावों का प्रतिउतर दे सकें।

मिशनरी: मिशनरी का उपहार दूसरी संस्कृति में उनके पास जो भी अन्य आध्यात्मिक उपहार हैं, उनकी सेवा करने की विशेष क्षमता है।

प्रशासन: प्रशासन का उपहार मसीह की देह के एक विशेष इकाई(यूनिट) के तत्काल और लंबी दूरी के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से समझने और उन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए योजनाओं को तैयार करने और पूरा करने की विशेष क्षमता है।

ज्ञान: ज्ञान का उपहार बाइबल के तथ्यों का पालन करने और निष्कर्ष निकालने और बाइबल का अध्ययन करने और इसे गहरे तरीके से समझने के लिए एक विशेष क्षमता है।

बुधि : बुधि का उपहार पवित्र आत्मा के मन को इस तरह से जानने अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की विशेष क्षमता है कि प्राप्त ज्ञान को कैसे मसीह के शरीर में उत्पन्न होने वाली विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए लागू किया जा सकता है।

सेवा: सेवा का उपहार परमेश्वर के कार्य से संबंधित कार्य में शामिल अधूरी जरूरतों की पहचान करने और उन जरूरतों को पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने और वांछित परिणाम प्राप्त करने में मदद करने की विशेष क्षमता है।

दया: दया का उपहार उन व्यक्तियों के लिए वास्तविक सहानुभूति और करुणा महसूस करने की विशेष क्षमता है जो कष्टदायक शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक समस्याओं का सामना करते हैं और उस

करुणा को खुशी से किए गए कार्यों में अनुवाद करते हैं जो मसीह के प्रेम को दर्शाते हैं और पीड़ा को कम करते हैं।

मदद करना : मदद करने का उपहार शरीर के अन्य सदस्यों के जीवन और सेवकाई में उनके पास मौजूद प्रतिभाओं को निवेश करने की विशेष क्षमता है ताकि दूसरे लोग आपने आध्यात्मिक उपहारों की प्रभावशीलता को बढ़ा सके।

देना: देने का उपहार उदारता और प्रसन्नता के साथ परमेश्वर के काम में भौतिक संसाधनों से योगदान करने की विशेष क्षमता है।

आतिथ्य: आतिथ्य का उपहार एक खुला घर प्रदान करने की विशेष क्षमता और भोजन और आवास के अभावी लोगों का गर्मजोशी से स्वागत करना है।

प्रोत्साहन: प्रोत्साहन का उपहार देह के अन्य सदस्यों को आराम, सांत्वना, प्रोत्साहन और सलाह के शब्दों को इस तरह से सेवा करने की विशेष क्षमता है कि वे सहायता पाए हुए और चंगा किये गए महसूस करें ।

विशवास : विश्वास का उपहार परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए एक अलौकिक क्षमता का प्रयोग करने की विशेष क्षमता है।

अपने उपहारों की खोज कैसे करें सबसे पहले, किसी भी तरह से दूसरों की मदद करने और उनकी सेवा करने के लिए काम पर लग जाएं। आप पाएंगे कि कुछ तरीके दूसरों की तुलना में आसान और अधिक मनोरंजक है । सेवा के कुछ क्षेत्र ऐसे होंगे जिन्हें अन्य लोग इस तरह देखते कि आप उनमें कुछ अच्छी तरह से कर सकते हैं और वे आपको उन तरीकों से सेवा करने के लिए कहेंगे। आप सब कुछ करने में सक्षम नहीं होंगे, और आप जो भी प्रयास करेंगे उसमें आप अच्छे नहीं होंगे। लेकिन दूसरों की सेवा करने के वे तरीके जिनका आप आनंद लेते हैं और जिनमें आप अच्छे हैं, वे तरीके हैं जो परमेश्वर ने आपको उपहार में दिए है। यह ऊपर सूचीबद्ध किये उपहारों का एक संयोजन होगा और सभी के लिए अलग होगा।

जब आपको ऐसे क्षेत्र मिलते हैं जहां आप अच्छे परिणामों के साथ सेवा करने में सक्षम हैं, तो उनके बारे में और जानें और इन चीजों को करने के लिए और अवसरों की तलाश करें। अन्य लोगों को खोजें जो उन कार्यों में से किसी एक में अच्छे मालूम होते हैं, जो आप कर सकते हैं और करना पसंद करते हैं। उनसे सीखें कि इस तरह से बेहतर सेवक कैसे बनें। यह क्षमताए परमेश्वर को समर्पित करें और उनका उपयोग करें। जब आप यीशु और परमेश्वर के परिवार में दूसरों की सेवा करते हैं तो आप अपने पूरे जीवन में उन्ती करते रहेंगे।

क्या परमेश्वर चाहता है कि हम आज भाषाएँ में बोलें? आध्यात्मिक उपहारों के बारे में बात करते समय हमें उन उपहारों को शामिल करना चाहिए जो अक्सर मसीहीयों के बीच भ्रम या विभाजन का कारण बनते हैं। इनमें से एक अन्य भाषाओं का उपहार है जो प्रारंभिक चर्च में कुछ को दिया गया उपहार था लेकिन आज हमारे लिए नहीं है।

बाइबल सिखाती है कि प्रत्येक विश्वासी उद्धार के समय **पवित्र आत्मा से भर जाता है** (1 कुरिन्थियों 12:3; 6:19; इफिसियों 4:4-5; रोमियों 5:5)। पवित्र आत्मा का बिना उनमें वास किए कोई भी बचाया नहीं जा सकता (यूहन्ना 7:37-39; 14:16-17; 1 कुरिन्थियों 6:19-20)। वहाँ से हमारा पवित्र आत्मा को अधिक प्राप्त करने की बात नहीं है बल्कि पवित्र आत्मा का हम से अधिक प्राप्त करने की बात है! जब हम पूरी

तरह से समर्पण करते हैं और एक पवित्र जीवन जीते हैं तो वह हमें भरता है और हमारे मध्ययम से कार्य करता है।

फिर, प्रेरितों के काम 2, 8, 10 और 19 के बारे में क्या, जब पवित्र आत्मा उन पर उतरा जो पहले से ही विश्वासी थे? प्रेरितों के काम 2 एक बार का, गैर-दोहराए जाने वाला अनुभव है (प्रेरितों के काम 8, 10 या 19 में भी दोहराया नहीं गया)। जैसे ट्रिनिटी के दूसरे व्यक्ति ने एक ही बार होने वाली घटना के रूप में कुंवारी के माध्यम से दुनिया में एक बार प्रवेश किया, उसी तरह तीसरे व्यक्ति ने एक ही बार होने वाली घटना के रूप में इस अनूठे तरीके से अपना प्रवेश किया। जब यीशु महिलाओं, प्रेरितों और पौलूस या पटमोस टापू पर यहुना के लिए आपने प्रकाशन में पुनरुत्थान के बाद पृथ्वी पर वापस आया, तो उसने कभी भी कुंवारी-में-एक बार होने वाली प्रिक्रिया में प्रवेश को दोहराया नहीं। प्रेरितों के काम 2, भी, गैर-दोहराने योग्य है।

प्रेरितों के काम 2 पुराने नियम की व्यवस्था से एक संक्रमण है, जब पवित्र आत्मा कभी-कभी केवल कुछ विश्वासियों में वास करता था , नए नियम के अनुग्रह के लिए, जब पवित्र आत्मा उद्धार के बाद उनके पूरे जीवन के लिए सभी विश्वासियों में वास करता है। प्रेरितों ने पहले ही यीशु के दावों को स्वीकार कर लिया था और उद्धार पा लिया था। **प्रेरितों के काम 8** में हम इसी सत्य को आधे यहूदियों और आधे अन्यजातियों पर लागू होते हुए देखते हैं, **प्रेरितों के काम 10** में फिलिस्तीन में अन्यजातियों पर, और **प्रेरितों के काम 19** में फिलिस्तीन के बाहर अन्यजातियों पर लागू होता देखते हैं। वे प्रेरितों के काम 2 के समान थे, यह दिखाने के लिए कि यहूदी और अन्यजाति अब एक ही देह में समान थे क्योंकि प्रत्येक के साथ एक ही बात हुई थी। प्रत्येक ने पुराने नियम की व्यवस्था से नए नियम के अनुग्रह में हुए परिवर्तन दिखाया।

परिवर्तन का एक निश्चित समय होना ही था, यह दर्शाने के लिए कि परिवर्तन किया गया था और उन विश्वासियों ने स्वीकार कर लिया था। फिर भी, जो हुआ वह यह दिखाने के लिए काफी अलग था कि यह प्रेरितों के काम 2 का दोहराया जाना नहीं था। आग या हवा की लपटें नहीं थीं। यही वह समय था जब प्रेरितों के काम 2 से मिलता-जुलता कुछ भी प्रेरितों के काम में हुआ, और यह प्रत्येक नए समूह के लिए केवल एक बार हुआ जब सुसमाचार यरूशलेम से फैल गया। अन्य सभी ने उद्धार के समय तुरंत पवित्र आत्मा प्राप्त किया।

भाषाएँ आत्मा के बपतिस्मे का प्रमाण नहीं है। कई लोगों ने पवित्र आत्मा प्राप्त की, लेकिन अन्य भाषाएं नहीं: पिन्तेकुस्त के दिन 3,000 (प्रेरितों के काम 2:38-41), प्रारंभिक चर्च के विश्वासियों (प्रेरितों के काम 4:31), सामरी (प्रेरितों के काम 8:14-17), पौलूस (प्रेरितों के काम 9:17) -18), यहुना बप्जॉतिस्मा देने वाले ने (लूका 1:15-16), यीशु (लूका 3:21-22; 4:1,14,18,21) और कई अन्य (प्रेरितों के काम 4:8,31; 6:5; 7:55; 11:24; 13:9,52)। तीतुस या 1 तीमुथियुस में नेतृत्व गुणों में अन्यभाषा में बोलने का उल्लेख कभी नहीं किया गया है। बाइबल स्पष्ट करती है कि आज्ञाकारिता पवित्र आत्मा के वास करने का प्रमाण है, अन्य भाषाओं में नहीं (इफिसियों 5:18f)।

प्रेरितों के काम और कुरिन्थ की भाषाएँ समान थीं। एक ही ग्रीक शब्द ('ग्लोसा' का अर्थ 'जीभ, बोलने के लिए, भाषा') हमेशा ज्ञात विदेशी भाषाओं के लिए प्रयोग किया जाता है और दोनों यरूशलेम (प्रेरितों के काम 2:6-11; प्रेरितों के काम 10:46) और कुरिन्थ (1 कुरिन्थियों 14) में उपयोग किया गया है। :21; 12:10)। प्रेरितों के काम में यह स्पष्ट है कि श्रोताओं ने उन लोगों द्वारा बोली जाने वाली ज्ञात भाषाएँ सुनीं जिन्हें भाषा का कोई पूर्व ज्ञान नहीं था। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि कुरिन्थ ने जो अनुभव किया वह अलग था। यह केवल कुरिन्थ की कलीसिया है जिसका उल्लेख अन्यभाषाओं के उपयोग के रूप में

किया गया है, और तब कई सुधारों की आवश्यकता थी क्योंकि यह एक बहुत ही शारीरिक कलीसिया थी (1 कुरिन्थियों 3:1-3)।

अन्यभाषाओं का उद्देश्य यहूदियों को यह दिखाना था कि परमेश्वर का न्याय उन पर था। उन्हें अन्यजातियों में परमेश्वर का संदेश फैलाना था, लेकिन असफल रहे। परमेश्वर यह दिखाएगा कि वह अन्यजातियों द्वारा अपना वचन उनके पास लाकर उनके लिए उनका न्याय कर रहा था। यह यशायाह 28:9-12 में भविष्यवाणी की गई थी; 33:19; व्यवस्थाविवरण 28:49; और यिर्मयाह 5:15।

पौलूस ने कहा कि अन्य भाषाओं ने उन भविष्यवाणियों को पूरा किया (1 कुरिन्थियों 14:21-22)। जब यहूदियों ने इस चिन्ह पर ध्यान नहीं दिया और पश्चाताप नहीं किया, तो परमेश्वर का न्याय उन पर 70 ईस्वी में आया जब यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया था। 70 ईस्वी के बाद प्रारंभिक चर्च में अन्य भाषाओं के इस्तेमाल का कोई दस्तावेज नहीं है। चिन्हों को उनके मतलब से पहले रखा जाता है, उसके बाद नहीं! पौलुस ने कहा (1 कुरिन्थियों 13:8-12) कि अन्य भाषाएं "शांत की जाएंगी।"

यूनानी शब्द, 'पौओ', मध्य स्वर में है; वे अपने आप रुक जाएंगी और फिर से शुरू नहीं होंगी । प्रेरितों के काम से लेकर वर्तमान तक इतिहास बहुत ही कम, बहुत ही अलग, बहुत मामूली भाषा के जाहिर होने को दर्ज करता है। ये समूह अक्सर अपने विश्वासों में विधर्मी थे। जाहिर है भाषाएँ बंद हो गई। यह कोई संकेत नहीं है कि वे फिर कभी शुरू होंगी , क्योंकि उनका उद्देश्य पूरा हो गया है। जब योएल 2 क्लेश के बाद पवित्र आत्मा के वापस आने के बारे में बात करता है, तो अन्य भाषाओं का कोई उल्लेख नहीं करता है!

फिर उन लोगों के बारे में क्या जिनके पास व्याख्या का उपहार है? सबसे पहले, इसके लिए ग्रीक शब्द किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो स्पेनिश से जर्मन जैसी ज्ञात भाषाओं की व्याख्या करता है। विदेशी भाषाओं का प्रयोग उपस्थित यहूदियों को परमेश्वर का न्याय दिखाने के लिए था। संदेश की सामग्री परमेश्वर का सुसमाचार थी, जिसे यहूदियों को फैलाना चाहिए था। चूँकि अन्यजातियों के लिए एक अज्ञात भाषा में बोलने का कोई मतलब नहीं होगा, पौलुस ने कहा कि जब उपहार का उपयोग किया जाऐ तो एक दुभाषिया मौजूद होना चाहिए था (1 कुरिन्थियों 14:26-28)। यह कमजोर और अपरिपक्व कुरिन्थियों के विश्वासियों (14:20-22) के लिए आवश्यक था जो परमेश्वर की सच्चाई से अनजान थे (12:13)। इसे कम से कम स्तर पे (14:6-12) रखा जाना था क्योंकि यह एक छोटा वरदान था (1 कुरिन्थियों 14:4)। इस्राएल पर न्याय के संकेत के रूप में जिसका जिक्र यशायाह 28:9-12 में है, स्वयं पौलुस यहूदी सेवाओं में अज्ञात भाषाओं में बोलने की अपनी क्षमता का उपयोग करता था (1 कुरिन्थियों 14:36-39) ।

इन मानदंडों को आज अन्य भाषाओं में लागू करना (ज्ञात विदेशी भाषा, यहूदियों पर परमेश्वर के न्याय को दर्शाना, केवल उपस्थित यहूदियों के साथ प्रयोग किया जाता है, एक कम/मामूली उपहार के रूप में देखना है जिसका उपयोग न्यूनतम रखा जाना था, आदि) दर्शाता है कि जो आज हो रहा है वो उससे अलग है जो तब हुआ था।

जुबाने कोई स्वर्गीय भाषा नहीं है। यूनानी शब्द यह स्पष्ट करता है कि वे एक ज्ञात भाषा हैं (प्रेरितों के काम 2:6-11; 1 कुरिन्थियों 14:21; 12:10)। यह रोमियों 8:26 में पवित्र आत्मा के मध्यस्थता के 'आन्हे भरने ' से अलग है क्योंकि उन्हें स्पष्ट रूप से अवर्णनीय (बोले जाने में सक्षम नहीं) कहा जाता है। "स्वर्गदूतों की जुबाने " (1 कुरिन्थियों 13:1) एक अतिशयोक्ति (एक बिंदु बनाने के लिए अत्यधिक जोर) है जैसे "पहाड़ों को हिलाने के लिए विश्वास।" इसके अलावा, जब स्वर्गदूत बाइबल में बात करते थे, तो वह हमेशा उन लोगों की जानी-पहचानी भाषा में होता था जिनसे वे बात कर रहे होते थे।

जुबाने कोई निजी प्रार्थना भाषा नहीं है। सभी आत्मिक उपहार दूसरों के लिए कलीसिया की उन्नति के लिए दिए जाते हैं, ना कि जिसके पास वरदान है उसके लिए (1 कुरिन्थियों 12:7, 12; 14:19, 27), इसलिए एक दुभाषिए को हमेशा कुरिन्थ में उपस्थित रहना पड़ता है (1 कुरिन्थियों में (1 कुरिन्थियों 12:7, 12); कुरिन्थियों 14:26-28)। जब भी बाइबल में अन्यभाषाओं का वरदान दिया गया था, वह एक समूह को दिया गया था, एक व्यक्ति को नहीं। यह हमेशा एक समूह में उपयोग किया जाता था, निजी उपयोग का कोई उदाहरण दर्ज नहीं है। जीभ को वक्ता के द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए, ना कि उसके नियंत्रण से बाहर होनी चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:26-33; गलातियों 5:23; याकूब 3 1-12)। साथ ही, अन्यभाषाओं को अविश्वासियों के लिए एक चिन्ह के रूप में होना था, विश्वासियों के लिए नहीं (1 कुरिन्थियों 14:22)। यीशु ने स्वयं उन प्रार्थना शब्दों के बारे में चेतावनी दी जिन्हें हम नहीं समझते (मत्ती 6:7)। पौलुस ने कहा कि जब उसने प्रार्थना की तो उसने जो कुछ कहा, वह हमेशा उसे समझता था, भले वो अन्य भाषाओं में भी क्यों ना था (1 कुरिन्थियों 14:15)। यह पूछे जाने पर कि प्रार्थना कैसे करनी है, यीशु ने प्रभु की प्रार्थना दी, जुबाने नहीं।

आज अन्य भाषा में बोलने के खतरे। पौलूस शैतान की क्षमता के बारे में चेतावनी देता है कि वह इसे नकली बना सकता है (1 कुरिन्थियों 12:2-3) जैसा कि आज उसने अन्य धर्मों और पंथों में किया हुआ है। जीभ को एक घटिया उपहार कहा जाता है क्योंकि यह आत्म-केंद्रित है (1 कुरिन्थियों 14:4) और वक्ता और भावनाओं के आत्म-सुधार पर जोर देने की ओर ले जाता है जो लोगों को रसते से भटका सकता है (2 कुरिन्थियों 6:11- 12; रोमियों 16:17-18)। हमें कहा गया है कि हम समझ के साथ प्रार्थना करें (1 कुरिन्थियों 14:13-17) और अपने आत्मिक वरदान को नियंत्रित करें (1 कुरिन्थियों 14:26-33)। परमेश्वर आपनी मर्जी से चुनता है कि कौन सा उपहार किसे देना है (1 कुरिन्थियों 12:7,11,18,28)। हमें किसी विशेष उपहार की तलाश करने के लिए नहीं कहा गया है क्योंकि सभी उपहार समान हैं और कोई भी दूसरों से बड़ा नहीं है (1 कुरिन्थियों 12:31; 14:1-5)। भाषा बोलना आध्यात्मिकता का विकल्प बन सकता है (1 कुरिन्थियों 14:26-28)। इससे भी बदतर, यह उन लोगों द्वारा झूठी सुरक्षा उत्पन्न करा सकता है, जो इस पर विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर उन्हें प्यार करता है और उन्हें स्वीकार करता है। बहुत से लोग जो "भाषा बोलने" का अभ्यास करते हैं, वे मुक्ति की शाश्वत सुरक्षा में विश्वास नहीं करते हैं, इसलिए उनका अन्यभाषा में बोलना परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने का उनका प्रमाण बन सकता है। हमारा विश्वास क्रूस पर यीशु के कार्य में होना चाहिए, ना कि हमारी 'भाषाओं' में बोलने की क्षमता में।

क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि आज हर कोई चंगा हो जाए? एक और उपहार जो आज समस्याओं का कारण बनता है, वह है चंगाई का उपहार। आज ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि यीशु ने ना केवल क्रूस पर पाप के लिए भुगतान किया, बल्कि यह कि उसने हमारी बीमारी के लिए भी भुगतान किया।

वे कहते हैं कि प्रत्येक चंगाई विश्वास से प्राप्त होती है, यदि आपके पास पर्याप्त विश्वास है तो आप इसे प्राप्त करते ही चंगे हो जाएंगे। विश्वास की कमी तब चंगाई के लाभों के नुकसान का कारण बनती है। वह दावा करते है कि कुछ लोग विशेष रूप से चंगाई लाने में उपहारित होते है और इसके ताहित जो उनके पास आते हैं वह उन्हें चंगा कर सकते हैं। वे कहते हैं कि परमेश्वर ने बाइबल में चमत्कार किए और वह आज भी चमत्कार करने वाला परमेश्वर है।

इस बारे में क्या? क्या ये सच है? यह सिर्फ एक अतिरिक्त मुद्दा नहीं है बल्कि हमारे उद्धार और मसीही जीवन में बहुत केंद्रीय मुद्दा है। क्या परमेश्वर की संप्रभुता या मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा अंतिम निर्णायक कारक है? यह परमेश्वर की संप्रभुता ही होनी चाहिए। यीशु के लिए जीने का मकसद हमारे उद्धार को खोने का डर नहीं होना चाहिए। यीशु के लिए जीने का लक्ष्य समस्या -मुक्त जीवन नहीं होना चाहिए। दर्द

और पीड़ा का पर्याप्त 'विश्वास' से सामना करना नहीं है ताकि परमेश्वर इसे हटा दें। यदि इसे दूर नहीं किया जाता है तो हम असफलता और अपराधबोध की भावनाओं के साथ जीते हैं और मान लेते हैं कि पर्याप्त विश्वास ना होना हमारी गलती है। "विश्वास से चंगाई" लाने वालों' के इन दावों के बारे में क्या? बाइबल क्या कहती है?

क्या चंगाई का उपहार आज के लिए भी है? जबकि यह सच है कि यीशु और प्रेरितों ने चंगा किया था, यह प्रमाणित करने के लिए एक चिन्ह के रूप में किया गया था कि वे लोग परमेश्वर की ओर से थे (मत्ती 12:39)। यह परमेश्वर का तरीका था कि आसपास के सभी नकली लोगों के बजाय लोग उनकी बात सुनें। जब वे पूरी तरह से प्रमाणित हो गए, तो संकेत का कोई कारण ही नहीं रह गया। 35 ईस्वी में सभी चंगे हो गए थे लेकिन 60 ईस्वी तक कुछ नहीं हुए थे (इपफ्रुदीतुस चंगा हो गया था, पौलूस का मांस का कांटा ठीक नहीं हुआ था, आदि)। तब 67 ईस्वी तक बहुत कम लोग चंगे हो रहे थे (त्रुफिमुस मिलेटस पर छोड़ दिया गया था क्या वह ठीक हो गया था? हम नहीं जानते। तीमुथियुस का पेट ठीक नहीं हुआ था, आदि)। यरूशलेम, जो कई प्रारंभिक चमत्कारों का दृश्य है , स्तिफनुस को पत्थरवाह किए जाने के बाद उसमें एक भी चमत्कार नहीं हुआ था। लोगों के पास सबूत थे लेकिन उन्होंने इसे खारिज कर दिया। नए नियम की सबसे पुरानी पुस्तक, याकूब की पुस्तक कहती है कि यदि कोई बीमार है तो हमें उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए (याकूब 5:14)।

क्या हमें आज चमत्कारों को बाइबल के समय की तरह देखना चाहिए? वास्तव में, यदि आप बाइबल में सभी चमत्कारों को सूचीबद्ध करते हैं, तो आप पाएंगे कि उनमें से लगभग सभी तीन काल -आवधियों के लिए उपयुक्त हैं। वे पूरे इतिहास में समान रूप से फैले हुए नहीं हैं, लेकिन मूसा/यहोशू, एलिय्याह/एलीशा और यीशु/प्रेरितों के समय में समूहबद्ध हैं। इनमें से प्रत्येक समय में एक नई कठिनाई विकसित हुई थी इसलिए परमेश्वर ने एक नए संदेशवाहक के माध्यम से एक नया संदेश भेजा जिसको उसने चमत्कारों ("चिन्हों") द्वारा प्रमाणित किया। चमत्कारों का एक और समय आ रहा है, जिसे क्लेश कहा जाता है।

क्या चंगाई के लिए विश्वास एक आवश्यकता है? यीशु ने चंगाई के लिए विश्वास को एक आवश्यकता नहीं बनाया। जिन्हें उसने चंगा किया उनमे से बहुतों का उनमें विश्वास नहीं था। कुण्ड पे बीमार व्यक्ति को भी यह नहीं पता था कि वह कौन है। सूखे हाथ वाला और अर्दंगी व्यक्ति को उपस्थित धर्मगुरुओं के लिए एक चिन्ह के रूप में चंगा किया गया; उन्होंने चंगा होने के लिए नहीं कहा। जिस अपंग को पतरस और पौलुस ने मंदिर के बाहर चंगा किया, उसने कोई विश्वास नहीं दिखाया। निःसंदेह, जिन राक्षसों को छुड़ाया गया था और जिन्हें मृतकों में से वापस लाया गया था, उन्होंने विश्वास का प्रयोग नहीं किया था। फिर कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें दृढ़ विश्वास था, लेकिन वे चंगे नहीं हुए: स्तिफनुस, पौलूस , तीमुथियुस, अय्यूब, दाऊद का पुत्र, एलीशा, आदि।

क्या आज भी 'चंगाई' बाइबल के समय की तरह ही है? आज के 'चंगा करने वालों' को यीशु और प्रेरितों के समान मानदंडों को पूरा करना चाहिए, यह दावा करने के लिए कि वे वही कर रहे हैं जो उनके द्वारा किया गया था। यीशु और प्रेरितों ने किसी भी समय और किसी भी स्थान को एक शब्द या स्पर्श से चंगा किया। कोई विशेष बैठक नहीं की , कोई मंत्र या संगीत नहीं कीया, कोई चालबाज़ी नहीं थी, कुछ भी नहीं था। क्या आज के "विश्वास से चंगाई वाले" अस्पताल के हॉल में चलते हैं और हर कमरे को खाली करते हैं? यीशु और पतरस ने तो ऐसा किया था । साथ ही, बाइबल के चमत्कार तुरन्त, पूरी तरह से, धीरे-धीरे या धीरे-धीरे नहीं किए गए और यह कभी भी खोऐ नहीं गए। 'दावा' किये जाने के लिए या हारने के लिए कोई चंगाई नहीं थीं। सब ठीक हो गए। सभी, 100%, चाहे जरूरत कोई भी थी ठीक हो गए थी।

जैविक रोग ठीक हो गए: अंग तुरंत वापस बढ़ गए, चलने के लिए पर्याप्त शक्ति , आंखें खुल गईं, कुष्ठ रोग तुरंत चला गया और स्वस्थ चरम उत्पन हुआ । मृतकों को जीवत किया गया था। आज का विश्वास से चंगाई इन मानदंडों को पूरा करने के करीब भी नहीं आता है।

क्या परमेश्वर चंगा करता है? हाँ, एक प्रभुता सम्पन्न परमेश्वर हमेशा चंगा कर सकता है। वह हमेशा चंगा करने में सक्षम है, लेकिन वह हमेशा इसे करना नहीं चाहता है। चंगाई की गारंटी नहीं है। चंगाई हमारे पर्याप्त विश्वास पर आधारित नहीं है। यीशु और उसके प्रेरितों द्वारा चमत्कार एक अदृश्य आत्मा को चंगा करने वाले को प्रमाणित करने के लिए एक संकेत के रूप में किए गए थे। परमेश्वर चंगा कर सकता है और करता है, लेकिन वह ऐसा करने के लिए दूसरों को उपहार नहीं देता है, ना ही वह यह कहता है कि सभी को चंगा किया जाना चाहिए।

जब हमें चंगाई की आवश्यकता हो तो हमें क्या करना चाहिए? जब हम बीमार होते हैं तो सबसे पहले यह सुनिश्चित करना अच्छा होगा है कि यह पाप या अवज्ञा के लिए नहीं है। यदि कोई पाप है, तो हो सकता है कि परमेश्वर बीमारी का उपयोग उसे चिन्हत करने के लिए कर रहा हो। इसका अंगीकार करें और परमेश्वर क्षमा करेगा और फिर उस बीमारी का उपयोग भलाई के लिए करेगा (रोमियों 8:28)। परमेश्वर से इसे चंगा करने के लिए प्रार्थना करना ठीक है, लेकिन, अगर वह उसकी इच्छा है तो। हमें हमेशा उसकी इच्छा के अधीन रहना है, यह माँग नहीं करना है कि वह वही करे जो हम चाहते हैं। 3 इब्रानी लड़कों की तरह, याद रखें कि परमेश्वर हमेशा चंगा करने या उद्धार करने में सक्षम है, लेकिन हमारे लिए अज्ञात कारणों से, वह हमेशा चंगा करने या उद्धार करने के लिए तैयार नहीं है (दानिय्येल 3:16-20)। उसे अपनी महिमा के लिए दर्द और पीड़ा का उपयोग करने के लिए कहें ताकि हम और अन्य लोग उसके प्रावधान और शांति के माध्यम से उसकी महानता को देख सकें। बीमारी को अपने आध्यात्मिक विकास का हिस्सा बनाने के लिए कहें ताकि आप उस पर अधिक भरोसा करें और यीशु की तरह बनें। उपलब्ध सर्वोत्तम संसाधनों का उपयोग करें: आहार, आराम, व्यायाम और चिकित्सा सहायता। समझें कि सभी उपचार अंततः परमेश्वर से आते हैं। परिणाम उसकी इच्छा पर छोड़ दें।

भण्डारीपन शब्द "भण्डारीपन" किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो घर या किसी अन्य व्यक्ति की संपत्ति का प्रबंधन करता है। एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचिए जो किसी और की संपत्ति से भरे जहाज का कप्तान हो। उसे इन चीजों का वितरण और उपयोग उसी तरह से करना चाहिए जैसा मालिक चाहता है। अपने स्वयं के उपयोग के लिए भी उसे पर्याप्त की अनुमति है। यूसुफ मिस्र में पोतीपर की संपत्ति का भण्डारी था और उनका बुद्धिमानी से उपयोग करता था इसलिए उसके स्वामी को लाभ होता था। हम सभी उसके भण्डारी हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है। हमारे पास जो कुछ भी है वह सब उसी का है: हमारा धन, संपत्ति, कौशल, प्रतिभा, योग्यता, स्वास्थ्य और समय। जो कुछ हमारे पास है यह सब उसका है और हमें ईसका उपयोग उसी तरह करना है जैसे वह निर्देश देता है।

भण्डारीपन से तात्पर्य है कि हम अपने समय और क्षमताओं का उपयोग कैसे करते हैं, ना कि सिर्फ हमारी भौतिक संपत्ति। यह उचित आराम करने, स्वस्थ भोजन खाने और खुद को अच्छे शारीरिक आकार में रखने के लिए पर्याप्त व्यायाम करने से हमारे स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल करने का भी उल्लेख करता है। परमेश्वर ने हमें एक शरीर दिया है, जिसमें रहना है और हमें इसकी अच्छी तरह से देखभाल करनी चाहिए ताकि हम जब तक जीवित रहें तब तक उसकी सेवा कर सकें।

पुराने नियम में लोगों को आदेश दिया गया था कि वे अपनी भौतिक संपत्ति का दसवां हिस्सा 10%, पुरोहितों और हैकल का समर्थन करने के लिए दें । नए नियम में हमें दशमांश देने की आज्ञा नहीं दी गई है, परन्तु जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है, उसके अनुपात में हमें देना है (व्यवस्थाविवरण 16:17; 2

कुरिन्थियों 8:1-7, 11)। मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर को देने के लिए न्यूनतम 10% निर्धारित करना चाहिए। किसी ने बताया कि परमेश्वर यह नहीं देखता कि हम क्या देते हैं बल्कि यह देखता हैं कि हम अपने लिए कितना रखते हैं! हमें डर या अपराधबोध से नहीं, बल्कि अपने दिलों में प्यार और प्रशंसा/सराहना से देना है। हमारा रवैया यह होना चाहिए कि जो कुछ उसका है हम उसे वापस दे रहे हैं क्योंकि उसने हमें दिया है। हम जो राशि देते हैं उससे कहीं अधिक परमेश्वर हमारे हृदय के व्यवहार पर नज़र रखता है (मरकुस 12:41-44)।

धर्मग्रंथों के अनुसार, मसीहीयों को पृथ्वी पर मुक्तिदाता के उद्देश्य की उन्नति के लिए खुशी-खुशी, नियमित रूप से, व्यवस्थित रूप से, आनुपातिक रूप से और उदारता से अपनी संपत्ति का योगदान देना चाहिए। (उत्पत्ति 14:20; लैव्यव्यवस्था 27:30-32; व्यवस्थाविवरण 8:18; मलाकी 3:8-12; मत्ती 6:1-4, 19-21; 25:14-29; लूका 12:16-21, 42 16:1-13; प्रेरितों के काम 2:44-47; 5:1-11; 17:24-25; 20:35; 1 कुरिन्थियों 4:1-2; 6:19- 20; 16:1-4; 2 कुरिन्थियों 8-9; 12:15; फिलिप्पियों 4:10-19)

याद रखने वाली एक और बात यह है कि बाइबल हमें कर्ज में ना जाने की आज्ञा देती है (रोमियों 13:8; नीतिवचन 11:15; भजन संहिता 37:21)। पैसा खर्च ना करें जो आपके पास नहीं है! इससे पहले कि आप पैसा खर्च करें, ज्ञान के लिए प्रार्थना करें। आपका पैसा परमेश्वर से आता है और उसकी महिमा के लिए ही इस्तेमाल किया जाना है। आप इसे केवल एक बार खर्च कर सकते हैं इसलिए सुनिश्चित करें कि आप इसे बुद्धिमानी से उपयोग कर रहे हैं।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहीयों को उनके आध्यात्मिक उपहारों को विकसित करने और चर्च में दूसरों की सेवा करने में कैसे मदद कर सकता हूं?

आत्मिक वरदानों और भण्डारीपन के बारे में इस जानकारी से व्यक्ति को सिखाएं। उन्हें यह समझने में मदद करें कि वे कैसे काम करते हैं और उनके पास क्या उपहार हो सकते हैं। उन्हें इस प्रक्रिया को शुरू करने में कुछ समय लग सकता है, इसलिए आप इस विषय में धीरे-धीरे आगे बढ़ सकते हैं। अपने आप को एक उदाहरण के रूप में प्रयोग करें।

अन्य भाषा में बोलने और चंगाई के बारे में जानकारी पूरक है और एक नए मसीही के सामने ना लायें जब तक ऐसा करने का कोई ठोस कारण ना हो। शायद उन्हें ये बातें सिखाई गई हैं या दूसरे उन्हें इस क्षेत्र में प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं। अगर ऐसा है तो इस सामग्री को अभी सिखाएं। हालाँकि, यदि आप इसकी आवश्यकता होने तक प्रतीक्षा कर सकते हैं, तो ऐसा करें। उनके लिए सीखने को और बहुत सी महत्वपूर्ण चीजें हैं जो इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

14. अपने विस्तारित परिवार को जानना

मेरा चर्च क्या विश्वास करता है और क्या अब्यास करता है?

परमेश्वर अधिक परिपक्व लोगों वाले परिवारों में बच्चों को उनकी देखभाल किये जाने और उन्हें प्रशिक्षित किये जाने के लिए रखता है। एक बच्चा अपने आप नहीं जी सकता, उसे बड़े की मदद मिलनी चाहिए। वही बात आत्मिक रूप से भी सत्य है (इब्रानियों 10:25)। नए विश्वासियों को बढ़ने में मदद करने के लिए पुराने विश्वासियों की आवश्यकता होती है। सभी विश्वासियों को बढ़ते रहने के लिए एक दूसरे की आवश्यकता है। यहां तक कि बड़े, परिपक्व वयस्कों को भी मदद, समर्थन, सुरक्षा, प्रोत्साहन, संगति और

आनंद के लिए परिवार में दूसरों की आवश्यकता होती है। यह सांसारिक परिवारों के साथ-साथ आध्यात्मिक परिवारों में भी सच है। परमेश्वर हमारे आत्मिक परिवारों को 'चर्च' कहता हैं।

विश्वव्यापी कलीसिया ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद 'चर्च' (एक्लेसिया) से किया गया है, का अर्थ है "एक बुलाया गया समूह।" इसका उपयोग स्थानीय सभा या लोगों के जमावड़े के लिए किया जाता था। नए नियम में यह उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने यीशु के पुनरुत्थान के साथ शुरू होने और मेघारोहण के साथ समाप्त होने वाली समयावधि के दौरान यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है। यह मसीह की दुल्हन है। जो लोग यीशु के पुनरुत्थान से पहले या मेघारोहण के बाद यीशु को स्वीकार करते हैं, वे छुड़ाए गए इस्राएल का हिस्सा होंगे, ना कि मसीह की देह का। कलीसिया का वास्तव में परमेश्वर की योजना और कार्यक्रम में एक विशेष स्थान है। वह मुखिया है। हम उसकी देह हैं। वह दूल्हा है। हम दुल्हन हैं। हम परमेश्वर के विशिष्ट लोग हैं, इस्राएल का हिस्सा नहीं हैं और परमेश्वर की योजना में इस्राएल की जगह नहीं ले रहे हैं। चर्च पुनरुत्थान से लेकर मेघारोहण तक हर देश, हर उम्र और पृष्ठभूमि के लोगों से दुबारा जन्में लोगों से बना है। चर्च एक इमारत, संप्रदाय या लोगों का स्थानीय समूह नहीं है, बल्कि हर एक जो चर्च युग के दौरान उद्धार के लिए यीशु के पास आता है।

स्थानीय कलीसिया फिर भी, बाइबल स्थानीय कलीसिया ("इकट्ठा होना, इकट्ठा होना") के साथ-साथ विश्वव्यापी कलीसिया के बारे में भी बात करती है।सभी स्थानीय चर्च विश्वव्यापी चर्च का हिस्सा हैं। स्थानीय चर्च विश्वासियों का एक समूह है, सिर्फ दूसरे रूप में बात यह एक इमारत या संप्रदाय है। किसी ने कहा कि चर्च पापियों के लिए एक अस्पताल है, संतों के लिए प्रदर्शन का मामला नहीं है। चर्च केवल कुछ चुनिंदा यात्रियों को बचाने के लिए एक जहाज़ नहीं है या स्वर्ग के तट पर सहज यात्रियों को ले जाने के लिए एक नौका नहीं है। यह एक अन्तकाल जीवन बीमा कंपनी नहीं है, ना ही यह एक सामाजिक समूह है जो कुछ लोगों का स्वागत करता है और अन्य सभी को बाहर करता है। बल्कि, चर्च पाप-दुर्घटनाग्रस्त और नाश होने वाली आत्माओं के बचाव के लिए एक जीवनरक्षक नौका है। यह एक ऐसा परिवार है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति से प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम और सेवा की उम्मीद की जाती है। यह पृथ्वी पर यीशु मसीह का प्रतिनिधि, 'शरीर' है, जो उसकी आत्मा को दर्शाता है और उसकी इच्छा द्वारा नियंत्रित है।

स्थानीय चर्च का उद्देश्य दो पहलु वाला है। यह उन लोगों के पास जाना है जिनके पास कोई नहीं गया है और उनके साथ मुक्ति की योजना साझा करना है। यह यीशु की खुशखबरी को एक खोई और मरती हुई दुनिया में ले जाना होता है। यह एक भिखारी है जो दूसरे भिखारी को बता रहा है कि रोटी कहाँ मिलेगी।

चर्च भी अपने सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूद है। प्रत्येक अंग को स्वस्थ तरीके से कार्य करने के लिए एक शरीर को अपने अंगों की जरूरतों को पूरा करने की आवश्यकता होती है। यह शिक्षण (मनुष्य से संचार करने वाला परमेश्वर), पूजा (ईश्वर से संचार करने वाला मनुष्य) और संगति (मनुष्य से संचार करने वाला मनुष्य) के बीच संतुलन लाता है। वे सभी अवश्य उपस्थित होंने चाहिए । (प्रेरितों के काम 2:42)। हालाँकि, परमेश्वर के वचन को सिखाना और सीखना (परमेश्वर से सुनना) पहले आना चाहिए। भेड़ों को खिलाना पास्टर और कलीसिया के अगुवों की मुख्य जिम्मेदारी है (इफिसियों 4:11-12, यूहन्ना 21:17, 1 कुरिन्थियों 1:21)

पवित्र आत्मा कलीसिया के लिए शक्ति का स्रोत है, जिसे यीशु ने स्वर्ग में अपने स्वर्गारोहण के बाद भेजा था। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के लिए कार्य करने के लिए आवश्यक ज्ञान, शक्ति, उपहार, मार्गदर्शन, दिशा और अनुग्रह देता है।

चर्च शाशनीय समिति के बारे में बाइबल कोई सख्त आदेश नहीं देती है। आध्यात्मिक अगुए (एल्डर/पास्टर/बिशप) थे और जिन्होंने चर्च के वित्त और संपत्ति (डेकन) की देखभाल करने की जिम्मेदारी को विभाजित किया।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहीयों को कलीसिया और उसके महत्व के बारे में सीखने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

निःसंदेह, एक नए विश्वासी को जल्द से जल्द कलीसिया में उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए। जब तक आप इस अध्याय तक पहुंचेंगे तब तक वे चर्च से परिचित हो जाएंगे और साथ ही साथ कि कैसे काम करता है, इस तरह उन्हें इन चीजों का एक आम विचार मिल जायेगा। यह कैसे संचालित होता है, इस बारे में उनके पास शायद बहुत सारे प्रशन होंगे। सुनिश्चित करें कि वे इस अध्याय में प्रस्तुत जानकारी को समझते हैं। यदि वे उन्हें पहले से नहीं जानते हैं तो उनका परिचय कलीसिया के अगुवों से कराएँ। एक धर्मी स्थानीय चर्च में शामिल होने के महत्व पर जोर दें। यदि वे किसी चर्च में नहीं जा रहे हैं या यदि वे नियमित रूप से नहीं जाते हैं तो पता करें कि ऐसा क्यों है और उन्हें चर्च जाने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि वे स्वयं उपस्थित नहीं हो रहे हैं तो उन्हें अपने साथ आने के लिए आमंत्रित करें और उन्हें अपने साथ चर्च ले आएं।

15. दूसरों के लिए नया जीवन लाना

मैं दूसरों को उद्धार के बारे समझने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

बच्चे बड़े होकर वयस्क होते हैं और फिर उनके अपने बच्चे होते हैं। जैसे-जैसे एक मसीही आध्यात्मिक रूप से बढ़ता है, उनके लिए यह स्वाभाविक है कि वे नए जन्म के द्वारा भी दूसरों को परमेश्वर के राज्य में लाएँ। हमें अपने विश्वास और इसके कारण को दूसरों के साथ साझा करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए (1 पतरस 3:15)। हमें नमक और ज्योति होना चाहिए (मत्ती 5:13-16)।

यीशु ने अपने अनुयायियों को यह सुसमाचार सुनाने की आज्ञा दी कि क्षमा उसी में है (लूका 24:45-49)। पौलूस ने अपने पाठकों को ऐसा ही करने का निर्देश दिया (2 तीमुथियुस 4:1-6)। जब हम ऐसा करते हैं तो यीशु हमारे साथ रहने और हमें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है (मत्ती 10:32; 1 शमूएल 2:30)।

हम दूसरों के साथ सुसमाचार कैसे बाँट सकते हैं? दूसरों को यीशु के बारे में बताने का कोई सही या गलत तरीका नहीं होता है; कोई भी तरीका किसी अन्य से बेहतर नहीं होता है। अपने विश्वास को साझा करने के सबसे आसान और सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है दूसरों को यह बताना कि यीशु ने आपके लिए क्या किया है। यह कुछ ऐसा है जिसे आप जानते हैं और साझा करने में आसान है। क्योंकि आप उन्हें यह नहीं बता रहे हैं कि उन्हें क्या करने की जरूरत है दूसरे लोग सुनेंगे, परमेश्वर इसका उपयोग उन्हें उनकी जरूरत दिखाने के लिए करेगा। उन्हें कुछ शब्दों में बताएं कि यीशु में अपना विश्वास लाने से पहले आपका जीवन कैसा था। फिर उन्हें बताएं कि ऐसा क्या हुआ जिससे आप उसमें विश्वास करने लगे । अंत में यह साझा करें कि आपके मसीही बनने के बाद आपका जीवन कैसे बदल गया है।

एक और तरीका है कि मैं दूसरों के साथ उद्धार साझा करना पसंद करता हूं, वह है उनसे दो प्रशना पूछना। सबसे पहले, मैं उनसे पूछता हूं कि अगर वे आज रात मर जाते हैं, तो क्या वे स्वर्ग में जाएंगे। यह उनके लिए डराने या धमकाने जैसा खतरनाक प्रशन नहीं है जिसका वह उत्तर देंगे, लेकिन यह मुझे उनका आध्यात्मिक स्तर समझने में मदद करता है । अगर उन्हें नहीं लगता कि वे स्वर्ग में जाएंगे या स्वर्ग

में विश्वास नहीं करेंगे तो मैं उनसे यही बात करता हूं। अगर वे मानते हैं कि वे स्वर्ग में जाएंगे तो मैं उनसे दूसरा प्रशन पूछूंगा। वे क्या कहेंगे जब परमेश्वर ने उनसे पूछा कि उसे उन्हें स्वर्ग में क्यों जाने देना चाहिए? इससे पता चलता है कि वे अपना विश्वास कहां हैं। मैं तब उनके साथ बाइबल को साझा कर सकता हूँ जो कहती है कि उद्धार केवल यीशु में है। आध्यात्मिक बातों के बारे में बात करना शुरू करने का यह एक अच्छा तरीका है।

शिष्यत्व: मैं नए मसीहियों की दूसरों को उद्धार की ओर लाने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

इस अध्याय की सामग्री को उस व्यक्ति के साथ साझा करें जिसे आप सिखा रहे हैं। अपने स्वयं के जीवन में उदाहरणों का प्रयोग करें और दूसरों को यीशु के बारे में बताने के तरीके के बारे में जो आपने सीखा है उसे साझा करें। जब आप किसी से, यीशु में उद्धार, के बारे में बात करें तो उन्हें अपने साथ ले जाएं। शायद आपके चर्च में कुछ ऐसे हैं जो इसमें बहुत अच्छे हैं। आप उन्हें उस व्यक्ति से बात करने के लिए भी कह सकते हैं।

16. बच्चों की आध्यात्मिक देखभाल

मैं उद्धार के बाद दूसरों को बढ़ने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

माता-पिता के लिए यह स्वाभाविक है कि वे दुनिया में लाए गए बच्चों की देखभाल करें और उन्हें बढ़ने में मदद करें। यह आध्यात्मिक रूप से भी सच है। एक परिपक्व विश्वासी की जिम्मेदारी है कि वह दूसरों को बढ़ने में मदद करे, विशेष रूप से जिन्हें वह यीशु पर विश्वास में लाता है। यह एक संकेत है कि एक व्यक्ति परिपक्व हो रहा है: दूसरों की मदद करने के लिए उनके पास पहुंचना ,बजाय यह सोचते रहने के की दूसरे उसकी क्या मदद कर सकते हैं। अब जब आप सीखने और बढ़ने की इस प्रक्रिया से गुजर चुके हैं, तो आप इसे दूसरों को देने के लिए जिम्मेदार हैं। जब कोई व्यक्ति यीशु के पास आ चुका है, तो उसे यीशु के बारे में अधिक जानने में मदद करना और जो कुछ वे सोचते हैं और करते हैं, उसमें उसके जैसा बनने में मदद करना महत्वपूर्ण है। अब जो आपको करने की ज़रूरत है, उन्हें इस पुस्तक में पहले से शामिल चीज़ों की जानकारी में लाना है, अर्थात वे चीज़ें जो आप पहले से ही यीशु के लिए जीने के बारे में सीख चुके हैं। उन्हें वही सिखाएं जो दूसरों ने आपको सिखाया है।

उन लोगों को खोजो जो तुमसे छोटे विश्वासी हैं। परमेश्वर से आपको यह दिखाने के लिए कहें कि वह आपको किसे शिष्य बनाना चाहता है। उन्हें जानिए। उनके लिए और उनके साथ प्रार्थना करें। उन्हें वफादार रहने के लिए प्रोत्साहित करें। जब वे संघर्ष करें और कठिन समय से गुजरें तो उनसे दोस्ती करें। आपने सीखे गए पाठों को उनके साथ साझा करें। उनके साथ समय बिताएं और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करें। उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते थे कि जब आप एक युवा मसीही थे तो दूसरे आपके साथ व्यवहार करें (मत्ती 7:12)।

शिष्यत्व: मैं जिस व्यक्ति को शिष्य बनाए आ रहा हूं, उसे किसी और को शिष्य बनाने में मैं कैसे मदद कर सकता हूं?

अब जब आप किसी के साथ इस प्रक्रिया से गुजर चुके हैं, तो उन्हें किसी और के साथ भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि आप सभी को प्रशिक्षित करते हैं तो दूसरों को प्रशिक्षित करते हैं, और वे भी दूसरों को प्रशिक्षित करते हैं, तो कई नए विश्वासियों को विश्वास में मजबूती से स्थापित किया जाएगे। आप उनके साथ शुरू कर सकते हैं क्योंकि वे एक नए विश्वासी के साथ इसी प्रक्रिया से गुजरते हैं। फिर जब आप देखते हैं तो उन्हें सभा की अगुवाई करने दें, और अंत में भाग लेना बंद कर दें और उन्हें यह सब

अपने आप करने दें। फिर आपको इस प्रक्रिया को फिर से शुरू करने के लिए किसी और को ढूंढना चाहिए। इस तरह मसीही धर्म हमारी पीढ़ी में फैल गया है और हमें इसे अगली पीढ़ी में ऐसे ही फैलाना है (2 तीमुथियुस 2:2; रोमियों 1:16-17, मत्ती 24:14, मत्ती 28:19-20, मरकुस 16:15)

निष्कर्ष

एक व्यक्ति जो "फिर से जन्म लेता है" एक नवजात शिशु के रूप में एक नया जीवन शुरू करता है। उनका आध्यात्मिक विकास भी शिशु के शारीरिक विकास के समान होता है।

याद रखें, केवल परमेश्वर ही विकास लाता है। हम खुद को विकसित नहीं कर सकते, लेकिन हम विकास लाने के लिए परमेश्वर को सही परिस्थितियां प्रदान कर सकते हैं। उद्धार के बाद वृद्धि स्वाभाविक उम्मीद किया हुआ परिणाम है। हम यीशु के लिए अपने उद्धार को प्राप्त करने या रखने के लिए नहीं जीते हैं, लेकिन इसे स्वतंत्र रूप से दिए जाने के लिए सराहना करते हैं। हमारा पहला बड़ा निर्णय परमेश्वर के उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार या अस्वीकार करना होता है। इसमें हमारा कुछ भी खर्च नहीं होता है। यीशु ने सब अदा किया। हम केवल इसे स्वीकार करते हैं और हमारे पाप दूर हो जाते हैं, अनंत काल के लिए क्षमा कर दिए जाते हैं। हम हमेशा स्वर्ग में परमेश्वर के साथ रहेंगे। इस मुफ्त उपहार को स्वीकार करने के बाद, हालांकि, हमारे पास एक और निर्णय है: अब हम प्रत्येक दिन अपना जीवन कैसे जीने जा रहे हैं। क्या हम उद्धार के पहले की तरह अपने लिए जियेंगे? या हम यीशु के लिए जीएंगे, उसके अधीन होकर और उसका सेवक बनकर? यह कदम हमें महंगा पड़ता है, और यह इस पृथ्वी पर हमारे जीवन को प्रभावित करता है। यीशु ने इसे शिष्य बने रहना कहता है । उद्धार हम स्वतंत्र रूप से स्वीकार करते हैं, अब हम प्रत्येक दिन के प्रत्येक क्षण में यीशु के लिए जीने के लिए स्वयं को दे देते हैं। यह मसीही जीवन जीने का आधार है। जब तक यह प्रतिबद्धता नहीं हो जाती, तब तक कोई व्यक्ति वास्तव में आध्यात्मिक रूप से जीवित या विकसित नहीं हो सकता है। हालाँकि, जब इसे बनाया जाता है, तो हमें यह नहीं मानना चाहिए कि चीजें हमारे लिए आसान या आसान होंगी। परीक्षण और कठिनाइयाँ हमारे विश्वास को बढ़ाती हैं और हमें यीशु की तरह विकसित होने में मदद करती हैं। हम मदद और आराम के लिए परमेश्वर की ओर अधिक मुड़ते हैं। दूसरे लोग उसकी शक्ति को देखते हैं जब हम जीवन की परीक्षाओं के प्रति मसीह के समान तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं।

यही मसीही जीवन जीने की सचाई है। यह एक विशेषाधिकार है, लेकिन एक जिम्मेदारी भी है। यदि आप मस्सेही नहीं हैं तो आप मसीही जीवन नहीं जी सकते। लेकिन सिर्फ एक मसीही होने (परमेश्वर के परिवार में पैदा होने) का मतलब यह नहीं है कि आप मसीही जीवन जी रहे हैं। अपने आप को जांचें: क्या आपके पास आध्यात्मिक जीवन है (नया जन्म)? क्या आप स्वयं के बजाय यीशु के लिए जीने के लिए प्रतिबद्ध हैं? क्या आप जीवन के लक्षण दिखाते हैं? क्या आप अपने संचार, पोषण, चलने आदि में बढ़ रहे हैं? यीशु के लिए जीना आपके जीवन का सर्वोत्तम उपयोग है। आपके पास जीने के लिए केवल एक ही जीवन है, इसलिए उसके लिए इसका मायना रखे !

SP-14.11.2021